

# दो बैलों की कथा

## पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1.

कांजीहौस में कैद पशुओं की हाजिरी क्यों ली जाती होगी?

उत्तर-

कांजीहौस एक प्रकार से पशुओं की जेल थी। उसमें ऐसे आवारा पशु कैद होते थे जो दूसरों के खेतों में घुसकर फसलें नष्ट करते थे। अतः कांजीहौस के मालिक का यह दायित्व होता था कि वह उन्हें जेल में सुरक्षित रखे तथा भागने न दे। इस कारण हर रोज उनकी हाजिरी लेनी पड़ती होगी।

प्रश्न 2.

छोटी बच्ची को बैलों के प्रति प्रेम क्यों उमड़ आया?

उत्तर-

छोटी बच्ची की माँ मर चुकी थी। सौतेली माँ उसे मारती रहती थी। इधर बैलों की भी यही स्थिति थी। गया उन्हें दिनभर खेत में जोतता, मारता-पीटता और शाम को सूखा भूसा डाल देता। छोटी बच्ची महसूस कर रही थी कि उसकी स्थिति और बैलों की स्थिति एक जैसी है। उनके साथ अन्याय होता देखा उसे बैलों के प्रति प्रेम उमड़ आया।

प्रश्न 3.

कहानी में बैलों के माध्यम से कौन-कौन से नीति-विषयक मूल्य उभर कर आए हैं?

उत्तर-

इस कहानी के माध्यम से निम्नलिखित नीतिविषयक मूल्य उभरकर सामने आए हैं

- सरल-सीधा और अत्यधिक सहनशील होना पाप है। बहुत सीधे इनसान को मूर्ख या 'गधा' कहा जाता है।
- इसलिए मनुष्य को अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करना चाहिए।
- आज़ादी बहुत बड़ा मूल्य है। इसे पाने के लिए मनुष्य को बड़े-से-बड़ा कष्ट उठाने को तैयार रहना चाहिए।
- समाज के सुखी-संपन्न लोगों को भी आजादी की लड़ाई में योगदान देना चाहिए।

प्रश्न 4.

प्रस्तुत कहानी में प्रेमचंद ने गंधे की किन स्वभावगत विशेषताओं के आधार पर उसके प्रति रूढ़ अर्थ 'मूर्ख' प्रयोग न कर किस नए अर्थ की ओर संकेत किया है?

उत्तर-

गंधा सबसे बुद्धिहीन प्राणी माना जाता है। यदि किसी को मूर्ख कहना चाहते हैं तो हम उसे गंधा कह देते हैं। गंधा 'मूर्ख' के अर्थ में रूढ़ हो गया है परंतु लेखक ने इसे सही नहीं माना क्योंकि गंधा अपने सीधेपन और सहनशीलता से किसी को हानि नहीं पहुँचाता है। गाय, कुत्ता और बैल जैसे जानवर कभी-कभी क्रोध कर देते हैं पर गंधा ऐसा नहीं करता है। गुणों के विषय में वह ऋषियों-मुनियों से कम नहीं है।

प्रश्न 5.

किन घटनाओं से पता चलता है कि हीरा और मोती में गहरी दोस्ती थी?

उत्तर-

इस कहानी में अनेक घटनाएँ ऐसी हैं जिनसे पता चलता है कि मोती और हीरा में गहरी दोस्ती थी।

**1. पहली घटना-**

दोनों एक-साथ गाड़ी में जोते जाते थे तो यह कोशिश करते थे कि गाड़ी का अधिक भार दूसरे साथी के कंधे पर न आकर उसके अपने कंधे पर आए।

**2. दूसरी घटना-**

गंधा ने हीरा के नाक पर डंडा मारा तो मोती से सहा न गया। वह हल, रस्सी, जुआ, जोत सब लेकर भाग पड़ा। उससे हीरा का कष्ट देखा न गया।

**3. तीसरी घटना-**

जब मटर के खेत में मटर खाकर दोनों मस्त हो रहे तो वे सींग मिलाकर एक-दूसरे को ठेलने लगे। अचानक मोती को लगा कि हीरा क्रोध में आ गया है तो वह पीछे हट गया। उसने दोस्ती को दुश्मनी में बदलने से रोक लिया।

**4. चौथी घटना-**

जब उनके सामने विशालकाय साँड आ खड़ा हुआ तो उन्होंने योजनापूर्वक एक-दूसरे का साथ देते हुए उसका मुकाबला किया। साँड एक पर चोट करता तो दूसरा उसकी देह में अपने नुकीले सींग चुभा देता। आखिरकार साँड बेदम होकर गिर पड़ा।

**5. पाँचवीं घटना-**

मोती मटर के खेत में मटर खाते-खाते पकड़ा गया। हीरा उसे अकेला विपत्ति में देखकर वापस आ गया। वह भी मोती के साथ पकड़ा गया।

## 6. छठी घटना-

काँजीहौस में हीरा ने दीवार तोड़ डाली। उसे रस्सियों से बाँध दिया गया। इस पर मोती ने उसका साथ दिया। पहले तो उसने बाड़े की दीवार तोड़कर हीरा का अधूरा काम पूरा किया, फिर उसका साथ देने के लिए उसी के साथ बाँध गया।

प्रश्न 6.

लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूल जाते हो।' -हीरा के इस कथन के माध्यम से स्त्री के प्रति प्रेमचंद के दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर

लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है। हीरा के इस कथन के माध्यम से पता चलता है कि प्रेमचंद नारी जाति का अत्यधिक सम्मान करते थे। नारी विभिन्न रिश्ते बनाकर समाज में अपनी भूमिका का निर्वहन करती है। वह त्याग, दया, ममता, सहनशीलता का जीता जागता उदाहरण है। विपरीत परिस्थितियों में यदि नारी में क्रोध जैसे भाव आ भी जाते हैं तो इससे उसकी गरिमा कम नहीं हो जाती है और न उसके सम्मान में कमी आ जाती है। लेखक महिलाओं के प्रति अत्यधिक सम्मान रखता है। उसने यह भी कहना चाहा है कि जब पशु भी नारी जाति का सम्मान करते हैं तो मनुष्य को नारी जाति का सम्मान हर स्थिति में करना चाहिए।

प्रश्न 7.

किसान जीवन वाले समाज में पशु और मनुष्य के आपसी संबंधों को कहानी में किस तरह व्यक्त किया गया है?

उत्तर-

किसान जीवन में पशुओं और मनुष्यों के आपसी संबंध बहुत गहरे तथा आत्मीय रहे हैं। किसान पशुओं को घर के सदस्य की भाँति प्रेम करते रहे हैं और पशु अपने स्वामी के लिए जी-जान देने को तैयार रहे हैं। झूरी हीरा और मोती को बच्चों की तरह स्नेह करता था। तभी तो उसने उनके सुंदर-सुंदर नाम रखे-हीरा-मोती। वह उन्हें अपनी आँखों से दूर नहीं करना चाहता था। जब हीरा-मोती उसकी ससुराल से लौटकर वापस उसके थाने पर आ खड़े हुए तो उसका हृदय आनंद से भर गया। गाँव-भर के बच्चों ने भी बैलों की स्वामिभक्ति देखकर उनका अभिनंदन किया। इससे पता चलता है कि किसान अपने पशुओं से मानवीय व्यवहार करते हैं।

प्रश्न 8.

इतना तो हो ही गया कि नौ दस प्राणियों की जान बच गई। वे सब तो आशीर्वाद देंगे'-मोती के इस कथन के आलोक में उसकी विशेषताएँ बताइए।

उत्तर-

इतना तो हो ही गया कि नौ-दस प्राणियों की जान बच गई। वे सब तो आशीर्वाद देंगे। मोती के इस कथन से पता चलता है कि वह परोपकारी स्वभाव वाला प्राणी है। परोपकार की ऐसी भावना वह मन में ही नहीं रखता है बल्कि इसे व्यावहारिक रूप में दर्शाता भी है। वह बाड़े की कच्ची दीवार को तोड़कर नौ-दस प्राणियों को भगाता है ताकि उनकी जान बच जाए। मोती सच्चा मित्र भी है। वह कांजीहौस में हीरा को अकेला छोड़कर नहीं जाता है। वह आशावादी भी है। उसे विश्वास है कि ईश्वर उनकी जान अवश्य बचाएँगे।

प्रश्न 9.

आशय स्पष्ट कीजिए

(क) अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है।

(ख) उस एक रोटी से उनकी भूख तो क्या शांत होती; पर दोनों के हृदय को मानो भोजन मिल गया।

उत्तर-

(क) हीरा और मोती बिना कोई वचन कहे एक-दूसरे के मन की बात समझ जाते थे। प्रायः वे एक-दूसरे से स्नेह की बातें सोचते थे। यद्यपि मनुष्य स्वयं को सब प्राणियों से श्रेष्ठ मानता है किंतु उसमें भी यह शक्ति नहीं होती।

(ख) हीरा और मोती गया के घर बँधे हुए थे। गया ने उनके साथ अपमानपूर्ण व्यवहार किया था। इसलिए वे क्षुब्ध थे। परंतु तभी एक नन्हीं लड़की ने आकर उन्हें एक रोटी ला दी। उस रोटी से उनका पेट तो नहीं भर सकता था। परंतु उसे खाकर उनका हृदय जरूर तृप्त हो गया। उन्होंने बालिका के प्रेम का अनुभव कर लिया और प्रसन्न हो उठे।

प्रश्न 10.

गया ने हीरा-मोती को दोनों बार सूखा भूसा खाने के लिए दिया क्योंकि-

(क) गया पराये बैलों पर अधिक खर्च नहीं करना चाहता था।

(ख) गरीबी के कारण खली आदि खरीदना उसके बस की बात न थी।

(ग) वह हीरा-मोती के व्यवहार से बहुत दुखी था।

(घ) उसे खली आदि सामग्री की जानकारी न थी।

(सही उत्तर के आगे (✓) का निराश लगाइए।)

उत्तर-

(ग) वह हीरा-मोती के व्यवहार से दुखी था।

## रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 11.

हीरा और मोती ने शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाई लेकिन उसके लिए प्रताड़ना भी सही। हीरा-मोती की इस प्रतिक्रिया पर तर्क सहित अपने विचार प्रकट करें।

उत्तर-

हीरा और मोती शोषण के विरुद्ध हैं। वे हर शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठाते रहे हैं। उन्होंने झूरी के साले गयी का विरोध किया तो सूखी रोटियाँ खाई तथा डंडे खाए। फिर काँजीहौस में अन्याय का विरोध किया तो बंधन में पड़े। उन्हें भूखे रहना पड़ा।

प्रतिक्रिया-मेरा विचार है कि हीरा और मोती का यह कदम बिल्कुल ठीक था। यदि वे कोई प्रतिक्रिया न करते तो उनका खूब शोषण होता। उन्हें गिड़गिड़ाकर, मन मारकर अपने मालिक की गुलामी करनी पड़ती। वे अपने दर्द को व्यक्त भी न कर पाते। परंतु अपना विद्रोह प्रकट करके उन्होंने मालिक को सावधान कर दिया कि उनका अधिक शोषण नहीं किया जा सकता। मार खाने के बदले उन्होंने मालिक के मन में भय तो उत्पन्न कर ही दिया।

प्रश्न 12.

क्या आपको लगता है कि यह कहानी आजादी की लड़ाई की ओर भी संकेत करती है?

उत्तर-

हाँ, हीरा-मोती ने अपनी परतंत्रता से मुक्ति पाने के लिए जिस तरह से नाना प्रकार की कठिनाइयाँ सहੀं और मृत्यु के करीब जाकर भी बच निकले। वे अंततः अपने घर वापस आ गए, इससे यही संकेत मिलता है। हीरा-मोती गया के घर से पहली बार रस्सी तुड़ाकर आ जाते हैं। वे दुबारा गया के घर जाते हैं, तो उन्हें अपमानित और प्रताड़ित होना पड़ता है। और भूखा भी रहना पड़ता है। वहाँ से भागने पर उन्हें साँड रुपी मुसीबत का सामना करना पड़ता है। अंत में काँजीहौस में बंद होना तथा कसाई के हाथों बिकना तथा इसके उपरांत भी बचकर झूरी के पास आ जाना आदि आजादी की लड़ाई की ओर संकेत करती है।

## भाषा अध्ययन

प्रश्न 13.

बस इतना ही काफी है।

फिर मैं भी ज़ोर लगाता हूँ।

‘ही’, ‘भी’ वाक्य में किसी बात पर जोर देने का काम कर रहे हैं। ऐसे शब्दों को निपात कहते हैं। कहानी में से पाँच ऐसे वाक्य छाँटिए जिनमें निपात का प्रयोग हुआ हो।

उत्तर-

ही-

- दोनों साथ उठते, साथ नाँद में मुँह डालते और रथ ही बैठते थे।
- एक ही विजय ने उसे संसार की सभ्य जातियों में गण्य बना दिया।
- ज्यादा-से-ज्यादा मेरी ही गरदन पर रहे।
- यही उनका आधार था।
- कभी-कभी उसे भी क्रोध आ ही जाता है।

भी-

- कभी-कभी उसे भी क्रोध आ ही जाता है।
- उसके चेहरे पर असंतोष की छाया भी न दिखाई देती।
- गधे का एक छोटा भाई और भी है।
- एक मुँह हटाता तो दूसरा भी हटा लेता था।
- कभी-कभी अड़ियल बैल भी देखने में आता है।

प्रश्न 14.

रचना के आधार पर वाक्य भेद बताइए तथा उपवाक्य छाँटकर उसके भी भेद लिखिए-

- (क) दीवार का गिरना था कि अधमरे-से पड़े हुए सभी जानवर चेत उठे।  
(ख) सहसा एक दड़ियल आदमी, जिसकी आँखें लाल थीं और मुद्रा अत्यंत कठोर, आया।  
(ग) हीरा ने कहा-गया के घर से नाहक भागे।  
(घ) मैं बेचूंगा, तो बिकेंगे।  
(ङ) अगर वह मुझे पकड़ता तो मैं बे-मारे न छोड़ता।

उत्तर-

(क) वाक्य भेद – मिश्र वाक्य।

उपवाक्य – अधमरे से पड़े हुए सभी जानवर चेत उठे।

भेद – संज्ञा उपवाक्य

(ख) वाक्य भेद – मिश्रवाक्य।

उपवाक्य – जिसकी आँखें लाल थीं और मुद्रा अत्यंत कठोर।

भेद – विशेषण उपवाक्य।

(ग) वाक्य भेद – मिश्रवाक्य।

उपवाक्य – गया के घर से नाहक भागे।

भेद – संज्ञा उपवाक्य।

(घ) वाक्यभेद – मिश्रवाक्य।

उपवाक्य – तो बिकेंगे।

भेद – क्रियाविशेषण उपवाक्य।

(ङ) वाक्य भेद – मिश्रवाक्य।

उपवाक्य – तो बे मारे ने छोड़ता।

भेद – क्रियाविशेषण उपवाक्य।

प्रश्न 15.

कहानी में जगह-जगह मुहावरों का प्रयोग हुआ है। कोई पाँच मुहावरे छाँटिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

उत्तर-

- **जी तोड़ काम करना**

वाक्य- भारतीय श्रमिक जी-तोड़कर काम करते हैं।

- **गम खा जाना**

वाक्य-भारत के मज़दूर इतने स्वाभिमानी हैं कि वे गम खा जाते हैं, हाय-तौबा नहीं मचाते।

- **ईंट का जवाब पत्थर से देना**

वाक्य-यह दुनिया उसी को सम्मान देती है जो ईंट का जवाब पत्थर से देना जानता है।

- **दाँतों पसीना आना**

वाक्य-क्रिकेट के मैदान से कुत्ते को बाहर खदेड़ने में माली को दाँतों पसीना आ गया।

- **कसर उठाना**

वाक्य-मालिक के कहने पर हम हर काम कर देते हैं। किसी प्रकार की कोई कसर नहीं उठा रखते।

**पाठेतर सक्रियता**

प्रश्न 16.

छात्र पुस्तक से महादेवी वर्मा द्वारा लिखित कहानियाँ नीलकंठ, गिल्लू, गौरा, सोना आदि कहानियाँ पढ़ें।

ये कहानियाँ पशु-पक्षियों से संबंधित हैं।

उत्तर-

छात्र कक्षा में स्वयं चर्चा करें।

# अन्य पाठोत्तर हल प्रश्न

## लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1.

गधा किस अर्थ में रुढ़ हो गया है? और क्यों?

उत्तर-

गधा 'मूर्ख' या बेवकूफ के अर्थ में रुढ़ हो गया है। किसी आदमी को जब बेवकूफ कहना चाहते हैं तो उसे गधा कहते हैं। ऐसा उसके सीधेपन और सब कुछ सहन करने के कारण कहा जाता है।

प्रश्न 2.

सहनशीलता के मामले में गाय और कुत्ता गधे से किस तरह भिन्न हैं?

उत्तर-

गाय और कुत्ता गधे जितना सहनशील नहीं है। गाय नाराज होने पर या अपने बच्चे को छेड़े जाते हुए देखकर हिंसक रूप धारण कर लेती है। इसी तरह कुत्ता भी काट लेता है जबकि गधा सब कुछ चुपचाप सहन कर लेता है।

प्रश्न 3.

अफ्रीका और अमरीका में भारतीयों की दुर्दशा का क्या कारण है?

उत्तर-

अफ्रीका और अमरीका में भारतीयों की दुर्दशा का कारण उनका सीधापन और उनकी सहनशीलता है। वे अपनी सहनशीलता के कारण शोषण और अन्याय के खिलाफ आवाज़ नहीं उठाते हैं और गम खाकर रह जाते हैं।



प्रश्न 4.

बैल को गधे का छोटा भाई क्यों कहा गया है?

उत्तर-

बैल को गधे का छोटा भाई इसलिए कहा गया है क्योंकि बैल भी सीधा-सादा जानवर है। वह भी सहनशील है पर गधे जितना नहीं। बैल सींग चलाकर, अड़ियल रुख अपनाकर तथा कई अन्य तरीके से अपना विरोध एवं असंतोष प्रकट कर देता है।

प्रश्न 5.

पशुओं की किस गुप्त शक्ति से मनुष्य वंचित है?

उत्तर-

पशु अपने मन के भाव-विचार मूक भाषा में व्यक्त करते हैं जिससे अन्य पशु समझ जाते हैं। इस तरह वे दूसरे के मन की बातें बिना कहे जान-समझ लेते हैं। पशुओं की यह ऐसी गुप्त शक्ति है जिससे मनुष्य वंचित है।

प्रश्न 6.

हीरा-मोती एक-दूसरे के प्रति प्रेम और मित्रता कैसे प्रकट करते थे?

उत्तर-

हीरा और मोती एक-दूसरे को चाट-चूटकर और सँघकर अपना प्रेम प्रकट करते थे। वे अपनी दोस्ती प्रकट करने के लिए कभी-कभी सींग भी मिला लेते थे। उनके ऐसा करने में विग्रह का भाव नहीं बल्कि मनोविनोद और आत्मीयता का भाव रहता था।

प्रश्न 7.

किन बातों से प्रकट होता है कि हीरा-मोती में भाई चारा था।

उत्तर-

हीरा-मोती जब हल में जोते जाते थे तब उनकी यही चेष्टा रहती थी कि वे एक-दूसरे का भार अपने कंधे पर ले ले। वे दिन भर के काम के बाद दोपहर या संध्या में चाट-चूटकर अपनी थकान उतारते। वे एक साथ नाँदों में मुँह डालते और हटाते थे। इन बातों से हीरा-मोती का भाई चारा प्रकट होता है।

प्रश्न 8.

बैलों को अपने साथ ले जाते हुए गया को क्या परेशानी हो रही थी ?

उत्तर-

दोनों बैलों को अपने साथ ले जाते हुए गया को यह परेशानी हो रही थी कि बैल उसके साथ नहीं जाना

चाहते थे। यदि वह बैलों को पीछे से हाँकता था तो दोनों बैल दाँए-बाएँ भागते थे और वह पगहे पकड़कर आगे को खींचता तो दोनों पीछे को ज़ोर लगाते।

प्रश्न 9.

हीरा-मोती को वाणी की कमी क्यों अखर रही थी?

उत्तर-

हीरा-मोती गया के साथ अनिच्छा से जा रहे थे। वे सोच रहे थे कि गया के हाथों उन्हें बेच दिया गया है। वे अपने मालिक झूरी से अपने बेचे जाने का कारण जानना चाहते थे। हीरा-मोती बैल ये जो मूक भाषा में बातें कर सकते थे पर झूरी समझता कैसे। अपनी बात कहने के लिए हीरा-मोती को वाणी की कमी अखर रही थी।

प्रश्न 10.

हीरा-मोती की आँखों में विद्रोहमय स्नेह कब झलकता हुआ प्रतीत हुआ और क्यों?

उत्तर-

झूरी ने हीरा-मोती को गया के घर काम करने भेजा था पर इन दोनों को वहाँ गाँव, घर तथा मनुष्य सब बेगाने जैसे लग रहे थे। उन्हें गया से भी स्नेह नहीं मिल रहा था। वे दोनों वहाँ से रात में ही भाग आए थे। उन्हें अपने बेचे जाने का भ्रम होने के कारण उनकी आँखों में विद्रोहमय स्नेह झलक रहा था।

प्रश्न 11.

हीरा और मोती ने गया के घर स्वयं को अपमानित क्यों महसूस किया?

उत्तर-

हीरा और मोती ने गया के घर स्वयं को इसलिए अपमानित महसूस किया क्योंकि गया ने अपने बैलों के चारे में चूनी-चोकर, खली आदि मिलाया परंतु हीरा मोती के सामने सूखा भूसा डाल दिया। इन बैलों के साथ झूरी ने ऐसा कभी नहीं किया था।

प्रश्न 12.

गया और उसके घरवाले हीरा-मोती को नियंत्रण में करने के लिए क्या योजना बना रहे थे?

उत्तर-

गया और उसके घरवालों का व्यवहार बैलों के प्रति अच्छा न था। वह बैलों को मारता-पीटता था तब भी बैलों पर उसका पूरा नियंत्रण नहीं था। इन्हें नियंत्रित करने के लिए वे बैलों की नाक में नाथ डालने की योजना बना रहे थे।

प्रश्न 13.

बालिका ने बैलों को भागने में किस तरह मदद की?

उत्तर-

बालिका प्रतिदिन की तरह दो रोटियाँ लेकर हीरा-मोती के पास आई और घरवालों की योजना बताते हुए उनके गले की रस्सी खोल दी। वह चिल्लाने लगी कि फूफा वाले दोनों बैल भागे जा रहे हैं ताकि कोई भी उसपर संदेह न करे। इस तरह उसने बैलों को भागने में मदद की।

प्रश्न 14.

हीरा ने कब और कैसे सच्चे मित्र का फर्ज निभाया?

उत्तर-

हीरा और मोती भूखे थे। सामने के खेत में हरी मटर नजर आई। अभी उन्होंने दो-चार ग्रास ही खाए थे कि रखवाले लाठी लिए आए। हीरा तो भाग सकता था पर सींचे खेत में खुर धंसने से मोती फँस गया। रखवालों ने उसे पकड़ लिया तो हीरा भागा नहीं। इस तरह उसने सच्चे मित्र का फर्ज निभाया।

प्रश्न 15.

कांजीहौस में किन्हें बंद किया जाता है और उनके साथ कैसा व्यवहार किया जाता है?

उत्तर-

कांजीहौस में आवारा और लावारिस पशुओं को बंद किया जाता है। वहाँ उनके साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता है। उनकी हालत अत्यंत दयनीय हो जाती है। अधिकांश मरने की कगार पर पहुँच जाते हैं।

प्रश्न 16.

दढ़ियल ने जब बैलों के कूल्हे में अँगुली से गोदा तो उन्होंने अपने अंतर्ज्ञान से क्या जान लिया?

उत्तर-

नीलामी के लिए खड़े हीरा-मोती के कूल्हे में जब दढ़ियल ने अँगुली से गोदा तो दोनों ने अपने अंतर्ज्ञान से यह जान लिया कि दढ़ियल कसाई है। वह नीलामी में उन्हें खरीदकर उन पर छुरी चलाएगा।

प्रश्न 17.

मोती के उस कार्य का वर्णन कीजिए जिसके बदले वह आशीर्वाद पाने की अपेक्षा कर रहा था?

उत्तर-

कांजीहौस में बंदी हीरा-मोती ने देखा कि वहाँ गधे, घोड़े बकरियाँ, भैंसें आदि नौ-दस जानवर मुरदों-से ज़मीन पर पड़े हैं। मोती ने रात में बाड़े की दीवार गिरा दी जिससे ये जानवर भाग गए और उनकी जान बच गई। अपने इसी कार्य के बदले वह आशीर्वाद पाने की अपेक्षा कर रहा था।

प्रश्न 18.

हीरा-मोती जब दढ़ियल के साथ जा रहे थे तो हार में चरते अन्य जानवरों को देखकर उनकी क्या प्रतिक्रिया हुई ?

उत्तर-

दढ़ियल के साथ जाते हीरा-मोती ने जब खेत में प्रसन्नतापूर्वक चर रहे अन्य जानवरों को देखा तो उन्हें वे जानवर स्वार्थी लगे क्योंकि कसाई के हाथों में उन्हें देखकर भी वे चिंता नहीं कर रहे थे। वे अपनी उछल-कूद और खुशी में डूबे थे।

प्रश्न 19.

झूरी के पास वापस आए बैलों को देखकर बच्चों ने अपनी खुशी किस तरह व्यक्त की?

उत्तर-

झूरी के पास लौटे हीरा-मोती को देखकर बच्चों ने ताली बजाकर उनका स्वागत अभिनंदन किया। वे इन्हें वीरता का प्रशस्ति पत्र देना चाहते थे। बच्चे खुशी-खुशी में भागकर अपने घरों से चूनी, गुड़, चोकर आदि लेकर खिलाने लगे। वे बहुत खुश दिख रहे थे।

प्रश्न 20.

दूसरी बार घर आए हीरा-मोती को देखकर मालकिन की प्रतिक्रिया पहली बार से किस तरह भिन्न थी?

उत्तर-

हीरा-मोती जब पहली बार गया के घर से लौटकर आए थे तो मालकिन ने उन्हें नमकहराम कहा और उनकी खली-चूनी भूसी आदि बंद करवा दिया, पर दूसरी बार हीरा-मोती के घर आने पर मालकिन हर्षित हुई और बैलों के माथे चूम लिए थे।

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1.

हीरा और मोती अपने मालिक झूरी के साथ किस तरह का भाव रखते थे?

उत्तर-

हीरा और मोती अपने मालिक झूरी के साथ अत्यंत गहरा प्रेम एवं आत्मीय व्यवहार रखते थे। वे अपने मालिक से प्रेम करते हुए उसकी हर बात मानते थे। वे झूरी से अलग नहीं रहना चाहते थे। उनकी इच्छा थी उनका मालिक चाहे जितना काम करा ले पर वह उन्हें अपने से अलग न करे। झूरी ने जब गया के साथ उन्हें भेजा तो वे रस्सी पगहे तुड़ाकर गया के घर से भागकर आ गए। इस समय उनकी आँखों में

विद्रोहमयी स्नेह झलक रहा था। हीरा-मोती को भागने का अवसर मिलने पर भी वे अंत में भागकर झूरी के पास आ जाते थे जो उनके असीम लगाव का प्रमाण था।

प्रश्न 2.

“दो बैलों की कथा” पाठ में लेखक ने ‘सीधेपन’ के संबंध में क्या कहा है? इसके लिए उसने क्या-क्या उदाहरण दिए हैं?

उत्तर-

‘दो बैलों की कथा’ पाठ में लेखक प्रेमचंद ने ‘सीधेपन’ को इस संसार के लिए उचित नहीं बताया है। इसके लिए उसने गधे और बैलों के सीधेपन का उदाहरण देते हुए दर्शाया है कि अपने सीधेपन के लिए गधा मूर्ख के अर्थ में रूढ़ बन गया है तथा बैल को ‘बछिया का ताऊ’ कहा जाने लगा है। इस पाठ में भी हीरा-मोती के सीधेपन के कारण उन पर अत्याचार किया जाता है परंतु उनके सींग चलाते या अत्याचार का विरोध करते ही उन पर किया जाने वाला अत्याचार कम हो जाता है। इसी तरह अपनी सहनशीलता के कारण भारतीय अफ्रीका और अमेरिका में सम्मान नहीं पाते जबकि जापान ने युद्ध में विजय पाते ही दुनियाभर में सम्मान प्राप्त किया।

प्रश्न 3.

हीरा-मोती दो बार झूरी के घर से वापस आए। दोनों बार झूरी की पत्नी की प्रतिक्रिया अलग-अलग क्यों थी? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

झूरी ने अपने बैलों हीरा और मोती को गया के घर काम के लिए भेजा। हीरा-मोती झूरी से बहुत लगाव रखते थे। वे झूरी को छोड़ कर गया के घर नहीं जाना चाहते थे। गया के साथ वे जैसे-तैसे चले गए पर बेगानापन महसूस होने के कारण वे रात में ही रस्सी पगहे तुड़ाकर चले आए। यह देख झूरी की पत्नी ने उन्हें नमक हराम कहा और उन्हें खली, चूनी-चोकर आदि देना बंद करके सूखा भूसा सामने डाल दिया। दूसरी बार हीरा-मोती कांजीहौस से नीलाम होकर किसी तरह घर पहुँचते हैं तो उनकी दशा देखकर झूरी की पत्नी के मन में उनके प्रति बदलाव आ जाता है। वह बैलों द्वारा सहे कष्ट का अनुमान लगा लिया और उनके माथे चूम लिया। ऐसी प्रतिक्रिया बैलों के द्वारा अपनी स्वतंत्रता के लिए किए गए संघर्ष के कारण थी।

प्रश्न 4.

मोती ने बैलगाड़ी को खाई में गिरा देना चाहा पर हीरा ने सँभाल लिया। इस कथन के आलोक में हीरा की स्वाभाविक विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर-

हीरा-मोती गया के साथ नहीं जाना चाहते थे, इसलिए गया उन दोनों को बैलगाड़ी में जोतकर ले जा रहा था। अपना विरोध जताने के लिए मोती बैलगाड़ी को खाई में गिरा देना चाहता था, पर हीरा ने रोक लिया। इससे उसकी इन विशेषताओं का पता चलता है-

- धैर्यवान-हीरा-मोती की तुलना में अधिक धैर्यवान है। वह किसी समस्या का धैर्यपूर्वक सामना करता है।
- सहनशील-गया ने जब हीरा की नाक पर डंडे बरसाए तो हीरा सहन कर गया। इसी घटना के लिए मोती ने जब गयों को मार गिराना चाहा तो हीरा ने कहा कि यह हमारी जाति का धर्म नहीं है।
- अहिंसक विद्रोही-कांजीहौस में मार खाकर भी हीरा शांत नहीं होता। यद्यपि उसे मोटी रस्सियों में बाँध दिया जाता है फिर भी वह कहता है 'ज़ोर तो मारता ही जाऊँगा चाहे कितने ही बंधन पड़ते जाएँ।'
- सच्चा मित्र-हीरा मोती के साथ सच्ची मित्रता निभाता है। वह रखवालों के हाथ पड़े मोती को अकेला नहीं छोड़ता है।

प्रश्न 5.

‘मोती के स्वभाव में उग्रता है’-उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

मोती का स्वभाव उग्र है। वह अत्याचार एवं शोषण का विरोध करता है। वह अपने ऊपर ही नहीं हीरा पर भी अत्याचार देखकर क्रोधित हो उठता है और अत्याचार का सामना करने के लिए आक्रमण कर देता है। इसके एक नहीं अनेक उदाहरण हैं। गया जब हीरा की नाक पर डंडे बजाता है तो क्रोधित मोती हल जोत, जुआ लेकर भागता है। गया और उसके साथी जब उसे पकड़ने आते हैं तो वह कहता है-“मुझे मारेगा तो मैं भी एक दो गिरा दूंगा।” इसी तरह वह गया का अत्याचार देखकर एकाध को सींगों पर उठाकर फेंक देने की बात कहता है।

वह गिरे हुए शत्रु पर भी दया दिखाने का पक्षधर नहीं है। वह वेदम साँड को मार डालना चाहता है। उसका विचार है कि वैरी को ऐसा मारना चाहिए कि फिर न उठे। यह मोती के स्वभाव की उग्रता है कि दड़ियल को सींग दिखाकर गाँव के बाहर इस तरह खदेड़ देता है कि वह लौटकर आने का साहस नहीं जुटा पाता है।

प्रश्न 6.

‘संगठन में शक्ति है’-हीरा-मोती ने इसका नमूना किस तरह प्रस्तुत किया?

उत्तर-

यह सर्वविदित है कि संगठन में शक्ति होती है। इसका एक नमूना हीरा-मोती ने अपने से बलशाली साँड

को पराजित करके प्रस्तुत किया। गया के घर से भागे हीरा-मोती के सामने रास्ते में विशालकाय, मदमस्त साँड आ गया। हीरा-मोती ने सोच-विचार के बाद अपने से बलशाली शत्रु का मुकाबला करने की योजना बनाई मल्ल युद्ध में माहिर साँड को संगठित शत्रुओं से लड़ने का अनुभव न था। हीरा-मोती ने संगठित होकर साँड से युद्ध किया। एक ने आगे से वार किया तो दूसरे ने पीछे से। साँड जब हीरा को मारने दौड़ता तो मोती उस पर सींग से वार कर देता। वह जब मोती पर वार करता तो हीरा उसके बगल में सींग घुसा देता। इससे साँड जखमी होकर बेदम हो गया और गिर गया।

प्रश्न 7.

हीरा-मोती स्वभाव से विद्रोही तो हैं पर उनके मन में दयाभाव भी है। इसका प्रमाण हमें कब और कहाँ मिलता है? 'दो बैलों की कथा' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

हीरा और मोती स्वभाव से विद्रोही हैं। इसी विद्रोह के कारण वे दूसरी बार भी गया के घर से भागते हैं और खेत के रखवालों द्वारा पकड़कर कांजीहौस में बंद कर दिए जाते हैं। कांजीहौस में हीरा-मोती ने देखा कि यहाँ भैसे, घोड़ियाँ, गधे बकरियाँ आदि पहले से बंद हैं। वे चारा न मिलने के कारण मुरदों जैसे जमीन पर पड़े हैं। इन्हें देखकर हीरा-मोती दयार्द्र हो जाते हैं। पहले हीरा ने बाड़े की दीवार गिराना शुरू किया परंतु चौकीदार ने देख लिया और उसे बंधन में डाल दिया। अब मोती ने उग्र रुख अपनाया और दो घंटे के परिश्रम के बाद बाड़ की आधी दीवार गिरा दी। अब उसने सींग मार-मारकर जानवरों को वहाँ से भगा दिया और उनकी जान बचाई। इस प्रकार हीरा-मोती एक ओर जहाँ विद्रोही हैं वहीं दूसरी ओर उनके मन में दयाभाव भी है।

# ल्हासा की ओर

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1.

थोड़ला के पहले के आखिरी गाँव पहुँचने पर भिखमंगे के वेश में होने के बावजूद लेखक को ठहरने के लिए उचित स्थान मिला जबकि दूसरी यात्रा के समय भद्र वेश भी उन्हें उचित स्थान नहीं दिला सका। क्यों?

उत्तर-

इसका मुख्य कारण था-संबंधों का महत्व। तिब्बत में इस मार्ग पर यात्रियों के लिए एक-जैसी व्यवस्थाएँ नहीं थीं। इसलिए वहाँ जान-पहचान के आधार पर ठहरने का उचित स्थान मिल जाता था। बिना जान-पहचान के यात्री को भटकना पड़ता था। दूसरे, तिब्बत के लोग शाम छः बजे के बाद छड़ पीकर मस्त हो जाते थे। तब वे यात्रियों की सुविधा का ध्यान नहीं रखते थे।

प्रश्न 2.

उस समय के तिब्बत में हथियार का कानून न रहने के कारण यात्रियों को किस प्रकार का भय बना रहता था?

उत्तर-

उस समय तिब्बत में हथियार संबंधी कानून न होने से यात्रियों को हमेशा अपनी जान को खतरा बना रहता था। लोग हथियारों को लाठी-डंडे की तरह लेकर चलते थे। डाकू अपनी रक्षा के लिए यात्रियों या लोगों को पहले मार देते थे, तब देखते थे कि उनके पास कुछ है भी या नहीं। इस तरह हमेशा जान जोखिम में रहती थी।

प्रश्न 3.

लेखक लङ्कोर के मार्ग में अपने साथियों से किस कारण पिछड़ गया?

उत्तर-

लेखक लङ्कोर के मार्ग में अपने साथियों से दो कारणों से पिछड़ गया

1. उसका घोड़ा बहुत सुस्त था।
2. वह रास्ता भटककर एक-डेढ़ मील गलत रास्ते पर चला गया था। उसे वहाँ से वापस आना पड़ा।

प्रश्न 4.

लेखक ने शेकर विहार में सुमति को उनके यजमानों के पास जाने से रोका, परंतु दूसरी बार रोकने का प्रयास क्यों नहीं किया?

उत्तर-

लेखक जानता था कि शेकर विहार में सुमति के यजमान रहते हैं। सुमति उनके पास जाकर बोध गया के गंडों के नाम पर किसी भी कपड़े का गंडा देकर दक्षिणा वसूला करते थे। इस काम में वे हफ़्ता लगा देते, इसलिए मना कर दिया।

प्रश्न 5.

अपनी यात्रा के दौरान लेखक को किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा?



उत्तर-

अपनी तिब्बत-यात्रा के दौरान लेखक को विभिन्न कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। एक बार वह भूलवश रास्ता भटक गया। दूसरी बार, उसे बहुत तेज धूप के कारण परेशान होना पड़ा।

प्रश्न 6.

प्रस्तुत यात्रा-वृत्तांत के आधार पर बताइए कि उस समय का तिब्बती समाज कैसा था?

उत्तर-

इस यात्रा वृत्तांत से पता चलता है कि उस समय तिब्बती समाज में परदा प्रथा, छुआछूत जैसी बुराइयाँ न थी। महिलाएँ अजनबी लोगों को भी चाय बनाकर दे देती थी। निम्न श्रेणी के भिखमंगों को छोड़कर कोई भी किसी के घर में आ जा सकता था। पुरुषवर्ग शाम के समय छक पीकर मदहोश रहते थे। वे गंडों पर अगाध विश्वास रखते थे। समाज में अंधविश्वास का बोलबाला था।

प्रश्न 7.

‘मैं अब पुस्तकों के भीतर था।’ नीचे दिए गए विकल्पों में से कौन-सा इस वाक्य का अर्थ बतलाता है-

(क) लेखक पुस्तकें पढ़ने में रम गया।

(ख) लेखक पुस्तकों की शैल्फ के भीतर चला गया।

(ग) लेखक के चारों ओर पुस्तकें ही थीं।

(घ) पुस्तक में लेखक का परिचय और चित्र छपा था।

उत्तर-

(क) लेखक पुस्तकें पढ़ने में रम गया।

प्रश्न 8.

सुमति के यजमान और अन्य परिचित लोग लगभग हर गाँव में मिले। इस आधार पर आप सुमति के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं का चित्रण कर सकते हैं?

उत्तर-

सुमति के यजमान और परिचितों के हर गाँव में मिलने से उनकी अनेक विशेषताओं का पता चलता है; जैसे-

- सुमति मिलसार और हँस-मुख व्यक्ति थे जिनकी जान-पहचान का दायरा विस्तृत था।
- सुमति अपने यजमानों को बोध गया से लाए कपड़े के गंडे बनाकर दिया करते थे और उनसे दक्षिणा लेते थे।
- सुमति लोगों की आस्था का अनुचित लाभ उठाते थे पर इसकी खबर लोगों को नहीं लगने देते थे।

- वे बौद्ध धर्म में गहरी आस्था रखते थे।

प्रश्न 9.

हालाँकि उस वक्त मेरा भेष ऐसा नहीं था कि उन्हें कुछ भी खयाल करना चाहिए था।'-उक्त कथन के अनुसार हमारे आचार-व्यवहार के तरीके वेशभूषा के आधार पर तय होते हैं। आपकी समझ से यह उचित है अथवा अनुचित, विचार व्यक्त करें।

उत्तर-

यह बात सच है कि हमारे आचार-व्यवहार के तरीके वेशभूषा के आधार पर तय होते हैं। हम अच्छा पहनावा देखकर किसी को अपनाते हैं तो गंदे कपड़े देखकर उसे दुत्कारते हैं। लेखक भिखमंगों के वेश में यात्रा कर रहा था। इसलिए उसे यह अपेक्षा नहीं थी कि शेकर विहार का भिक्षु उसे सम्मानपूर्वक अपनाएगा।

मेरे विचार से वेशभूषा देखकर व्यवहार करना पूरी तरह ठीक नहीं है। अनेक संत-महात्मा और भिक्षु साधारण वस्त्र पहनते हैं किंतु वे उच्च चरित्र के इंसान होते हैं, पूज्य होते हैं। परंतु यह बात भी सत्य है कि वेशभूषा से मनुष्य की पहचान होती है। हम पर पहला प्रभाव वेशभूषा के कारण ही पड़ता है। उसी के आधार पर हम भले-बुरे की पहचान करते हैं।

प्रश्न 10.

यात्रा-वृत्तांत के आधार पर तिब्बत की भौगोलिक स्थिति का शब्द-चित्र प्रस्तुत करें। वहाँ की स्थिति आपके राज्य/ शहर से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर

यात्रा वृत्तांत से ज्ञात होता है कि तिब्बत भारत और नेपाल से लगता हुआ देश है जहाँ कुछ समय तक आने-जाने पर प्रतिबंध था। यह स्थान समुद्र तल से काफी ऊँचा है। यहाँ सत्रह-अठारह हजार फीट ऊँचे डाँड़े हैं जो खतरनाक जगहें हैं। ये डाँड़े नदियों के मोड़ और पहाड़ी की चोटियों के कारण बहुत ऊँचे-नीचे हैं। यहाँ एक ओर हजारों बरफ से ढंके श्वेत शिखर हैं तो दूसरी ओर भीटे हैं जिन पर बहुत कम बरफ रहती है। यहाँ विशाल मैदान भी हैं जो पहाड़ों से घिरे हैं। यहाँ के विचित्र जलवायु में सूर्य की ओर मुँह करके चलने पर माथा जलता है जबकि कंधा और पीठ बरफ की तरह ठंडे हो जाते हैं। यह स्थिति हमारे राज्य/शहर से पूरी तरह भिन्न है।

प्रश्न 11.

आपने भी किसी स्थान की यात्रा अवश्य की होगी? यात्रा के दौरान हुए अनुभवों को लिखकर प्रस्तुत करें।

उत्तर-

परीक्षोपयोगी नहीं।

प्रश्न 12.

यात्रा-वृत्तांत गद्य साहित्य की एक विधा है। आपकी इस पाठ्यपुस्तक में कौन-कौन सी विधाएँ हैं? प्रस्तुत विधा उनसे किन मायनों में अलग है?

उत्तर-

क्षितिज के पाठ और विधाएँ इस प्रकार हैं-

### **पाठ – विधा**

दो बैलों की कथा – कहानी

ल्हासा की ओर – यात्रा वृत्तांत

उपभोक्तावाद की संस्कृति – निबंध

साँवले सपनों की याद – संस्मरण

नाना साहब की पुत्री देवी – रिपोर्टाज

मैना को भस्म कर दिया गया

प्रेमचंद के फटेजूते – व्यंग्य

मेरे बचपन के दिन – संस्मरण

एक कुत्ता और एक मैना – निबंध

यह पाठ अन्य विधाओं से इसलिए अलग है क्योंकि यह यात्रा वृत्तांत है जिसमें लेखक द्वारा तिब्बत की यात्रा का वर्णन किया गया है। यह उसकी यात्रा का अनुभव है न कि मानव चरित्र का चित्रण जैसा कि अन्य विधाओं में होता है।

### **भाषा अध्ययन**

प्रश्न 13.

किसी भी बात को अनेक प्रकार से कहा जा सकता है, जैसे-

सुबह होने से पहले हम गाँव में थे।

पौ फटने वाली थी कि हम गाँव में थे।

तारों की छाँव रहते-रहते हम गाँव पहुँच गए।

नीचे दिए गए वाक्य को अलग-अलग तरीके से लिखिए-

‘जान नहीं पड़ता था कि घोड़ा आगे जा रहा है या पीछे।’

उत्तर-

1. पता नहीं चलता था कि घोड़ा आगे जा रहा है या पीछे।
2. कभी लगता था कि घोड़ा आगे जा रहा है, कभी लगता था पीछे जा रहा है।

प्रश्न 14.

ऐसे शब्द जो किसी ‘अंचल’ यानी क्षेत्र विशेष में प्रयुक्त होते हैं उन्हें आंचलिक शब्द कहा जाता है। प्रस्तुत पाठ में से आंचलिक शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

उत्तर-

भरिया, छड़, तिी, फरीकलिपोर चोकी डाँड़ा थुक्पा कंजुर, खोटी आदि।

प्रश्न 15.

पाठ में कागज, अक्षर, मैदान के आगे क्रमशः मोटे, अच्छे और विशाल शब्दों का प्रयोग हुआ है। इन शब्दों से उनकी विशेषता उभर कर आती है। पाठ में से कुछ ऐसे ही और शब्द छाँटिए जो किसी की विशेषता बता रहे हों।

उत्तर-

इस पाठ में प्रयुक्त विशेषण शब्द निम्नलिखित हैं- मुख्य, व्यापारिक, सैनिक, फ़ौजी, चीनी, बहुत-से, परित्यक्त, टोटीदार, सारा, दोनों, आखिरी, अच्छी, भद्र, गरीब, विकट, निर्जन, हजारों, श्वेत, बिल्कुल नंगे, सर्वोच्च, रंग-बिरंगे, थोड़ी, गरमागरम, विशाल, छोटी-सी, कितने-ही, पतली-पतली चिरी बत्तियाँ।।  
पाठेतर सक्रियता

### पाठेतर सक्रियता

प्रश्न 16.

यदि आज के समय में तिब्बत की यात्रा की जाय तो यह यात्रा राहुल जी की यात्रा से पूरी तरह भिन्न होगी।

1930 में तिब्बत में आना-जाना आसान न था। ऐसा राजनैतिक कारणों से था। आज उचित पासपोर्ट के साथ आसानी से यह यात्रा की जा सकती है। अब भिखमंगों के वेश में यात्रा करने की आवश्यकता नहीं है। अब यात्रा के लिए विभिन्न साधनों का प्रयोग किया जा सकता है।

छात्र स्वयं लिखें। अपठित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

आम दिनों में समुद्र किनारे के इलाके बेहद खूबसूरत लगते हैं। समुद्र लाखों लोगों को भोजन देता है और लाखों उससे जुड़े दूसरे कारोबारों में लगे हैं। दिसंबर 2004 को सुनामी या समुद्री भूकंप से उठने वाली तूफानी लहरों के प्रकोप ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि कुदरत की यह देन सबसे बड़े विनाश का कारण भी बन सकती है।

प्रकृति कब अपने ही ताने-बाने को उलट कर रख देगी, कहना मुश्किल है। हम उसके बदलते मिजाज को उसका कोप कह लें या कुछ और, मगर यह अबूझ पहेली अक्सर हमारे विश्वास के चीथड़े कर देती है और हमें यह अहसास करा जाती है कि हम एक कदम आगे नहीं, चार कदम पीछे हैं। एशिया के एक बड़े हिस्से में आने वाले उस भूकंप ने कई द्वीपों को इधर-उधर खिसकाकर एशिया का नक्शा ही बदल डाला। प्रकृति ने पहले भी अपनी ही दी हुई कई अद्भुत चीजें इंसान से वापस ले ली हैं जिसकी कसक अभी तक है।

दुख जीवन को माँजता है, उसे आगे बढ़ने का हुनर सिखाता है। वह हमारे जीवन में ग्रहण लाता है, ताकि हम पूरे प्रकाश की अहमियत जान सकें और रोशनी को बचाए रखने के लिए जतन करें। इस जतन से सभ्यता और संस्कृति का निर्माण होता है। सुनामी के कारण दक्षिण भारत और विश्व के अन्य देशों में जो पीड़ा हम देख रहे हैं, उसे निराशा के चश्मे से न देखें। ऐसे समय में भी मेघना, अरुण और मैगी जैसे बच्चे हमारे जीवन में जोश, उत्साह और शक्ति भर देते हैं। 13 वर्षीय मेघना और अरुण

दो दिन अकेले खारे समुद्र में तैरते हुए जीव-जंतुओं से मुकाबला करते हुए किनारे आ लगे। इंडोनेशिया की रिजा पड़ोसी के दो बच्चों को पीठ पर लादकर पानी के बीच तैर रही थी कि एक विशालकाय साँप ने उसे किनारे का रास्ता दिखाया। मछुआरे की बेटी मैगी ने रविवार को समुद्र का भयंकर शोर सुना, उसकी शरारत को समझा, तुरंत अपना बेड़ा उठाया और अपने परिजनों को उस पर बिठा उतर आई समुद्र में, 41 लोगों को लेकर। महज 18 साल की जलपरी चल पड़ी पगलाए सागर से दो-दो हाथ करने। दस मीटर से ज्यादा ऊँची सुनामी लहरें जो कोई बाधा, रुकावट मानने को तैयार नहीं थीं, इस लड़की के बुलंद इरादों के सामने बौनी ही साबित हुईं।

जिस प्रकृति ने हमारे सामने भारी तबाही मचाई है, उसी ने हमें ऐसी ताकत और सूझ दे रखी है कि हम फिर से खड़े होते हैं और चुनौतियों से लड़ने का एक रास्ता ढूँढ निकालते हैं। इस त्रासदी से पीड़ित लोगों की सहायता के लिए जिस तरह पूरी दुनिया एकजुट हुई है, वह इस बात का सबूत है कि मानवता हार नहीं मानती।

1. कौन-सी आपदा को सुनामी कहा जाता है?
2. 'दुख जीवन को माँजता है, उसे आगे बढ़ने का हुनर सिखाता है'-आशय स्पष्ट कीजिए।

3. मैगी, मेघना और अरुण ने सुनामी जैसी आपदा का सामना किस प्रकार किया?
4. प्रस्तुत गद्यांश में 'दृढ़ निश्चय' और 'महत्त्व' के लिए किन शब्दों का प्रयोग हुआ है ?
5. इस गद्यांश के लिए शीर्षक 'नाराज़ समुद्र' हो सकती है। आप कोई अन्य शीर्षक दीजिए।

उत्तर-

1. भीषण भूकंप के कारण समुद्र में आने वाली तूफानी लहरों को सुनामी कहा जाता है। यह आसपास के इलाकों को नष्ट कर देता है।
2. दुख जीवन को साफ़-सुथरा बनाता है। अर्थात् व्यक्ति दुख से निपटने के उपाय सोचता है, उनसे छुटकारा पाता है। भविष्य में इससे बचने की तैयारी कर लेता है और नई आशा, उमंग और उल्लास के साथ जीवन शुरू करता है।
3. मेघना और अरुण सुनामी में फँस गए थे, वे दो दिन तक समुद्र में तैरते रहे। कई बार वे समुद्री जीवों का शिकार होने से बचे और अंत में किनारे लगकर बच गए। मैगी ने समुद्र में उठ रही दस मीटर ऊँची लहरों के बीच अपना बेड़ा उतार दिया। उसमें अपने परिजनों को बिठाकर किनारे आने के लिए संघर्ष करने लगी। उसके बेड़े में 41 लोग और भी थे।
4. बुलंद इरादे, अहमियत
5. "सुनामी का कहर" या प्रकृति का क्रोध-सुनामी।

# अन्य पाठेतर हल प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1.

लेखक ने तिब्बत की यात्रा किस वेश में की और क्यों?

उत्तर-

लेखक ने तिब्बत की यात्रा भिखमंगों के वेश में की क्योंकि उस समय तिब्बत की यात्रा पर प्रतिबंध था। इसके अलावा डाँडे जैसी खतरनाक जगहों पर डाकुओं से इसी वेश में जान बचायी जा सकती थी।

प्रश्न 2.

तिब्बत यात्रा के दौरान लेखक ने क्या-क्या नए अनुभव प्राप्त किए?

उत्तर-

अपनी तिब्बत यात्रा के दौरान लेखक ने पाया कि वहाँ समाज में छुआछूत, परदा प्रथा जैसी बुराइयाँ नहीं हैं। वहाँ औरतों को अधिक स्वतंत्रता मिली है। लोगों में छंड पीने का रिवाज है। बौद्ध धर्म के अनुयायी तिब्बती अंधविश्वासी भी हैं।

प्रश्न 3.

तिब्बत में यात्रियों के लिए कौन-सी अच्छी बातें हैं?

उत्तर-

तिब्बत में यात्रियों के लिए कई अच्छी बातें हैं-

- लोगों का मूड ठीक होने पर आसानी से रहने की जगह मिल जाती हैं।
- औरतें चाय बनाकर दे देती हैं।
- वहाँ घर में आसानी से जाकर अपनी आँखों के सामने चाय बनाई जा सकती है।
- महिलाएँ भी आतिथ्य सत्कार में रुचि लेती हैं।

प्रश्न 4.

तिब्बत में उस समय यात्रियों के लिए क्या-क्या कठिनाइयाँ थीं?

उत्तर-

तिब्बत की यात्रा में उस समय अनेक कठिनाइयाँ थीं-

- तिब्बत की यात्रा करने पर प्रतिबंध था।
- ऊँचे-नीचे स्थानों पर आना-जाना सुगम न था।
- भरिया न मिलने पर सामान उठाकर चलना कठिन हो जाता था।
- डाकुओं के कारण जान-माल का खतरा बना रहता था।

प्रश्न 5.

डाँड़े क्या हैं? वे सामान्य जगहों से किस तरह भिन्न हैं?

उत्तर-

तिब्बत में डाँड़े सबसे खतरनाक जगह हैं। ये सत्रह-अठारह फीट ऊँचाई पर स्थित हैं। यहाँ आसपास गाँव न होने से डाकुओं का भय सदा बना रहता है।

प्रश्न 6.

डाँड़े के देवता का स्थान कहाँ था? उसे किस प्रकार सजाया गया था?

उत्तर-

डाँड़े के देवता का स्थान सर्वोच्च स्थान पर था। उसे पत्थरों के ढेर रंग-बिरंगे कपड़े की झंडियों, जानवरों की सींगों आदि से सजाया गया था।

प्रश्न 7.

लेखक जिस रास्ते से यात्रा कर रहा था वहाँ के किलों को परित्यक्त क्यों कहा गया है?

उत्तर-

लेखक जिस रास्ते से यात्रा कर रहा था, वहाँ किले बने थे। इन किलों में कभी चीनी सेना रहती थी। आज ये किले देखभाल के अभाव में गिरने लगे हैं। कुछ किसानों ने आकर यहाँ बसेरा बना लिया है। इसलिए इन्हें परित्यक्त कहा है।

प्रश्न 8.

यात्रा करते समय लेखक और उसके साथियों ने डाकुओं से अपनी जान कैसे बचाई ?

उत्तर-

तिब्बते यात्रा के दौरान लेखक ने डाँड़े जैसी खतरनाक जगहों पर भिखमंगों का वेश बनाकर यात्रा की और डाकुओं जैसे किसी को देखते ही टोपी उतारकर “कुची-कुची एक पैसा” कहकर यह बताता है कि वह भिखारी है।

प्रश्न 9.

तिब्बत में डाकुओं को कानून का भय क्यों नहीं है?

उत्तर-

तिब्बत में हथियारों का कानून न होने से डाकुओं को हथियार लेकर चलने में कोई कठिनाई नहीं होती। यदि वे किसी की हत्या कर देते हैं तो सुनसान इलाकों में हत्या का कोई गवाह नहीं मिलता है और वे आसानी से बच जाते हैं।

प्रश्न 10.

कंजुर क्या हैं। इनकी विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर-

कंजुर बुद्ध वचन अनुवाद की हस्तलिखित प्रतियाँ हैं। यह मोटे कागजों पर सुंदर अक्षरों में लिखी गई हैं। ये प्रतियाँ भारी हैं। इनका वजन 15-15 सेर तक हैं।



## दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.

तिब्बत का प्राकृतिक सौंदर्य अनुपम है। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

तिब्बत का प्राकृतिक सौंदर्य सचमुच अनुपम है। यह सुंदर एवं मनोहारी घाटियों से घिरा पर्वतीय क्षेत्र है। एक ओर हरी भरी घाटियाँ और हरे-भरे सुंदर मैदान हैं तो दूसरी ओर ऊँचे पर्वत हैं। इनके शिखरों पर बरफ जमी रहती है। वहीं कुछ भीटे जैसे स्थान हैं जिन पर कम ही बरफ दिखाई देती है। यहाँ के ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों के कोने और नदियों के मोड़ इस खूबसूरती को और भी बढ़ाते हैं। यहाँ की ठंड जलवायु इसके सौंदर्य में वृद्धि करती है।

प्रश्न 2.

सुमति लोगों की धार्मिक आस्था का अनुचित फायदा किस तरह उठाते थे?

उत्तर

सुमति मिलनसार एवं हँसमुख व्यक्ति थे। वे तिब्बत में धर्मगुरु के समान माने जाते थे। सुमति बोध गया से कपड़े लाते और उन्हें पतले-पतले आकर में फाड़कर गाँठ लगाकर गंडा बना लेते थे। इन गंडों को वे अपने यजमानों में बाँटकर दक्षिणा के रूप में धन लिया करते थे। बोध गया से लाए ये कपड़े जब खत्म हो जाते तो वे लाल रंग के किसी कपड़े का गंडा बनाकर यजमानों में बाँटने लगते ताकि वे दक्षिणा पाते रहें। इस तरह वे लोगों की धार्मिक आस्था का अनुचित फायदा उठाते थे।

प्रश्न 3.

डॉङे के प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण कीजिए।

उत्तर-

तिब्बत में डॉङे खतरनाक जगह है जो समुद्रतल से सत्रह-हज़ार फीट ऊँचाई पर स्थित है। यह सुंदर स्थान निर्जन एवं सुनसान होता है। यहाँ के ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों के कोने और नदियों के मोड़ के अलावा चारों ओर फैली हरियाली इसकी सुंदरता बढ़ाती है। एक ओर बरफ से ढंकी पहाड़ों की चोटियाँ हैं तो दूसरी ओर घाटियों में विशाल मैदान हैं। वहाँ भीटे जैसे पहाड़ों पर न हरियाली दिखती है और न बरफ यह मिला-जुला रूप प्राकृतिक सौंदर्य बढ़ा देता है।

प्रश्न 4.

तिब्बत में खेती की ज़मीन की क्या स्थिति है? 'ल्हासा की ओर' पाठ के आलोक में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

तिब्बत में खेती की ज़मीन छोटे-बड़े जागीरदारों में बँटी है। इन ज़मीनों का एक बड़ा हिस्सा जागीरों (मठों) के हाथ में है। अपनी-अपनी जागीर में से हर जागीरदार खुद भी कुछ खेती कराता है। इसके लिए उन्हें मजदूरों को मेहनताना नहीं देना पड़ता है। खेती का इंतजाम देखने के लिए जिन भिक्षुओं को भेजा जाता है जो जागीर के आदमियों के लिए राजा जैसा होता है। इन भिक्षुओं और जागीरदारों पर ही खेती कराने की जिम्मेदारी होती है।

# उपभोक्तावाद की संस्कृति

## पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1.

लेखक के अनुसार जीवन में 'सुख' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर

लेखक के अनुसार, जीवन में 'सुख' का अभिप्राय केवल उपभोग-सुख नहीं है। अन्य प्रकार के मानसिक, शारीरिक और सूक्ष्म आराम भी 'सुख' कहलाते हैं। परंतु आजकल लोग केवल उपभोग-सुख को 'सुख' कहने लगे हैं।

प्रश्न 2.

आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे दैनिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित कर रही है?

उत्तर-

उपभोक्तावादी संस्कृति से हमारा दैनिक जीवन पूरी तरह प्रभावित हो रहा है। आज व्यक्ति उपभोग को ही सुख समझने लगा है। इस कारण लोग अधिकाधिक वस्तुओं का उपभोग कर लेना चाहते हैं। लोग बहुविज्ञापित वस्तुओं को खरीदकर दिखावा करने लगे हैं। इस संस्कृति से मानवीय संबंध कमजोर हो रहे हैं। अमीर-गरीब के बीच दूरी बढ़ने से समाज में अशांति और आक्रोश बढ़ रहा है।

प्रश्न 3.

लेखक ने उपभोक्ता संस्कृति को हमारे समाज के लिए चुनौती क्यों कहा है ?

उत्तर-

गाँधी जी सामाजिक मर्यादाओं तथा नैतिकता के पक्षधर थे। वे सादा जीवन, उच्च विचार के कायल थे। वे चाहते थे कि समाज में आपसी प्रेम और संबंध बढ़े। लोग संयम और नैतिकता का आचरण करें। उपभोक्तावादी संस्कृति इस सबके विपरीत चलती है। वह भोग को बढ़ावा देती है और नैतिकता तथा मर्यादा को तिलांजलि देती है। गाँधी जी चाहते थे कि हम भारतीय अपनी बुनियाद पर कायम रहें, अर्थात् अपनी संस्कृति को न त्यागें। परंतु आज उपभोक्तावादी संस्कृति के नाम पर हम अपनी सांस्कृतिक पहचान को भी मिटाते जा रहे हैं। इसलिए उन्होंने उपभोक्तावादी संस्कृति को हमारे समाज के लिए चुनौती कहा है।

प्रश्न 4.

आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) जाने-अनजाने आज के माहौल में आपका चरित्र भी बदल रहा है और आप उत्पाद को समर्पित होते जा रहे हैं।

(ख) प्रतिष्ठा के अनेक रूप होते हैं, चाहे वे हास्यास्पद ही क्यों न हो।

उत्तर-

(क) उपभोक्तावादी संस्कृति अधिकाधिक उपभोग को बढ़ावा देती है। लोग उपभोग का ही सुख मानकर भौतिक साधनों का उपयोग करने लगते हैं। इससे वे वस्तु की गुणवत्ता पर ध्यान दिए बिना उत्पाद के गुलाम बनकर रह जाते हैं। जिसका असर उनके चरित्र पर पड़ता है।

(ख) लोग समाज में प्रतिष्ठा दिखाने के लिए तरह-तरह के तौर तरीके अपनाते हैं। उनमें कुछ अनुकरणीय होते हैं तो कुछ उपहास का कारण बन जाते हैं। पश्चिमी देशों में लोग अपने अंतिम संस्कार अंतिम विश्राम हेतु-अधिक-से-अधिक मूल्य देखकर सुंदर जगह सुनिश्चित करने लगे हैं। उनका ऐसा करना नितांत हास्यास्पद है।

**रचना और अभिव्यक्ति**

प्रश्न 5.

कोई वस्तु हमारे लिए उपयोगी हो या न हो, लेकिन टी.वी. पर विज्ञापन देखकर हम उसे खरीदने के लिए अवश्य लालायित होते हैं? क्यों ?

उत्तर-

टी.वी. पर आने वाले विज्ञापन बहुत प्रभावशाली होते हैं। वे हमारी आँखों और कानों को विभिन्न दृश्यों और ध्वनियों के सहारे प्रभावित करते हैं। वे हमारे मन में वस्तुओं के प्रति भ्रामक आकर्षण जगा देते हैं।

बच्चे तो उनके बिना रह ही नहीं पाते। 'खाए जाओ, खाए जाओ', 'क्या करें, कंट्रोल ही नहीं होता', जैसे आकर्षण हमारी लार टपका देते हैं। इसलिए अनुपयोगी वस्तुएँ भी हमें लालायित कर देती हैं।

प्रश्न 6.

आपके अनुसार वस्तुओं को खरीदने का आधार वस्तु की गुणवत्ता होनी चाहिए या उसका विज्ञापन? तर्क देकर स्पष्ट करें।

उत्तर-

हमारे अनुसार वस्तुओं को खरीदने का आधार उसकी गुणवत्ता होनी चाहिए न कि विज्ञापन। इस संबंध में कबीर की उक्ति पूर्णतया सटीक बैठती है कि-'मोल करो तलवार का, पड़ी रहन दो म्यान।' विज्ञापन हमें वस्तुओं की विविधता, मूल्य, उपलब्धता आदि का ज्ञान तो कराते हैं परंतु उनकी गुणवत्ता का ज्ञान हमें अपनी बुद्धि-विवेक से करके ही आवश्यकतानुसार वस्तुएँ खरीदनी चाहिए।

प्रश्न 7.

पाठ के आधार पर आज के उपभोक्तावादी युग में पनप रही 'दिखावे की संस्कृति' पर विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर-

आज दिखावे की संस्कृति पनप रही है। यह बात बिल्कुल सत्य है। इसलिए लोग उन्हीं चीजों को अपना रहे हैं, जो दुनिया की नजरों में अच्छी हैं। सारे सौंदर्य-प्रसाधन मनुष्यों को सुंदर दिखाने के ही प्रयास करते हैं। पहले यह दिखावा औरतों में होता था, आजकल पुरुष भी इस दौड़ में आगे बढ़ चले हैं। नए-नए परिधान और फैशनेबल वस्त्र दिखावे की संस्कृति को ही बढ़ावा दे रहे हैं।

आज लोग समय देखने के लिए घड़ी नहीं खरीदते, बल्कि अपनी हैसियत दिखाने के लिए हजारों क्या लाखों रुपए की घड़ी पहनते हैं। आज हर चीज पाँच सितारा संस्कृति की हो गई है। खाने के लिए पाँच-सितारा होटल, इलाज के लिए पाँच सितारा हस्पताल, पढ़ाई के लिए पाँच सितारा सुविधाओं वाले विद्यालये-सब जगह दिखावे का ही साम्राज्य है। यहाँ तक कि लोग मरने के बाद अपनी कब्र के लिए लाखों रुपए खर्च करने लगे हैं ताकि वे दुनिया में अपनी हैसियत के लिए पहचाने जा सकें।

यह दिखावा-संस्कृति मनुष्य को मनुष्य से दूर कर रही है। लोगों के सामाजिक संबंध घटने लगे हैं। मन में अशांति जन्म ले रही है। आक्रोश बढ़ रहा है, तनाव बढ़ रहा है। हम लक्ष्य से भटक रहे हैं। यह अशुभ है। इसे रोका जाना चाहिए।

प्रश्न 8.

आज की उपभोक्ता संस्कृति हमारे रीति-रिवाजों और त्योहारों को किस प्रकार प्रभावित कर रही है? अपने अनुभव के आधार पर एक अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर-

आज की उपभोक्ता संस्कृति के प्रभाव से हमारे रीति-रिवाज और त्योहार अछूते नहीं रहे। हमारे रीति-रिवाज और त्योहार सामाजिक समरसता बढ़ाने वाले, वर्ग भेद मिटाने वाले सभी को उल्लासित एवं आनंदित करने वाले हुआ करते थे, परंतु उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रभाव से इनमें बदलाव आ गया है। इससे त्योहार अपने मूल उद्देश्य से भटक गए हैं। आज रक्षाबंधन के पावन अवसर पर बहन भाई द्वारा दिए गए उपहार का मूल्य आंकलित करती है। दीपावली के त्योहार पर मिट्टी के दीए प्रकाश फैलाने के अलावा समानता दर्शाते थे परंतु बिजली की लड़ियों और मिट्टी के दीयों ने अमीर-गरीब का अंतर स्पष्ट कर दिया है। यही हाल अन्य त्योहारों का भी है।

प्रश्न 9.

धीरे-धीरे सब कुछ बदल रहा है।

इस वाक्य में बदल रहा है' क्रिया है। यह क्रिया कैसे हो रही है-धीरे-धीरे। अतः यहाँ धीरे-धीरे क्रिया-विशेषण है। जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, क्रिया-विशेषण कहलाते हैं। जहाँ वाक्य में हमें पता चलता है क्रिया कैसे, कितनी और कहाँ हो रही है, वहाँ वह शब्द क्रिया-विशेषण कहलाता है।

(क) ऊपर दिए गए उदाहरण को ध्यान में रखते हुए क्रिया-विशेषण से युक्त लगभग पाँच वाक्य पाठ में से छाँटकर लिखिए।

(ख) धीरे-धीरे, जोर से, लगातार, हमेशा, आजकल, कम, ज्यादा, यहाँ, उधर, बाहर-इन क्रिया-विशेषण शब्दों को प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

(ग) नीचे दिए गए वाक्यों में से क्रिया-विशेषण और विशेषण शब्द छाँटकर अलग लिखिए-

उत्तर-

(क)

1. धीरे-धीरे सब कुछ बदल रहा है। ('धीरे-धीरे रीतिवाचक क्रिया-विशेषण) (सब-कुछ 'परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण')
2. आपको लुभाने की जी-तोड़ कोशिश में निरंतर लगी रहती है। ('निरंतर' रीतिवाचक क्रिया-विशेषण)
3. सामंती संस्कृति के तत्वे भारत में पहले भी रहे हैं। ('पहले' कालवाचक क्रिया-विशेषण)
4. अमरीका में आज जो हो रहा है, कल वह भारत में भी आ सकता है। (आज, कल कालवाचक क्रिया-विशेषण)

5. हमारे सामाजिक सरोकारों में कमी आ रही है। (परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण)

(ख)

- **धीरे-धीरे** – भ्रष्टाचार की बीमारी **धीरे-धीरे** पूरे भारत में फैल चुकी है।
- **जोर-से** – अचानक यहाँ **जोर-से** विस्फोट हुआ। लगातार-कल से लगातार वर्षा हो रही है।
- **हमेशा** – चोरी और बेईमानी **हमेशा** नहीं चलती।
- **आजकल** – **आजकल** विज्ञापनों का प्रचलन और भी जोर पकड़ता जा रहा है।
- **कम** – भारत में अनपढ़ों की संख्या **कम** होती जा रही है।
- **ज्यादा** – उत्तर प्रदेश में अपराधों की संख्या पंजाब से **ज्यादा** है।
- **यहाँ** – कल तुम **यहाँ** आकर बैठना।
- **उधर** – मैंने जानबूझकर **उधर** नहीं देखा।
- **बाहर** – तुम चुपचाप **बाहर** चले जाओ।

(ग)

1. निरंतर, (रीतिवाचक क्रिया-विशेषण)
2. पके (विशेषण)
3. हलकी (विशेषण) कल रात कल रात (कालवाचक क्रियाविशेषण) जोरों की (रीतिवाचक क्रिया-विशेषण)
4. उतना, जितनी (परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण) मुँह में (स्थानवाचक क्रिया-विशेषण)
5. आजकल (कालवाचक क्रिया-विशेषण) बाज़ार (स्थानवाचक क्रिया-विशेषण)

### पाठेतर सक्रियता

प्रश्न 10.

‘दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले विज्ञापनों का बच्चों पर बढ़ता प्रभाव’ विषय पर अध्यापक और विद्यार्थी के बीच हुए वार्तालाप को संवाद शैली में लिखिए।

उत्तर-

इस पाठ के माध्यम से आपने उपभोक्ता संस्कृति के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त की। अब आप अपने अध्यापक की सहायता से सामंती संस्कृति के बारे में जानकारी प्राप्त करें और नीचे दिए गए विषय के पक्ष अथवा विपक्ष में कक्षा में अपने विचार व्यक्त करें। क्या उपभोक्ता संस्कृति सामंती संस्कृति का ही विकसित रूप है। आप प्रतिदिन टी० वी० पर ढेरों विज्ञापन देखते-सुनते हैं और इनमें से कुछ आपकी

ज़बान पर चढ़ हैं। आप अपनी पसंद की किन्हीं दो वस्तुओं पर विज्ञापन तैयार कीजिए। उत्तर-छात्र स्वयं करें।

### अन्य पाठेतर हल प्रश्न

#### लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1.

‘सुख की व्याख्या बदल गई है’ के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?

**अथवा**

‘उपभोक्तावाद की संस्कृति’ पाठ के आधार पर बताइए कि कौन-सी बात सुख बनकर रह गई है?

उत्तर-

पहले लोगों को त्याग, परोपकार तथा अच्छे कार्यों से मन को जो सुख-शांति मिलती थी उसे सुख मानते थे, पर आज विभिन्न वस्तुओं और भौतिक साधनों के उपभोग को सुख मानने लगे हैं।

प्रश्न 2.

हम जाने-अनजाने उत्पाद को समर्पित होते जा रहे हैं’ -का आशय उपभोक्तावाद की संस्कृति के आधार पर कीजिए।

उत्तर-

‘हम जाने-अनजाने उत्पाद को समर्पित होते जा रहे हैं’ का आशय यह है कि वस्तुओं की आवश्यकता और उसकी गुणवत्ता पर ध्यान दिए बिना वस्तुओं को खरीदकर उनका उपभोग कर लेना चाहते हैं। ऐसा लगता है जैसे हम उपभोग के लिए बने हो।

प्रश्न 3.

नई जीवन शैली का बाजार पर क्या प्रभाव पड़ा है? उपभोक्तावाद की संस्कृति पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर-

नई जीवन शैली अर्थात् उपभोक्तावाद की पकड़ में आने के बाद व्यक्ति अधिकाधिक वस्तुएँ खरीदना चाहता है। इस कारण बाज़ार विलासिता की वस्तुओं से भर गए हैं तथा तरह-तरह की नई वस्तुओं से लोगों को लुभा रहे हैं।

प्रश्न 4.

पुरुषों का झुकाव सौंदर्य प्रसाधनों की ओर बढ़ा है। उपभोक्तावाद की संस्कृति' पाठ के आलोक में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

पुरुष पहले प्रायः तेल और साबुन से काम चला लेते थे परंतु उपभोक्तावाद के प्रभाव के कारण उनका झुकाव सौंदर्य प्रसाधनों की ओर बढ़ा है। अब वे आफ्टर शेव और कोलोन का प्रयोग करने लगे हैं।

प्रश्न 5.

'व्यक्तियों की केंद्रिकता' से क्या तात्पर्य है? 'उपभोक्तावाद की संस्कृति' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

'व्यक्ति की केंद्रिकता' का तात्पर्य है-अपने आप तक सीमित होकर रह जाना। अर्थात् व्यक्ति पहले दूसरों के सुख-दुख को अपना समझता था तथा उसे बाँटने का प्रयास करता था परंतु अब स्वार्थवृत्ति के कारण उन्हें दूसरों के दुख से कोई मतलब नहीं रह गया है।

प्रश्न 6.

संस्कृति की नियंत्रक शक्तियाँ कौन-सी हैं। आज उनकी स्थिति क्या है?

उत्तर-

कुछ ऐसी शक्तियाँ हैं जो भारतीय संस्कृति पर नियंत्रण करती हैं। ये शक्तियाँ हैं- धर्म, परंपराएँ, मान्यताएँ, रीति-रिवाज, आस्थाएँ पूजा-पाठ आदि हैं। नई जीवन शैली के कारण लोगों का इनसे विश्वास उठता जा रहा है और ये शक्तियाँ कमजोर होती जा रही हैं।

प्रश्न 7.

लोग उपभोक्तावादी संस्कृति अपनाते जा रहे हैं। इसका क्या परिणाम हो रहा है?

उत्तर-

नई संस्कृति के प्रभाव स्वरूप लोगों द्वारा उपभोग को ही सबकुछ मान लिया गया है। विशिष्ट जन सुख साधनों का खूब उपयोग कर रहे हैं जबकि सामान्य जन इसे ललचाई नजरों से देख रहे हैं। इस कारण सामाजिक दूरियाँ बढ़ रही हैं तथा सुख शांति नष्ट हो रही है।

प्रश्न 8.

'सांस्कृतिक अस्मिता' क्या है? 'उपभोक्तावाद की संस्कृति' का इस पर क्या असर पड़ा है?

उत्तर-



‘सांस्कृतिक अस्मिता’ का अर्थ है-हमारी सांस्कृतिक पहचान अर्थात् हमारे जीने, खान-पान, रहन-सहन, सोचने-विचारने आदि के तौर-तरीके जो हमें दूसरों से अलग करते हैं तथा जिनसे हमारी विशिष्ट पहचान बनी है। उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण सांस्कृतिक अस्मिता कमजोर होती जा रही है।

प्रश्न 9.

विज्ञापन हमारे जीवन को किस प्रकार प्रभावित कर रहा है?

**अथवा**

विज्ञापनों की अधिकता का हमारे जीवन शैली पर क्या प्रभाव पड़ रहा है? ‘उपभोक्तावाद की संस्कृति’ पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

विज्ञापनों की भाषा बड़ी ही आकर्षक और भ्रामक होती है। आज उत्पाद को बेचने के लिए हमारे चारों ओर विज्ञापनों का जाल फैला है। इसके प्रभाव में आकर हम विज्ञापित वस्तुओं का उपयोग करने लगे हैं। अब वस्तुओं के चयन में गुणवत्ता पर ध्यान न देकर विज्ञापनों को आधार बनाया जाता है।

प्रश्न 10.

समाज में बढ़ती अशांति और आक्रोश का मूलकारण आप की दृष्टि में क्या है? उपभोक्तावाद की संस्कृति पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

समाज में बढ़ती अशांति और आक्रोश का मूल कारण उपभोक्तावादी संस्कृति को अपनाना है। पश्चिमी जीवन शैली को बढ़ाने वाली तथा दिखावा प्रधान होने के कारण विशिष्ट जन इसे अपनाते हैं और महँगी वस्तुओं के उपयोग को प्रतिष्ठा का प्रतीक मानते हैं जबकि कमजोर वर्ग इसे ललचाई नजरों से देखता है।

प्रश्न 11.

‘खिड़की-दरवाजे खुले रखने के लिए किसने कहा था? इसका अर्थ भी स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

भारतीयों द्वारा अंधाधुंध पाश्चात्य जीवन शैली अपनाने के संबंध में गांधी जी ने कहा था कि हमें अपनी बुद्धि-विवेक से सोच-विचार कर पश्चिमी जीवन शैली के उन्हीं आंशों को अपनाना चाहिए जो हमारी भारतीय संस्कृति के लिए घातक सिद्ध न हों। हमें भारतीय संस्कृति को बचाए रखना है।

**दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर**

प्रश्न 1.

उपभोक्तावादी संस्कृति के विभिन्न दुष्परिणाम सामने आने लगे हैं। आप उनका उल्लेख करते हुए इनसे बचने के उपाय बताइए।

उत्तर-

उपभोक्तावादी संस्कृति उपभोग और दिखावे की संस्कृति है। लोगों ने इसे बिना सोचे-समझे अपनाया ताकि वे आधुनिक कहला सकें। इस संस्कृति का दुष्परिणाम सामाजिक अशांति में वृद्धि, समरसता में कमी विषमता आदि रूपों में सामने आने लगा है। इस कारण सामाजिक मर्यादाएँ टूटने लगी हैं, नैतिक मानदंड कमजोर पड़ते जा रहे हैं और लोग स्वार्थी होते जा रहे हैं। उपभोक्तावादी संस्कृति के दुष्परिणाम से बचने के लिए-

- भारतीय संस्कृति को अपनाए रखना चाहिए।
- आधुनिक बनने के चक्कर में पश्चिमी संस्कृति का अंधानुकरण नहीं करना चाहिए।
- दिखावे की प्रवृत्ति से बचना चाहिए।
- आवश्यकतानुसार एवं गुणवत्ता को ध्यान में रखकर वस्तुएँ खरीदनी चाहिए।

प्रश्न 2.

गांधी जी उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रति क्या विचार रखते थे? वे किस संस्कृति को श्रेयस्कर मानते थे?

उत्तर-

गांधीजी भारत के लिए उपभोक्तावादी संस्कृति को अच्छा नहीं मानते थे। यह संस्कृति मानवीय गुणों का नाश करती है, लोगों में स्वार्थवृत्ति और आत्मकेंद्रिता बढ़ाती है, जिससे लोगों में परोपकार त्याग, दया, सद्भाव समरसता जैसे गुणों का अभाव होता जा रहा है। सुख-सुविधाओं का अधिकाधिक उपयोग और दिखावा करना मानो इस संस्कृति का लक्ष्य बनकर रह गया है। सुख-शांति का इससे कोई सरोकार ही नहीं है। इससे हमारी नींव कमजोर हो रही है जिससे भारतीय संस्कृति के लिए खतरा एवं चुनौती उत्पन्न हो गई है। गांधी जी भारतीय संस्कृति को श्रेयस्कर मानते थे जो मनुष्यता को बढ़ावा देती है।

प्रश्न 3.

उपभोक्तावादी संस्कृति का व्यक्ति विशेष पर क्या प्रभाव पड़ा है? उपभोक्तावाद की संस्कृति पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर

उपभोक्तावादी संस्कृति ने व्यक्ति विशेष को गहराई तक प्रभावित किया है। व्यक्ति इसके चमक-दमक और आकर्षण से बच नहीं पाया है। व्यक्ति चाहता है कि वह अधिकाधिक सुख-साधनों का प्रयोग करे। इसी आकांक्षा में वह वस्तुओं की गुणवत्ता पर ध्यान दिए बिना उत्पाद के वश में हो गया है। इससे उसके

चरित्र में बदलाव आया है। विज्ञापनों की अधिकता से व्यक्ति उन्हीं वस्तुओं को प्रयोग कर रहा है जो विज्ञापनों में बार-बार दिखाई जाती है। व्यक्ति महँगी वस्तुएँ खरीदकर अपनी हैसियत का प्रदर्शन करने लगा है।

प्रश्न 4.

उपभोक्तावादी संस्कृति का अंधानुकरण हमारी संस्कृति के मूल तत्वों के लिए कितना घातक है? 'उपभोक्तावाद की संस्कृति' के आलोक में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

उपभोक्तावादी संस्कृति और भारतीय संस्कृति में कोई समानता नहीं है। यह संस्कृति भोग एवं दिखावा को बढ़ावा देती है। जबकि भारतीय संस्कृति त्याग एवं परोपकार को बढ़ावा देती है। इस तरह हमारी संस्कृति के मूल तत्वों पर प्रहार हो रहा है। इसके अलावा-स्वार्थवृत्ति, आत्म केंद्रितता लाभवृत्ति को बढ़ावा उपभोक्तावादी संस्कृति की देन है। अब हम दिखावे के चक्कर में पड़कर त्योहारों और विभिन्न कार्यक्रमों में महँगे उपहार देकर अपनी हैसियत जताने लगे हैं। इसके अलावा इन उपहारों और कार्डों को खुद न देकर कोरियर आदि से भेजने लगे हैं। हमारे ये कार्य-व्यवहार भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों को नष्ट करते हैं।

# साँवले सपनों की याद

## पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1.

किस घटना ने सालिम अली के जीवन की दिशा को बदल दिया और उन्हें पक्षी प्रेमी बना दिया?

उत्तर-

एक बार बचपन में सालिम अली की एयरगन से एक गौरैया घायल होकर गिर पड़ी। इस घटना ने सालिम अली के जीवन की दिशा को बदल दिया। वे गौरैया की देखभाल, सुरक्षा और खोजबीन में जुट गए। उसके बाद उनकी रुचि पूरे पक्षी-संसार की ओर मुड़ गई। वे पक्षी-प्रेमी बन गए।

प्रश्न 2.

सालिम अली ने पूर्व प्रधानमंत्री के सामने पर्यावरण से संबंधित किन संभावित खतरों का चित्र खींचा होगा

कि जिससे उनकी आँखें नम हो गई थीं?

उत्तर-

सालिम अली ने पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह के सामने रेगिस्तानी हवा के गरम झोंकों और उसके दुष्प्रभावों का उल्लेख किया। यदि इस हवा से केरल की साइलेंट वैली को न बचाया गया तो उसके नष्ट होने का खतरा उत्पन्न हो जाएगा। प्रकृति के प्रति ऐसा प्रेम और चिंता देख उनकी आँखें नम हो गईं।

प्रश्न 3.

लॉरेस की पत्नी फ्रीडा ने ऐसा क्यों कहा होगा कि “मेरी छत पर बैठने वाली गौरैया लॉरेस के बारे में ढेर सारी बातें जानती है?”

उत्तर-

लॉरेस की पत्नी फ्रीडा जानती थी कि लॉरेस को गौरैया से बहुत प्रेम था। वे अपना काफी समय गौरैया के साथ बिताते थे। गौरैया भी उनके साथ अंतरंग साथी जैसा व्यवहार करती थी। उनके इसी पक्षी-प्रेम को उद्घाटित करने के लिए उन्होंने यह वाक्य कहा।

प्रश्न 4.

आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) वो लॉरेस की तरह, नैसर्गिक जिंदगी का प्रतिरूप बन गए थे।

(ख) कोई अपने जिस्म की हरारत और दिल की धड़कन देकर भी उसे लौटाना चाहे तो वह पक्षी अपने सपनों के गीत दोबारा कैसे गा सकेगा!

(ग) सालिम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने की बजाए अथाह सागर बनकर उभरे थे।

उत्तर-

(क) लॉरेस बनावट से दूर रहकर प्राकृतिक जीवन जीते थे। वे प्रकृति से प्रेम करते हुए उसकी रक्षा के लिए चिंतित रहते थे। इसी तरह सालिम अली ने भी प्रकृति की सुरक्षा, देखभाल के लिए प्रयास करते हुए सीधा एवं सरल जीवन जीते थे।

(ख) मृत्यु ऐसा सत्य है जिसके प्रभाव स्वरूप मनुष्य सांसारिकता से दूर होकर चिर निद्रा और विश्राम प्राप्त कर लेता है। उसका हँसना-गाना, चलना-फिरना सब बंद हो जाता है। मौत की गोद में विश्राम कर रहे सालिम अली की भी यही स्थिति थी। अब उन्हें किसी तरह से पहले जैसी अवस्था में नहीं लाया जा सकता था।

(ग) टापू समुद्र में उभरा हुआ छोटा भू-भाग होता है जबकि सागर अत्यंत विशाल और विस्तृत होता है। सालिम अली भी प्रकृति और पक्षियों के बारे में थोड़ी-सी जानकारी से संतुष्ट होने वाले नहीं थे। वे इनके बारे में असीमित ज्ञान प्राप्त करके अथाह सागर-सा बन जाना चाहते थे।

प्रश्न 5.

इस पाठ के आधार पर लेखक की भाषा-शैली की चार विशेषताएँ बताइए।

उत्तर-

**‘साँवले सपनों की याद’ नामक पाठ की भाषा-शैली संबंधी विशेषताएँ निम्नलिखित हैं**

### 1. मिश्रित शब्दावली का प्रयोग-

इस पाठ में उर्दू, तद्भव और संस्कृत शब्दों का सम्मिश्रण है। लेखक ने उर्दू शब्दों का अधिक प्रयोग किया है। उदाहरणतया

जिंदगी, परिंदा, खूबसूरत, हूजूम, खामोश, सैलानी, सफ़र, तमाम, आखिरी, माहौल, खुद। संस्कृत शब्दों का प्रयोग भी प्रचुरता से हुआ है। जैसे-संभव, अंतहीन, पक्षी, वर्ष, इतिहास, वाटिका, विश्राम, संगीतमय, प्रतिरूप।

जाबिर हुसैन की शब्दावली गंगा-जमुनी है। उन्होंने संस्कृत-उर्दू का इस तरह प्रयोग किया है कि वे सगी बहने लगती हैं। जैसे- अंतहीन सफ़र, प्रकृति की नज़र, दुनिया संगीतमय, जिंदगी को प्रतिरूप। इन प्रयोगों में एक शब्द संस्कृत का, तो दूसरा उर्दू का है।

### 2. जटिल वाक्यों का प्रयोग-

जाबिर हुसैन की वाक्य-रचना बंकिम और जटिल है। वे सरल-सीधे वाक्यों का प्रयोग नहीं करते।

कलात्मकता उनके हर वाक्य में है। उदाहरणतया

‘सुनहरे परिंदों के खूबसूरत पंखों पर सवार साँवले सपनों का एक हूजूम मौत की खामोश वादी की तरफ अग्रसर है।’

पता नहीं, इतिहास में कब कृष्ण ने वृंदावन में रासलीला रची थी और शोख गोपियों को अपनी शरारतों का निशाना बनाया था।

### 3. अलंकारों का प्रयोग-

जाबिर हुसैन अलंकारों की भाषा में लिखते हैं। उपमा, रूपक, उनके प्रिय अलंकार हैं। उदाहरणतया

- अब तो वो उस वन-पक्षी की तरह प्रकृति में विलीन हो रहे हैं। (उपमा)
- सालिम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने की बजाय अथाह सागर बनकर उभरे थे।

- रोमांच का सोता फूटता महसूस कर सकता है? (रूपक) ।

#### 4. भावानुरूप भाषा-

ज़ाबिर हुसैन भाव के अनुरूप शब्दों और वाक्यों की प्रकृति बदल देते हैं। उदाहरणतया, कभी वे छोटे-छोटे वाक्य प्रयोग करते हैं

- आज सालिम अली नहीं हैं।
- चौधरी साहब भी नहीं हैं। कभी वे उत्तेजना लाने के लिए प्रश्न शैली का प्रयोग करते हैं और जटिल वाक्य बनाते चले जाते हैं। जैसे
- कौन बचा है, जो अब सौंधी माटी पर उगी फसलों के बीच एक नए भारत की नींव रखने का संकल्प लेगा?
- कौन बचा है, जो अब हिमालय और लद्दाख की बर्फीली जमीनों पर जीने वाले पक्षियों की वकालत करेगा?

प्रश्न 6.

इस पाठ में लेखक ने सालिम अली के व्यक्तित्व का जो चित्र खींचा है उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर-

लेखक ने सालिम अली का जो चित्र खींचा है, वह इस प्रकार है-

सालिम अली प्रसिद्ध पक्षी-विज्ञानी होने के साथ-साथ प्रकृति-प्रेमी थे। एक बार बचपन में उनकी एअरगन से घायल होकर नीले कंठवाली गौरैया गिरी थी। उसकी हिफाजत और उससे संबंधित जानकारी पाने के लिए उन्होंने जो प्रयास किया, उससे पक्षियों के बारे में उठी जिज्ञासा ने उन्हें पक्षी-प्रेमी बना दिया। वे दूर-दराज घूम-घूमकर पक्षियों के बारे में जानकारी एकत्र रहे हैं और उनकी सुरक्षा के लिए चिंतित रहे। वे केरल की साइलेंट वैली को रेगिस्तानी हवा के झोंकों से बचाने के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह से भी मिले। वे प्रकृति की दुनिया के अथाह सागर बन गए थे।

प्रश्न 7.

‘साँवले सपनों की याद’ शीर्षक की सार्थकता पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर-

‘साँवले सपनों की याद’ एक रहस्यात्मक शीर्षक है। इसे पढ़कर पाठक जिज्ञासा से आतुर हो जाता है कि कैसे सपने? किसके सपने? कौन-से सपने? ये सपने साँवले क्यों हैं? कौन इन सपनों की याद में आतुर है? आदि।

‘साँवले सपने’ मनमोहक इच्छाओं के प्रतीक हैं। ये सपने प्रसिद्ध पक्षी-प्रेमी सालिम अली से संबंधित हैं। सालिम अली जीवन-भर सुनहरे पक्षियों की दुनिया में खोए रहे। वे उनकी सुरक्षा और खोज के सपनों में खोए रहे। ये सपने हर किसी को नहीं आते। हर कोई पक्षी-प्रेम में इतना नहीं डूब सकता। इसलिए आज जब सालिम अली नहीं रहे तो लेखक को उन साँवले सपनों की याद आती है जो सालिम अली की आँखों में बसते थे। यह शीर्षक सार्थक तो है किंतु गहरा रहस्यात्मक है। चंदन की तरह घिस-घिसकर इसके अर्थ तथा प्रभाव तक पहुँचा जा सकता है।

## रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 8.

प्रस्तुत पाठ सालिम अली की पर्यावरण के प्रति चिंता को भी व्यक्त करता है। पर्यावरण को बचाने के लिए आप कैसे योगदान दे सकते हैं?

उत्तर-

‘साँवले सपनों की याद’ सालिम अली ने पर्यावरण के प्रति अपनी चिंता प्रकट की है। उन्होंने केरल की साइलेंट वादी को रेगिस्तानी हवा के झोंको से बचाने के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री से मुलाकात की और उसे बचाने का अनुरोध किया। इस तरह अपने पर्यावरण को बचाने के लिए हम भी विभिन्न रूपों में अपना योगदान दे सकते हैं; जैसे-

- अपने आस-पास पड़ी खाली भूमि पर अधिकाधिक पेड़-पौधे लगाएँ।
- पेड़-पौधों को कटने से बचाने के लिए लोगों में जागरूकता पैदा करें।
- लोगों को पेड़-पौधों की महत्ता बताएँ।
- हम जल स्रोतों को न दूषित करें और न लोगों को दूषित करने दें।
- फैक्ट्रियों से निकले अपशिष्ट पदार्थों एवं विषैले जल को जलस्रोतों में न मिलने दें।
- प्लास्टिक से बनी वस्तुओं का प्रयोग कम से कम करें।
- इधर-उधर कूड़ा-करकट न फेंकें तथा ऐसा करने से दूसरों को भी मना करें।
- विभिन्न रूपों में बार-बार प्रयोग की जा सकने वाली वस्तुओं का प्रयोग करें।
- सूखी पत्तियाँ और कूड़े को जलाने से बचें तथा दूसरों को भी इस बारे में जागरूक करें।

# अन्य पाठेतर हल प्रश्न

## लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.

साँवले सपनों का हुजूम कहाँ जा रहा है? उसे रोकना संभव क्यों नहीं है?

उत्तर-

साँवले सपनों का हुजूम मौत की खामोश वादी की ओर जा रहा है। इसे रोकना इसलिए संभव नहीं है क्योंकि इस वादी 'मैं जाने वाले' वे होते हैं जो मौत की गोद में चिर विश्राम कर रहे होते हैं। ये अपना जीवन जी चुके होते हैं।

प्रश्न 2.

'मौत की खामोश वादी' किसे कहा गया है? इसे घाटी की ओर किसे ले जाया जा रहा है?

उत्तर-

'मौत की खामोश वादी' कब्रिस्तान को कहा गया है। इस घाटी की ओर प्रसिद्ध पक्षी प्रेमी सालिम अली को ले जाया जा रहा है जो लगभग सौ वर्ष की उम्र में कैंसर नामक बीमारी का शिकार हो गए और मृत्यु की गोद में सो गए हैं।

प्रश्न 3.

सालिम अली के इस सफ़र को अंतहीन क्यों कहा गया है?

उत्तर-

सालिम अली के इस सफ़र को इसलिए अंतहीन कहा गया है क्योंकि इससे पहले वाले सफ़रों में सालिम अली जब पक्षियों की खोज में निकलते थे तो वे पक्षियों को देखते ही उनसे जुड़ी दुर्लभ जानकारियाँ लेकर लौट आते थे परंतु इस सफ़र का कोई अंत न होने से सालिम अली लौट न सकेंगे।

प्रश्न 4.

मृत्यु की गोद में सोए सालिम अली की तुलना किससे की गई है और क्यों?

उत्तर-

मृत्यु की गोद में सोए सालिम अली की तुलना उस वन-पक्षी से की गई है जो जिंदगी का आखिरी गीत



गाने के बाद मौत की गोद में जा बसा हो। ऐसा इसलिए कहा गया है क्योंकि सालिम अली भी अपनी जिंदगी के सौ वर्ष जीकर मृत्यु को प्राप्त कर चुके हैं। अब वे पक्षियों के बारे में जानकारी एकत्र करने नहीं जा सकेंगे।

प्रश्न 5.

सालिम अली की दृष्टि में मनुष्य क्या भूल करते हैं? उन्होंने इसे भूल क्यों कहा?

उत्तर-

सालिम अली की दृष्टि में मनुष्य यह भूल करते हैं कि लोग पक्षियों जंगलों-पहाड़ों, झरने-आवशारों आदि को आदमी की निगाह से देखते हैं। उन्होंने इसे भूल इसलिए कहा क्योंकि मनुष्य पक्षियों, नदी-झरनों आदि को इस दृष्टि से देखता है कि इससे उसका कितना स्वार्थ पूरा हो सकता है।

प्रश्न 6.

वृंदावन में यमुना का साँवला पानी किन-किन घटनाओं की याद दिलाता है?

उत्तर-

वृंदावन में यमुना का साँवला पानी कृष्ण से जुड़ी विभिन्न घटनाओं की याद दिलाता है, जैसे-

- कृष्ण द्वारा वृंदावन में रासलीला रचाना। चंचल गोपियों को अपनी शरारतों का निशाना बनाना।
- माखन भरे बर्तन फोड़ना और दूध-छाली खाना।
- वाटिका में घने पेड़ों की छाँव में बंशी बजाना और ब्रज की गलियों को संगीतमय कर देना जिसे सुनते ही लोगों के कदम ठहर जाना।

प्रश्न 7.

वृंदावन में सुबह-शाम सैलानियों को होने वाली अनुभूति अन्य स्थानों की अनुभूति से किस तरह भिन्न है?

उत्तर-

वृंदावन में सुबह-शाम सैलानियों को सुखद अनुभूति होती है। वहाँ सूर्योदय पूर्व जब उत्साहित भीड़ यमुना की सँकरी गलियों से गुजरती है तो लगता है कि अचानक कृष्ण बंशी बजाते हुए कहीं से आ जाएँगे। कुछ ऐसी ही अनुभूति शाम को भी होती है। ऐसी अनुभूति अन्य स्थानों पर नहीं होती है।

प्रश्न 8.

पक्षियों के प्रति सालिम अली की दृष्टि अन्य लोगों की दृष्टि में क्या अंतर है? 'साँवले सपनों की याद' पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर-

सालिम अली दूर-दूर तक पक्षियों की खोज में यात्रा करते थे। वे अत्यंत उत्साह से दुर्गम स्थानों पर भी पक्षियों की खोज करते, उनकी सुरक्षा के बारे में सोचते और उनसे जुड़ी दुर्लभ जानकारी हासिल करते थे परंतु अन्य लोग पक्षियों को अपने स्वार्थ और मनोरंजन की दृष्टि से देखते हैं।

प्रश्न 9.

‘बर्ड-वाचर’ किसे कहा गया है और क्यों?

उत्तर-

‘बर्ड-वाचर’ प्रसिद्ध पक्षी-प्रेमी सालिम अली को कहा गया है क्योंकि सालिम अली जीवनभर पक्षियों की खोज करते रहे। और उनकी सुरक्षा के लिए पूरी तरह समर्पित रहे। वे अपने सुख-दुख की चिंता किए बिना आँखों पर दूरबीन लगाए पक्षियों से जुड़ी जानकारी एकत्र करते रहे।

प्रश्न 10.

सालिम अली पक्षी-प्रेमी होने के साथ-साथ प्रकृति प्रेमी भी थे। साँवले सपनों की याद पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

सालिम अली पक्षियों से जितना लगाव रखते हुए उनकी सुरक्षा के लिए चिंतित रहते थे उतना ही वे प्रकृति और पर्यावरण की सुरक्षा के लिए भी चिंतित रहते थे। वे केरल की साइलेंट वैली को बचाने के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह से मिले और वैली को बचाने का अनुरोध किया।

प्रश्न 11.

तहमीना कौन थीं? उन्होंने सालिम अली की किस तरह मदद की?

उत्तर-

तहमीना सालिम अली की सहपाठीनी थी जो बाद में उनकी जीवनसंगिनी बनी। उन्होंने सालिम अली के पक्षी-प्रेम के मार्ग में कोई बाधा नहीं खड़ी की। उन्होंने सालिम अली का साथ दिया और प्रकृति से जुड़ने में उनकी मदद की।

## दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1.

‘अब हिमालय और लद्दाख की बरफीली जमीनों पर रहने वाले पक्षियों की वकालत कौन करेगा’? ऐसा लेखक ने क्यों कहा होगा? ‘सावले सपनों की याद’ पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

सालिम अली की मृत्यु पर लेखक के मस्तिष्क में उनसे जुड़ी हर यादें चलचित्र की भाँति घूम गईं। लेखक ने महसूस किया कि सालिम अली आजीवन पक्षियों की तलाश में पहाड़ जैसे दुर्गम स्थानों पर घूमते रहे। वे आँखों पर दूरबीन लगाए नदी के किनारों पर जंगलों में और पहाड़ जैसे दुर्गम स्थानों पर भी पक्षियों की खोज करते रहे और उनकी सुरक्षा के प्रति प्रयत्नशील रहे। वे पक्षियों को बचाने का उपाय करते रहे। इसके विपरीत आज मनुष्य पक्षियों की उपस्थिति में अपना स्वार्थ देखता है। सालिम अली के पक्षी-प्रेम को याद कर लेखक ने ऐसा कहा होगा।

प्रश्न 2.

फ्रीडा कौन थी? उसने लॉरेस के बारे में क्या-क्या बताया?

उत्तर-

फ्रीडा डी.एच.लॉरेस की पत्नी थीं। लॉरेस के बारे में पूछने पर उन्होंने बताया था कि मेरे लिए लॉरेस के बारे में कुछ कह पाना असंभव-सा है। मुझे लगता है कि मेरे छत पर बैठने वाली गौरैया लॉरेस के बारे में ढेर सारी बातें जानती है। वह मुझसे भी ज्यादा जानती है। वह सचमुच ही इतना खुला-खुला और सादा दिल आदमी थे। संभव है कि लॉरेस मेरी रंगों में, मेरी हड्डियों में समाया हो।

प्रश्न 3.

‘साँवले-सपनों की याद’ पाठ के आधार पर बताइए कि सालिम अली को नैसर्गिक जिंदगी का प्रतिरूप क्यों कहा गया है?

उत्तर-

सालिम अली महान पक्षी-प्रेमी थे। इसके अलावा वे प्रकृति से असीम लगाव रखते थे। वे प्रकृति के इतना निकट आ गए थे कि ऐसा लगता था कि उनका जीवन प्रकृतिमय हो गया था। सालिम अली प्रकृति के प्रभाव में आने के कायल नहीं थे। वे प्रकृति को अपने प्रभाव में लाना चाहते थे। पक्षी-प्रेम के कारण वे पक्षियों की खोज करते हुए प्रकृति के और निकट आ गए। नदी-पहाड़, झरने विशाल मैदान और अन्य दुर्गम स्थानों से उनका गहरा नाता जुड़ गया था। जिंदगी में अद्भुत सफलता पाने के बाद भी वे प्रकृति से जुड़े रहे। इस तरह उनका जीवन नैसर्गिक जिंदगी का प्रतिरूप बन गया था।

प्रश्न 4.

‘साँवले सपनों की याद’ पाठ के आधार पर सालिम अली के व्यक्तित्व की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर-

सालिम अली दुबली-पतली काया वाले व्यक्ति थे, जिनकी आयु लगभग एक सौ वर्ष होने को थी। पक्षियों

की खोज में की गई लंबी-लंबी यात्राओं की थकान से उनका शरीर कमजोर हो गया था। वे अपनी आँखों पर प्रायः दूरबीन चढ़ाए रखते थे। पक्षियों की खोज के लिए वे दूर-दूर तक तथा दुर्गम स्थानों की यात्राएँ करते थे। उनकी एअर गन से घायल होकर गिरी नीले कंठवाली गौरैया ने उनके जीवन की दिशा बदले दी। वे पक्षी प्रेमी होने के अलावा प्रकृति प्रेमी भी थे। वे प्रकृतिमय जीवन जीते थे और उसकी सुरक्षा के लिए प्रयासरत रहते थे। वे नदी पहाड़-झरनों आदि को प्रकृति की दृष्टि से देखते थे।

प्रश्न 5.

‘साँवले सपनों की याद’ पाठ के आधार पर बताइए कि सामान्य लोग पर्यावरण की रक्षा में अपना योगदान किस तरह दे सकते हैं?

उत्तर

‘साँवले सपनों की याद’ पाठ से ज्ञात होता है कि सालिम अली प्रकृति और उससे जुड़े विभिन्न अंगों-नदी, पहाड़, झरने, आबशारों आदि को प्रकृति की निगाह से देखते थे और उन्हें बचाने के लिए प्रयत्नशील रहते थे। उन्होंने केरल साइलेंट वैली को बचाने का अनुरोध किया। इसी तरह सामान्य लोग भी अपने पर्यावरण की रक्षा के लिए विभिन्न रूपों में अपना योगदान दे सकते हैं; जैसे-

- अधिकाधिक पेड़ लगाकर धरती की हरियाली बढ़ाकर।
- पेड़ों को कटने से बचाकर।
- प्लास्टिक से बनी वस्तुओं का प्रयोग न करके।
- अपने आसपास साफ़-सफाई करके।
- जल-स्रोतों को दूषित होने से बचाकर।
- वन्य जीवों तथा पक्षियों की रक्षा करके मनुष्य पर्यावरण की सुरक्षा कर सकता है।

# नाना साहब की पुत्री देवी मैना को भस्म कर दिया गया

## पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1.

बालिका मैना ने सेनापति 'हे' को कौन-कौन से तर्क देकर महल की रक्षा के लिए प्रेरित किया?

उत्तर-

बालिका मैना ने सेनापति 'हे' को महल की रक्षा के लिए निम्नलिखित तर्क दिए-

1. अंग्रेजों के विरुद्ध शस्त्र उठाने वाले दोषी हो सकते हैं किंतु यह महल दोषी नहीं है।
2. यह राजमहल उसे (मैना को) बहुत प्रिय है।

प्रश्न 2.

मैना जड़ पदार्थ मकान को बचाना चाहती थी पर अंग्रेज़ उसे नष्ट करना चाहते थे। क्यों?

उत्तर-

मैना जड़ पदार्थ मकान को बचाना चाहती थी क्योंकि मैना उसी मकान में पली-बढ़ी थी, इसी में उसका बचपन बीता था तथा इस मकान को वह बहुत चाहती थी पर अंग्रेजों के विरुद्ध हथियार उठाकर अंग्रेजों का नरसंहार करने वाले नाना का महल होने के कारण अंग्रेज़ उसे नष्ट करना चाहते थे।

प्रश्न 3.

सर टामस 'हे' के मैना पर दया-भाव के क्या कारण थे?

उत्तर-

सर टामस स्वभाव से ही दयालु रहे होंगे। तभी तो वे उस किशोरी सुंदरी को देखते ही ठहर गए और उसके जीवन में रुचि लेने लगे।

दूसरा कारण यह रहा कि वे मैना को पहचान गए। मैना उनकी मृत बेटी मेरी की बचपन की सखी थी। तब 'हे' उनके घर भी आया करते थे। इन बातों ने 'हे' के दिल में मैना के प्रति ममता जगा दी।

तीसरे, मैना ने स्वयं अपनी करुणापूर्ण बातों से 'हे' के मन में करुणा जगा दी।

प्रश्न 4.

मैना की अंतिम इच्छा थी कि वह उस प्रासाद के ढेर पर बैठकर जी भरकर रो ले लेकिन पाषाण हृदय वाले जनाल ने किस भय से उसकी इच्छा पूर्ण न होने दी?

उत्तर-

जनरल आउटरम ने भगनावशिष्ट राज प्रासाद पर जी भर रो लेने संबंधी मैना की इच्छा इसलिए नहीं पूरी होने दी क्योंकि-

- वह अंग्रेज़ सरकार का जनरल था। वह अंग्रेज़ सरकार के प्रति कुछ ज्यादा ही वफादारी दिखा रहा था।
- मैना के प्रति सहानुभूति दिखाने पर उसे अंग्रेज़ सरकार दंडित कर सकती थी।
- मैना को छोड़ देने पर कुछ लोग पुनः विद्रोह कर सकते थे।
- जनरल पाषाणहृदयी और असंवेदनशील व्यक्ति था।

प्रश्न 5.

बालिका मैना के चरित्र की कौन-कौन सी विशेषताएँ आप अपनाना चाहेंगे और क्यों ?

उत्तर-

बालिका मैना के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ अपनाने योग्य हैं-

निडरता- बालिका मैना निडर बालिका थी। जब सेनापति 'हे' अपने सैनिकों के साथ उसके राजमहल को तोड़ने आया तो उसने निडर होकर उनका सामना किया। उसे अपने पकड़े जाने का डर था। फिर भी वह 'हे' के सामने आई। उसे राजमहल न तोड़ने की प्रार्थना की, तर्क दिए तथा उसके मन में करुणा जगाई।

प्रश्न 6.

'टाइम्स' पत्र ने 6 सितंबर को लिखा था- 'बड़े दुख का विषय है कि भारत सरकार आज तक उसे दर्दनाक नाना साहब को नहीं पकड़ सकी। इस वाक्य में भारत सरकार' से क्या आशय है?

उत्तर-

इस वाक्य में भारत सरकार से आशय है- पराधीन भारत में ब्रिटिश शासन के निर्देश पर चलने वाली वह सरकार जिसे अंग्रेज़ अधिकारी चलाते थे और भारतीयों पर अत्याचारपूर्ण व्यवहार करते थे।

## रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 7.

स्वाधीनता आंदोलन को आगे बढ़ाने में इस प्रकार के लेखन की क्या भूमिका रही होगी?

उत्तर-

स्वाधीनता आंदोलन को बढ़ाने में इस प्रकार के लेखों की भूमिका महत्वपूर्ण रही होगी। लोग जब अंग्रेजों के अत्याचारों को पढ़ते होंगे तो उनके विरुद्ध हो जाते होंगे। जब वे मैना जैसी निडर बालिका के निर्मम वध की बात सुनते होंगे तो उनका हृदय करुणा से भर उठता होगा। तब उनका मन त्याग, बलिदान और संघर्ष के लिए तैयार हो जाता होगा। इस प्रकार स्वाधीनता आंदोलन अपनी राह पर बढ़ता जाता होगा।

प्रश्न 8.

कल्पना कीजिए कि मैना के बलिदान की यह खबर आपको रेडियो पर प्रस्तुत करनी है। इन सूचनाओं के आधार पर आप एक रेडियो समाचार तैयार करें और कक्षा में भावपूर्ण शैली में पढ़ें।

उत्तर-

मैना के बलिदान संबंधी खबर पर आधारित एक रेडियो समाचार कल शाम 7:00 बजे कानपुर के किले में एक भयानक हत्याकांड हो गया जिससे मानवता कलंकित हो गई। यह कायरतापूर्ण कृत्य अंग्रेज सरकार द्वारा किया गया।

जैसा कि आप सब जानते होंगे कि कल आधी रात में नाना साहब की कन्या मैना को आउटरम ने उस समय गिरफ्तार कर लिया था जब वह अपने महल के अवशेष पर बैठी विलाप कर रही थी। आउटरम ने उसे गिरफ्तार करने से पहले हृदयहीनता का नमूना पेश किया और मैना को जी भर रोने की अनुमति भी नहीं दी। इससे उसकी इच्छा अधूरी रह गई। हमारे विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि आज रात में योजनाबद्ध ढंग से मैना को धधकती आग में झाँककर मार डाला गया। वहाँ उपस्थित लोगों ने जलती मैना को देवी मानकर प्रणाम किया।

प्रश्न 9.

इस पाठ में रिपोर्टाज के प्रारंभिक रूप की झलक मिलती है लेकिन आज अखबारों में अधिकांश खबरें रिपोर्टाज की शैली में लिखी जाती हैं। आप-

(क) कोई दो खबरों को किसी अखबार से काटकर अपनी कॉपी में चिपकाइए तथा कक्षा में पढ़कर सुनाइए।

(ख) अपने आसपास की किसी घटना का वर्णन रिपोर्टाज शैली में कीजिए।

उत्तर-

**(क) समाचार पत्रों से ली गईं दो खबरें**

**1. पूर्व उपराज्यपाल के कार्यकाल में प्रस्ताव बनाया गया था, विभिन्न एजेंसियों की आपसी खींचतान की वजह से योजना अटकी**

## **चांदनी चौक में ट्राम चलाने की योजना खटाई में पड़ी**

### **नई दिल्ली – जितेंद्र भारद्वाज**

चांदनी चौक में ट्राम चलाने की योजना सिविक एजेंसियों की खींचतान में फंस गई है। पूर्व उपराज्यपाल नजीब जंग के समय यह प्रोजेक्ट बना था। मेट्रो को इसकी नोडल एजेंसी बनाया गया था। परिवहन प्राधिकरण, पीडब्ल्यूडी और ट्रैफिक पुलिस इसमें सदस्य थे।

दिल्ली में वर्ष 1963 तक ट्राम चांदनी चौक की शान रही हैं। इसे फिर से चलाने के लिए वर्ष 2014 में तत्कालीन उपराज्यपाल नजीब जंग ने एक कमेटी बनाई थी। कमेटी ने रिपोर्ट दी थी कि फतेहपुरी मस्जिद से नेताजी सुभाष मार्ग और कौड़िया पुल से परेड ग्राउंड लालकिले तक ट्राम चलाई जा सकती है।

ट्राम वाले रूट पर सुबह आठ बजे से रात आठ बजे तक यहाँ कोई दूसरा वाहन नहीं चलेगा। मेट्रो-ट्रैफिक पुलिस के सूत्रों का कहना है कि फिलहाल यह योजना आगे नहीं बढ़ पा रही है। जिस एजेंसी को जो काम सौंपा गया, वह तय समये पर नहीं हुआ। एजेंसियों ने कुछ कामों को अधिकार क्षेत्र में नहीं होने की बात कहकर दूसरे के पाले में धकेल दिया।

### **पुरानी ट्राम**

- 1908 से 1963 तक ट्राम के रास्ते में जामा मस्जिद, चांदनी चौक और सदर बाजार का इलाका पड़ता था, छोड़े खींचते थे ट्राम।
- 1960 में सबसे छोटा टिकट आधा आना, सबसे बड़ा चार आना।
- 1889 में नासिक और 1895 में चेन्नई में ट्राम चली थी।
- 1873 में कोलकाता, 1864 मुंबई और 1915 में पटना में ट्राम चली।
- 1908 में दिल्ली में लॉर्ड हार्डिंग ने ट्राम शुरू की।

## **2. बदलाव का श्रेय शिक्षकों को : सीएम**

### **सम्मान**

### **नई दिल्ली – प्रमुख संवाददाता**

दो साल में दिल्ली सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में छोटे-छोटे बदलाव किए हैं। इन बदलावों से हुए सुधारों का श्रेय दिल्ली सरकार के शिक्षकों को जाता है। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने मंगलवार को शिक्षक दिवस पर आयोजित सम्मान समारोह में यह बात कही।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जो भी दिल्ली के शिक्षकों ने किया उसकी चर्चा दुनिया भर में हुई। सरकार ने अपने कार्यकाल में शिक्षकों को सम्मान देने की कोशिश की है। जैसा सम्मान शिक्षकों के लिए पुरानी परंपराओं में दिया जा रहा था। जो समाज अपने शिक्षक का सम्मान करता है। यह समाज भी आगे बढ़ता है। इस



समारोह में 91 शिक्षकों को सम्मानित किया गया। जिसमें 25 हजार रुपये, शाल व प्रशस्तिपत्र देकर सम्मानित किया गया।

मनीष सिसोदिया ने इस मौके पर कहा कि आज का दिन शिक्षकों का दिन है। आपके योगदान के सम्मान के लिए सरकार यहाँ उपस्थित है। उन्होंने कहा कि आप सब लोग इंसान व राष्ट्र बनाने के लिए काम कर रहे हैं। आज तन मन धन से शिक्षक काम कर रहे हैं। दो साल पहले तक जब भी सम्मान मिले तो यह सादा कार्यक्रम में नहीं भव्यता के साथ होना चाहिए। हर साल इस आयोजन को बड़ा किया जाए। आज करीब सवा लाख शिक्षक हैं, वे जबरदस्त भूमिका निभा रहे हैं। सरकार शिक्षा बजट बढ़ाने का श्रेय ले सकती है लेकिन काम शिक्षकों ने किया है। शिक्षकों के लिए आयोजित इस कार्यक्रम में विशेष बात यह थी कि यहाँ मंच का संचालन छात्रों को दिया गया था। विभिन्न स्कूलों के बच्चों को पहली बार मंच संचालन का मौका दिया गया।

### केजरीवाल बोले

- दिल्ली के शिक्षकों की चर्चा आज सारी दुनिया में हो रही है।
- त्यागराज स्टेडियम में आयोजित किया गया भव्य कार्यक्रम।

### (ख) अपने आसपास की एक घटना का रिपोर्टाज शैली में वर्णन-

#### रानीखेड़ा के लोग कचरे पर कुछ भी नहीं सुनेंगे

#### नई दिल्ली – प्रमुख संवाददाता

रानीखेड़ा गांव में कचरा डाले जाने के विरोध में ग्रामीण तीसरे दिन मंगलवार को भी डटे रहे। निगम के ट्रक कचरा डालने न आएँ, इसके लिए ग्रामीण रातभर पहरेदारी करते रहे। ग्रामीणों ने लिखित आश्वासन से पहले मौके से नहीं हटने की बात कही है।

गाजीपुर लैंडफिल साइट पर हुए हादसे के बाद से ही दिल्ली में हरदिन पैदा होने वाले कचरे का निष्पादन बड़ी समस्या के तौर पर सामने आया है। गाजीपुर में कचरा डालने पर रोक के बाद निगम की ओर से रानीखेड़ा गांव में राविवार को कचरा डालने का प्रयास किया गया था, लेकिन, ग्रामीणों ने कचरे के ट्रकों को वापस लौटा दिया। तब से ही ग्रामीण मौके पर जमे हुए हैं। दिन में महिलाएँ और बच्चे धरने पर बैठे रहे, जबकि रात के समय पुरुषों द्वारा पहरेदारी की जा रही है।

स्थानीय निवासी सतबीर डबास ने कहा कि जब तक रानीखेड़ा में कूड़ा नहीं डालने का लिखित आश्वासन उपराज्यपाल की ओर से नहीं दिया जाएगा, तब तक ग्रामीण मौके से नहीं हटेंगे। इसके लिए चाहे कुछ भी

करना पड़े।

हिंदुस्तान 6 सितंबर, 2017 से साभार

प्रश्न 10.

आप किसी ऐसे बालक/बालिका के बारे में एक अनुच्छेद लिखिए जिसने कोई बाहदुरी का काम किया हो।

उत्तर-

दीपावली नजदीक थी। धनतेरस वाले दिन हमारे एक जानकार सपरिवार हमसे मिलने घर आए थे।

दीपावली के आसपास

वैसे भी दुकानों पर और बाजारों में भीड़-भाड़ बढ़ जाती है। हमारे जानकार ने विचार किया कि यहाँ तक आए हैं तो दीपावली के लिए कुछ खरीददारी यहीं से करते चलें पर यह बात उन्होंने अपने तक ही सीमित रखा और पाँच-साढ़े पाँच बजे वे हमारे घर से निकले और बाजार चले गए। भीड़ होने के कारण वे अपनी पत्नी के साथ मोटरसाइकिल से धीरे-धीरे जा रहे थे। उनकी पत्नी का ध्यान आसपास की दुकानों पर रहा होगा तभी एक बीस-इक्कीस वर्षीय युवक ने उनके गले से चेन खींच ली। वह चेन लेकर भागने लगा तभी एक बारह-तेरह साल के लड़के ने उसे रोकना चाहा पर उसने लड़के को एक चाँटा मारा और कुछ ही दूर बाइक की ओर भागा। वहाँ उसका साथी बाइक स्टार्ट कर चुका था। वह बाजार की उल्टी दिशा में तेजी से बाइक दौड़ाकर गायब हो गया।

इधर हमारे जानकार ने जल्दी से अपनी बाइक खड़ी की। उन्होंने अपनी पत्नी को सांत्वना दी और देखा कि उनका गला चेन से एक दो जगह कट-सा गया था। उन्होंने तुरंत सौ नंबर पर फ़ोन किया। दस मिनट बाद पुलिस आई उनका बयान नोट किया तभी हमारे जानकार के पास वही बारह-तेरह वर्ष का बालक आया और कागज पर कुछ लिखा हुआ थमाकर चलता बना। हमारे जानकार ने देखा उस कागज पर उस बाइक का नंबर था जिस पर वह भागा था। पुलिस को बाइक का नंबर मिलते ही कार्यवाही में आसानी हुई। रात दस बजे तक चेन खींचने वाला और उसका साथी थाने में थे। अगले दिन पुलिस ने हमारे जानकार को थाने बुलाकर चेन लौटा दी। वे जानकार जब भी हमारे घर आते हैं, उस बालक के प्रति कृतज्ञता जताना नहीं भूलते।

## भाषा अध्ययन

प्रश्न 11.

भाषा और वर्तनी का स्वरूप बदलता रहता है। इस पाठ में हिंदी गद्य का प्रारंभिक रूप व्यक्त हुआ है जो लगभग 75-80 वर्ष पहले था। इस पाठ के किसी पसंदीदा अनुच्छेद को वर्तमान मानक हिंदी रूप में लिखिए।

उत्तर-

सेनापति ने दुःख प्रकट करते हुए कहा-“कर्तव्य के कारण मुझे यह मकान गिराना ही होगा।” इस पर उस बालिका ने अपना परिचय देते हुए कहा-“मैं जानती हूँ कि आप जनरल ‘हे’ हैं। आपकी प्रिय कन्या मेरी और मुझमें बहुत प्रेम था। कई वर्ष पूर्व मेरी मेरे पास बराबर आती थी और मुझे हृदय से चाहती थी। उस समय आप भी हमारे यहाँ आते थे और मुझे अपनी पुत्री के ही समान प्यार करते थे। मालूम होता है कि आप वे सब बातें भूल गए हैं। मेरी की मृत्यु से मैं बहुत दुःखी हुई थी। उसकी एक चिट्ठी मेरे पास अब तक है।”

### वर्तमान मानक हिंदी रूप

उसी दिन संध्या समय लार्ड केनिंग का एक तार आया, जिसका आशय इस प्रकार था-लंदन के मंत्रिमंडल का यह मत है कि नाना का स्मृति-चिह्न तक मिटा दिया जाए। इसलिए वहाँ की आज्ञा के विरुद्ध कुछ नहीं हो सकता। उसी क्षण क्रूर जनरल आउटरम की आज्ञा से नाना साहब के सुविशाल राज मंदिर पर तोप के गोले बरसने लगे। घंटे भर में वह महल मिट्टी में मिला दिया गया।

### पाठेतर सक्रियता

प्रश्न 12.

अपने साथियों के साथ मिलकर बहादुर बच्चों के बारे में जानकारी देने वाली पुस्तकों की सूची बनाइए।

उत्तर-

अपने विद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष की मदद से यह काम स्वयं करें।

प्रश्न 13.

इन पुस्तकों को पढ़िए. ‘भारतीय स्वाधीनता संग्राम में महिलाएँ’-राजम कृष्णन, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।

‘1857 की कहानियाँ’-ख्वाजा हसन निजामी, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।

उत्तर-

विद्यार्थी इन पुस्तकों को खोजें और स्वयं पढ़ें।

प्रश्न 14.

अपठित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

आजाद भारत में दुर्गा भाभी को उपेक्षा और आदर दोनों मिले। सरकारों ने उन्हें पैसों से तोलना चाहा। कई वर्ष पहले पंजाब में उनके सम्मान में आयोजित एक समारोह में तत्कालीन मुख्यमंत्री दरबारा सिंह ने

उन्हें 51 हजार रुपये भेंट किए। भाभी ने वे रुपये वहीं वापस कर दिए। कहा-“जब हम आज़ादी के लिए संघर्ष कर रहे थे, उस समय किसी व्यक्तिगत लाभ या उपलब्धि की अपेक्षा नहीं थी। केवल देश की स्वतंत्रता ही हमारा ध्येय था। उस ध्येय पथ पर हमारे कितने ही साथी अपना सर्वस्व निछावर कर गए, शहीद हो गए। मैं चाहती हूँ कि मुझे जो 51 हजार रुपये दिए गए हैं, उस धन से यहाँ शहीदों का एक बड़ा स्मारक बना दिया जाए, जिसमें क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास का अध्ययन और अध्यापन हो, क्योंकि देश की नई पीढ़ी को इसकी बहुत आवश्यकता है।”

मुझे याद आता है सन् 1937 का ज़माना, जब कुछ क्रांतिकारी साथियों ने गाज़ियाबाद तार भेजकर भाभी से चुनाव लड़ने की प्रार्थना की थी। भाभी ने तार से उत्तर दिया-‘चुनाव में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है। अतः लड़ने का प्रश्न ही नहीं उठता।’ मुल्क के स्वाधीन होने के बाद की राजनीति भाभी को कभी रास नहीं आई। अनेक शीर्ष नेताओं से निकट संपर्क होने के बाद भी वे संसदीय राजनीति से दूर ही बनी रहीं। शायद इसलिए अपने जीवन का शेष हिस्सा नई पीढ़ी के निर्माण के लिए अपने विद्यालय को उन्होंने समर्पित कर दिया।

1. स्वतंत्र भारत में दुर्गा भाभी का सम्मान किस प्रकार किया गया?
2. दुर्गा भाभी ने भेंट स्वरूप प्रदान किए गए रुपये लेने से इंकार क्यों कर दिया?
3. दुर्गा भाभी संसदीय राजनीति से दूर क्यों रहीं?
4. आज़ादी के बाद उन्होंने अपने को किस प्रकार व्यस्त रखा?
5. दुर्गा भाभी के व्यक्तित्व की कौन-सी विशेषता आप अपनाना चाहेंगे?

उत्तर-

1. कई वर्ष पहले उनके सम्मान में एक समारोह का आयोजन किया गया।
  - स्वतंत्र भारत में दुर्गा भाभी को दो तरह से सम्मानित किया गया
  - पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री दरबारा सिंह ने उन्हें 51000 रुपये भेंट किए।
2. दुर्गा भाभी ने भेंट स्वरूप प्रदान किए गए रुपये लेने से इसलिए इंकार कर दिया क्योंकि उन्होंने आज़ादी के लिए जो संघर्ष किया था, उसका मूल्य नहीं लेना चाहती थी।
3. दुर्गा भाभी संसदीय राजनीति से इसलिए दूर रहीं क्योंकि राजनीति में उनकी रुचि नहीं थी।
4. आजादी के बाद दुर्गा भाभी ने नई पीढ़ी के निर्माण के लिए एक स्कूल खोला और वे उसी में पूरी तरह व्यस्त हो गईं।
5. मैं दुर्गा भाभी के चरित्र से निम्नलिखित विशेषताएँ अपनाना चाहूँगा, जैसे-
  - निःस्वार्थ देश प्रेम

- नई पीढ़ी के चरित्र निर्माण में रुचि
- देशहित में त्याग
- दृढ़ निश्चय
- कर्म में विश्वास

## अन्य पाठेतर हल प्रश्न

### लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.

नाना साहब कौन थे?

उत्तर-

नाना साहब सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के प्रसिद्ध क्रांतिकारी थे। वे बिठूर के शासक थे। वहाँ उनका राजमहल था। उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध बगावत करते हुए कानपुर अनेक अंग्रेजों को मौत के घाट उतार दिया था। अपनी मातृभूमि को आजाद करवाने के लिए उन्होंने हर संभव प्रयास किया।

प्रश्न 2.

अंग्रेजों को मैना पर अपना क्रोध उतारने का अवसर मिल गया?

उत्तर-

कानपुर में अंग्रेजों के विरुद्ध हथियार उठाने और अनेक अंग्रेजों को मौत के घाट उतारने के बाद नाना साहब अंग्रेजी सेना का मुकाबला न कर सके और कानपुर से भागने लगे। वे जल्दी में अपनी पुत्री मैना को साथ न ले जा सके। इससे अंग्रेजों को मैना पर क्रोध उतारने का मौका मिल गया।

प्रश्न 3.

अंग्रेज बिठूर की ओर क्यों गए?

उत्तर-

अंग्रेज बिठूर की ओर इसलिए गए क्योंकि वे कानपुर में नाना साहब को पकड़ न सके। नाना साहब अपने बिठूर स्थित राजमहल में हो सकते हैं, इसलिए वे बिठूर की ओर चले गए। वे नाना साहब को पकड़ना चाहते थे।

प्रश्न 4.

बिठूर पहुँचकर अंग्रेज सैनिक दल ने क्या किया?

उत्तर-

बिठूर पहुँचकर अंग्रेज सैनिक दल ने-

- नाना साहब का राजमहल लूट लिया।
- नाना साहब का महल ध्वस्त करने के लिए तोपें लगा दिया।

प्रश्न 5.

मैना कौन थी? उसे देखकर अंग्रेज सेनापति को आश्चर्य क्यों हुआ?

उत्तर-

मैना नानासाहब की पुत्री थी। उसे देखकर अंग्रेज सेनापति को इसलिए आश्चर्य हुआ क्योंकि जब सैनिक दल महल में लूट-पाट कर रहा था तब वह बालिका कहीं दिखाई न दी। अब उसके अचानक प्रकट होने से उन्हें आश्चर्य हो रहा था।

प्रश्न 6.

मैना ने सेनापति से क्या निवेदन किया और क्यों?

उत्तर-

मैना ने सेनापति से महल नष्ट न करने और उसकी रक्षा करने का निवेदन किया क्योंकि यह महल उसे अत्यंत प्रिय था। इसके अलावा वह इसी महल में पली-बढ़ी थी।

प्रश्न 7.

सेनापति 'हे' मैना का निवेदन क्यों स्वीकार नहीं कर पा रहे थे?

उत्तर-

मैना को अपनी पुत्री 'मैरी' की सहचरी जानकर सेनापति 'हे' के मन में सहानुभूति उत्पन्न हुई। इसके बाद भी वे मैना को निवेदन इसलिए स्वीकार नहीं कर पा रहे थे क्योंकि वे अंग्रेज सरकार के कर्मचारी थे। उनका आदेश मानना उनका पहला कर्तव्य था।

प्रश्न 8.

आउटरम कौन था? वह सेनापति 'हे' पर क्यों बिगड़ उठा?

उत्तर-

आउटरम अंग्रेजी सेना का प्रधान सेनापति था। वह सेनापति 'हे' पर इसलिए बिगड़ उठा क्योंकि सेनापति

‘हे’ ने नाना साहब के महल पर तोप से गोले बरसाकर अब तक नष्ट नहीं किया था। ‘हे’ द्वारा कर्तव्य की अवहेलना करते देख वह नाराज हो गया।

प्रश्न 9.

सेनापति ‘हे’ दुखी होकर नाना साहब के राजमहल से क्यों चले गए?

उत्तर-

सेनापति ‘हे’ मैना के निवेदन पर उस महल को बचाने के लिए सहमत हो गए थे। उन्होंने इसके लिए जब प्रधान सेनापति आउटरम से विनयपूर्वक कहा तो आउटरम किसी भी तरह न माना। अपनी इस तरह उपेक्षा देखकर ‘हे’ दुखी होकर वहाँ से चले गए।

प्रश्न 10.

सेनापति ‘हे’ के जाते ही अंग्रेज़ सैनिकों ने क्या-क्या किया?

उत्तर-

सेनापति ‘हे’ के जाते ही अंग्रेज़ सैनिकों ने-

- नाना साहब के महल को घेर लिया।
- वे फाटक तोड़कर हर जगह मैना को ढूँढ़ने लगे ताकि मैना को पकड़ सकें।

प्रश्न 11.

आउटरम सेनापति ‘हे’ का अनुरोध स्वीकार नहीं कर पा रहा था, क्यों?

उत्तर-

अंग्रेजी सेना का प्रधान सेनापति आउटरम सेनापति ‘हे’ का अनुरोध इसलिए स्वीकार नहीं कर पा रहा था क्योंकि गवर्नर जनरल की आज्ञा के बिना वह कुछ नहीं कर सकता था। वह सेनापति ‘हे’ की विनती स्वीकार कर अंग्रेजी सरकार का कोप भोजन नहीं बनना चाहता था।

प्रश्न 12.

‘मैना अपने महल से बहुत लगाव रखती थी’ सप्रमाण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

मैना अपने महल से बहुत लगाव रखती थी। इसका प्रमाण यह है कि-

- उसने निर्भीकतापूर्वक सेनापति ‘हे’ से महल की रक्षा करने की प्रार्थना की।
- अंग्रेजों द्वारा नष्ट किए गए प्रासाद के अवशेष पर कुछ देर रोना चाहती थी।

प्रश्न 13.

नाना साहब के प्रासाद के विषय में भेजे गए केनिंग के तार का आशय क्या था?

उत्तर-

नाना साहब के राज प्रासाद के बारे में केनिंग ने जो तार भेजा था, उसका आशय था-लंदन के मंत्रिमंडल का यह मत था कि अंग्रेज नर-नारियों की हत्या करने वाले नाना साहब के स्मृति-चिह्न तक को मिटा दिया जाए।

प्रश्न 14.

अंग्रेज़ सैनिक नाना साहब के प्रासाद के भग्नावशेष पर क्यों गए?

उत्तर-

अंग्रेज सैनिक नाना साहब के प्रासाद के भग्नावशेष पर इसलिए गए क्योंकि उस भग्नावशेष पर रात्रि में रोने की आवाज़ आ रही थी। जिस भग्नावशेष की वे रक्षा कर रहे हैं, उस पर कौन रो रहा है, यही पता करने वे वहाँ पहुँचे।

प्रश्न 15.

‘मैरी’ कौन थी? मैना से उसकी मित्रता कैसे हुई ?

उत्तर-

‘मैरी’ अंग्रेज सरकार के सेनापति ‘हे’ की पुत्री थी। मैरी और मैना दोनों हम उम्र थीं। पहले सेनापति ‘हे’ मैना के घर मैरी को लेकर आया करते थे। मैरी और मैना के इस तरह मिलने से दोनों में मित्रता हो गई।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1.

अंग्रेजों ने नाना साहब के लिए किस विशेषण का प्रयोग किया है और क्यों?

उत्तर-

अंग्रेजों ने नाना साहब के लिए ‘दुर्दीत’ विशेषण का प्रयोग किया है। इसका कारण यह है कि-

- नाना साहब ने अंग्रेजों की अधीनता न स्वीकार कर उनसे डरकर मुकाबला किया।
- उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध हथियार उठाकर बगावत कर दी थी।
- उन्होंने कानपुर में अनेक अंग्रेजों को मौत के घाट उतार दिया था।
- अंग्रेजों द्वारा एड़ी-चोटी का जोर लगाने के बाद भी नाना साहब उन्हें चकमा देकर भाग गए। अब वे अंग्रेजों की पकड़ में नहीं आ रहे थे।



प्रश्न 2.

उन कारणों का उल्लेख कीजिए जिनके कारण सेनापति 'हे' महल को बचाने के लिए तैयार हो गया।

उत्तर-

सेनापति 'हे' को नाना साहब का बिठूर स्थित राज प्रासाद गिराने का कार्य सौंपा गया। उन्होंने महल के आगे तोप लगवा दिया। इसके बाद भी वे महल बचाने के लिए तैयार हो गए, क्योंकि-

- महल बचाने का अनुरोध करने वाली बालिका मैना उनकी मृत पुत्री की हम उम्र थी।
- मैना महल बचाने का तर्क देती हुई विनम्रतापूर्वक बातें कर रही थी।
- मैना के बारे में पता चला कि वह उनकी मृत पुत्री की सहेली है।
- वे मैना की इच्छाओं एवं भावनाओं का आदर कर रहे थे।

प्रश्न 3.

मैना ने सेनापति 'हे' को अपना परिचय किस तरह दिया और क्यों?

उत्तर-

मैना ने सेनापति 'हे' को अपना परिचय देते हुए कहा, "मैं जानती हूँ कि आप जनरल 'हे' हैं। आपकी प्यारी पुत्री मैरी मैं और मुझमें बहुत प्रेम संबंध था। कई वर्ष पूर्व मैरी मेरे पास बराबर आती थी और मुझे हृदय से चाहती थी। उस समय आप भी हमारे घर आते थे और मुझे अपनी पुत्री के समान प्यार करते थे। मैरी की मृत्यु से मुझे बड़ा दुख हुआ। उसकी एक चिट्ठी अब तक मेरे पास है।" मैना ने ऐसा इसलिए किया ताकि 'हे' महल गिराने के विषय में सहानुभूतिपूर्वक विचार करें।

प्रश्न 4.

6 सितंबर को 'टाइम्स' पत्र में छपे लेख की मुख्य बातें क्या थीं?

उत्तर-

6 सितंबर को 'टाइम्स' पत्र में छपे लेख की मुख्य बातें थीं-

- भारत सरकार (तत्कालीन भारत में अंग्रेजी सरकार) द्वारा नाना साहब को न पकड़ पाने पर दुख प्रकट करना।
- शरीर में रक्त रहते कानपुर हत्याकांड का बदला लेना न भूलना।
- टामस 'हे' के चरित्र पर सवालिया निशान लगाना।
- टामस पर कर्तव्य की अवहेलना का दोष मढ़ना।
- नाना के पुत्र, कन्या या निकट संबंधी को जिंदा न छोड़ने का आदेश।
- टामस 'हे' के सामने ही मैना को फाँसी पर लटका दिए जाने का आदेश।

# प्रेमचंद के फटे जूते

## पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1.

हरिशंकर परसाई ने प्रेमचंद का जो शब्दचित्र हमारे सामने प्रस्तुत किया है उससे प्रेमचंद के चित्र की विशेषताएँ उभरकर आती हैं?

उत्तर-

‘प्रेमचंद के फटे जूते’ नामक व्यंग्य को पढ़कर प्रेमचंद के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएँ उभरकर सामने आती हैं-

### संघर्षशील लेखक-

प्रेमचंद आजीवन संघर्ष करते रहे। उन्होंने मार्ग में आने वाली चट्टानों को ठोकरें मारीं। अगल-बगल के रास्ते नहीं खोजे। समझौते नहीं किए। लेखक के शब्दों में “तुम किसी सख्त चीज़ को ठोकर मारते रहे हो। ठोकर मार-मारकर अपना जूता फाड़ लिया।”

### अपराजेय व्यक्तित्व-

प्रेमचंद का व्यक्तित्व अपराजेय था। उन्होंने कष्ट सहकर भी कभी हार नहीं मानी। यदि वे मनचाहा परिवर्तन नहीं कर पाए, तो कम-से-कम कमजोरियों पर हँसे तो सही। उन्होंने निराश-हताश जीने की बजाय मुसकान बनाए रखी। उनकी नज़रों में तीखा व्यंग्य और आत्मविश्वास था। लेखक के शब्दों में— “यह कैसा आदमी है, जो खुद तो फटे जूते पहने फोटो खिंचा रहा है, पर किसी पर हँस भी रहा है।”

### कष्टग्रस्त जीवन-

प्रेमचंद जीवन-भर आर्थिक संकट झेलते रहे। उन्होंने गरीबी को सहर्ष स्वीकार किया। वे बहुत सीधे-सादे वस्त्र पहनते थे। उनके पास पहनने को ठीक-से जूते भी नहीं थे। फिर भी वे हीनता से पीड़ित नहीं थे। उन्होंने फोटो खिंचवाने में भी अपनी सहजता बनाए रखी।

### सहजता-

प्रेमचंद अंदर-बाहर से एक थे। लेखक के शब्दों में- "इस आदमी की अलग-अलग पोशाकें नहीं होंगी-इसमें पोशाकें बदलने का गुण नहीं है।"

### मर्यादित जीवन-

प्रेमचंद ने जीवन-भर मानवीय मर्यादाओं को निभाया। उन्होंने अपने नेम-धरम को, अर्थात् लेखकीय गरिमा को बनाए रखा। वे व्यक्ति के रूप में तथा लेखक के रूप में श्रेष्ठ आचरण करते रहे।

### प्रश्न 2.

सही कथन के सामने (✓) का निशान लगाइए-

1. बाएँ पाँव का जूता ठीक है मगर दाहिने जूते में बड़ा छेद हो गया है जिसमें से अँगुली बाहर निकल आई है।
2. लोग तो इत्र चुपड़कर फ़ोटो खिंचाते हैं जिससे फ़ोटो में खुशबू आ जाए।
3. तुम्हारी यह व्यंग्य मुसकान मेरे हौसले बढ़ाती है।
4. जिसे तुम घृणित समझते हो, उसकी तरफ अँगूठे से इशारा करते हो?

### उत्तर-

1. X
2. ✓
3. X
4. X

### प्रश्न 3.

नीचे दी गई पंक्तियों में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए-

(क) जूता हमेशा टोपी से कीमती रहा है। अब तो जूते की कीमत और बढ़ गई है और एक जूते पर पचीसों टोपियाँ न्योछावर होती हैं।

(ख) तुम परदे का महत्त्व ही नहीं जानते, हम परदे पर कुरबान हो रहे हैं।

(ग) जिसे तुम घृणित समझते हो, उसकी तरफ हाथ की नहीं, पाँव की अँगुली से इशारा करते हो?

### उत्तर-

(क) जीवन में यह विडंबना है कि जिसका स्थान पाँव में हैं, अर्थात् नीचे है, उसे अधिक महत्वपूर्ण माना जाता रहा है। जिसका स्थान ऊँचा है, जो सिर

पर बिठाने योग्य है, उसे कम सम्मान मिलता रहा है। आजकल तो जूतों का अर्थात् धनवानों का मान-सम्मान और भी अधिक बढ़ गया है। एक धनवान पर पच्चीसों गुणी लोग न्योछावर होते हैं। गुणी लोग भी धनवानों की जी-हुजूरी करते नजर आते हैं।

**(ख)** प्रेमचंद ने कभी पर्दे को अर्थात् लुकाव-छिपाव को महत्त्व नहीं दिया। उन्होंने वास्तविकता को कभी टंकने का प्रयत्न नहीं किया। वे इसी में संतुष्ट थे कि उनके पास छिपाने-योग्य कुछ नहीं था। वे अंदर-बाहर से एक थे। यहाँ तक कि उनका पहनावा भी अलग-अलग न था।

लेखक अपनी तथा अपने युग की मनोभावना पर व्यंग्य करता है कि हम पर्दा रखने को बड़ा गुण मानते हैं। जो व्यक्ति अपने कष्टों को छिपाकर समाज के सामने सुखी होने का ढोंग करता है, हम उसी को महान मानते हैं। जो अपने दोषों को छिपाकर स्वयं को महान सिद्ध करता है, हम उसी को श्रेष्ठ मानते हैं।

**(ग)** लेखक कहता है-प्रेमचंद ने समाज में जिसे भी घृणा-योग्य समझा, उसकी ओर हाथ की अँगुली से नहीं, बल्कि अपने पाँव की अँगुली से इशारा किया। अर्थात् उसे अपनी ठोकरों पर रखा, अपने जूते की नोक पर रखा, उसके विरुद्ध संघर्ष किए रखा।

प्रश्न 4.

पाठ में एक जगह पर लेखक सोचता है कि 'फोटो खिंचाने की अगर यह पोशाक है तो पहनने की कैसी होगी?' लेकिन अगले ही पल वह विचार बदलता है कि नहीं, इस आदमी की अलग-अलग पोशाकें नहीं होंगी।' आपके अनुसार इस संदर्भ में प्रेमचंद के बारे में लेखक के विचार बदलने की क्या वजहें हो सकती हैं?

उत्तर

मेरे विचार से प्रेमचंद के बारे में लेखक का विचार यह रहा होगा कि समाज की परंपरा-सी है कि वह अच्छे अवसरों पर पहनने के लिए अपने वे कपड़े अलग रखता है, जिन्हें वह अच्छा समझता है। प्रेमचंद के कपड़े ऐसे न थे जो फोटो खिंचाने लायक होते। ऐसे में घर पहनने वाले कपड़े और भी खराब होते। लेखक को तुरंत ही ध्यान आता है कि प्रेमचंद सादगी पसंद और आडंबर तथा दिखावे से दूर रहने वाले व्यक्ति हैं। उनका रहन-सहन दूसरों से अलग है, इसलिए उसने टिप्पणी बदल दी।

प्रश्न 5.

आपने यह व्यंग्य पढ़ा। इसे पढ़कर आपको लेखक की कौन-सी बातें आकर्षित करती हैं?

उत्तर-

मुझे इस व्यंग्य की सबसे आकर्षक बात लगती है-विस्तारण शैली। लेखक एक संदर्भ से दूसरे संदर्भ की ओर बढ़ता चला जाता है। वह बूंद में समुद्र खोजने का प्रयत्न करता है। जैसे बीज में से क्रमशः अंकुर का, फिर पल्लव का, फिर पौधे और तने का; तथा अंत में फूल-फल का विकास होता चला जाता है, उसी प्रकार

इस निबंध में प्रेमचंद के फटे जूते से बात शुरू होती है। वह बात खुलते-खुलते प्रेमचंद के पूरे व्यक्तित्व को उद्घाटित कर देती है। बात से बात निकालने की यह व्यंग्य शैली बहुत आकर्षक बन पड़ी है।

प्रश्न 6.

पाठ में 'टीले' शब्द का प्रयोग किन संदर्भों को इंगित करने के लिए किया गया होगा?

उत्तर-

टीला शब्द 'राह' आनेवाली बाधा का प्रतीक है। जिस तरह चलते-चलते रास्ते में टीला आ जाने पर व्यक्ति को उसे पार करने के लिए विशेष परिश्रम करते हुए सावधानी से आगे बढ़ना पड़ता है उसी प्रकार सामाजिक विषमता, छुआछूत, गरीबी, निरक्षरता अंधविश्वास आदि भी मनुष्य की उन्नति में बाधक बनती है। इन्हीं बुराइयों के संदर्भ में 'टीले' शब्द का प्रयोग हुआ है। रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 7.

प्रेमचंद के फटे जूते को आधार बनाकर परसाई जी ने यह व्यंग्य लिखा है। आप भी किसी व्यक्ति की पोशाक को आधार बनाकर एक व्यंग्य लिखिए।

उत्तर-

मेरे हाथ में मेरे जिस मित्र का हाथ है, उसकी एक चीज़ का मैं हमेशा से कायल हूँ। वह है उसकी टाई की गाँठ। ऐसी साफ-सुथरी गाँठ आपके देखने में नहीं आई होगी। लगता है, जैसे जन्मजात ऐसी ही हो। कोई सिलवट नहीं, कोई बिखरावट नहीं। ऐसा नहीं है कि वे यह टाई सूट के साथ पहनते हों। गर्मियों में कमीज के साथ भी वे टाई पहनते हैं। तब भी टाई की गाँठ इसी तरह रहती है।

सच बताऊँ! मुझे एक भी ऐसा दृश्य याद नहीं आता, जब मैंने उन्हें टाई के बिना देखा हो। हाँ, एक बार मैं सुबह-सुबह उनके घर चला गया था। उस समय भी उन्होंने मुझे 45 मिनट प्रतीक्षा कराई। जब ड्राइंग रूम में आए तो टाई लगाए हुए थे। गाँठ तब भी वैसी थी, जैसे जन्मजात हो।

मैं सोचता हूँ इन्हें गाँठ लगाने का इतना शौक क्यों है? शायद इसलिए कि वे बिखराव को नहीं, गठन को पसंद करते हैं। इसलिए जब भी बोलते हैं, सँभलकर बोलते हैं। मैंने आज तक उन्हें व्यर्थ की गप्पें लड़ाते नहीं देखी। चुटकले सुनाते नहीं देखा। सुनाते क्या, चुटकलों पर हँसते भी नहीं देखा। यदि कोई उनके सामने कोई चुटकले पर हँस दे तो वे उसे 'बेहूदा' या 'बेशऊर' कहकर घंटों तक अपना मुँह बिगाड़े रहते हैं।

उनका एक ही सिद्धांत है-बोलो, तो ढंग का बोलो। वरना चुप रहो। ऐसा न समझिए, कि वे अकसर चुप रहते हैं। नहीं, वे अकसर बोलते पाए जाते हैं। और जब भी बोलते हैं-किसी-न-किसी राष्ट्रीय समस्या पर चिंता प्रकट करते पाए जाते हैं। उनका व्यक्तित्व गंभीर है। यदि कोई उनकी बात न सुन रहा हो तो वे उस

पर व्यंग्य कसने लगते हैं। और अगर कोई और बीच में बोलना शुरू कर दे तो उसकी ओर से मुँह मोड़कर उबासी लेने लगते हैं।

मेरे टाई वाले मित्र की एक खूबी यह भी है कि वे हर किसी के गिरेबान में झाँकते हैं। उनकी एक-से-एक बेहूदी बात को बतंगड़ बनाकर पेश करते हैं। पर अपने गिरेबान में उन्होंने टाई बाँध रखी है, किसी को झाँकने नहीं देते। पिछले दिनों उन्हें कोई सदमा लगा। वे पागल हो गए। पेट ऐसे निकल आया जैसे दस बच्चे एक साथ प्रसव करेंगे। लोगों को उनके गिरेबान में न सही, बाहरी व्यक्तित्व में झाँकने का मौका मिल गया। परंतु तब वे छुट्टियाँ ले गए। तब तक वापस नहीं आए, जब तक उनकी देह वापस अपनी औकात पर न लौट आई।

सच बात तो यह है कि मेरे इस मित्र के पूरे जीवन में गाँठें ही गाँठें हैं। अपने बड़े होने की गाँठ। टाई तो बस ऊपरी गाँठ है। भीतर कितनी गाँठें हैं, यह उनकी पत्नी से हमने जाना। वे भी उनसे इतना डरती हैं जितना कि चपड़ासी साहब से। इसलिए बेचारी तभी हँसती हैं, जब वे चाहते हैं।

प्रश्न 8.

आपकी दृष्टि में वेश-भूषा के प्रति लोगों की सोच में आज क्या परिवर्तन आया है?

उत्तर-

वेशभूषा के प्रति लोगों की सोच में बहुत बदलाव आया है। लोग वेशभूषा को सामाजिक प्रतिष्ठा का सूचक मानने लगे हैं। लोग उस व्यक्ति को ज्यादा मान-सम्मान और आदर देने लगे हैं जिसकी वेशभूषा अच्छी होती है। वेशभूषा से ही व्यक्ति का दूसरों पर पहला पड़ता है। हमारे विचारों का प्रभाव तो बाद में पड़ता है। आज किसी अच्छी-सी पार्टी में कोई धोती-कुरता पहनकर जाए तो उसे पिछड़ा समझा जाता है। इसी प्रकार कार्यालयों के कर्मचारी गण हमारी वेशभूषा के अनुरूप व्यवहार करते हैं। यही कारण है कि लोगों विशेषकर युवाओं में आधुनिक बनने की होड़ लगी है।

## भाषा अध्ययन

प्रश्न 9.

पाठ में आए मुहावरे छाँटिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

उत्तर-

- **हौसला पस्त करना – उत्साह नष्ट करना।**

**वाक्य –** अनिल कुंबले की फिरकी गेंदों ने श्रीलंका के खिलाड़ियों के हौसले पस्त कर दिए।

- **ठोकर मारना** – चोट करना।  
वाक्य – प्रेमचंद ने राह के संकटों पर **खूब ठोकरें मारी**।
- **टीला खड़ा होना** – बाधाएँ आना।।  
वाक्य – जीवन जीना सरल नहीं है। यहाँ पग-पग पर **टीले खड़े हैं**।
- **पहाड़ फोड़ना** – बाधाएँ नष्ट करना।  
वाक्य – प्रेमचंद उन संघर्षशील लेखकों में से थे जिन्होंने **पहाड़ फोड़ना** सीखा था, बचना नहीं।
- **जंजीर होना** – बंधन होना।  
वाक्य – स्वतंत्रता से जीने वाले पथ की सब **जंजीरें तोड़कर** आगे बढ़ते हैं।

प्रश्न 10.

प्रेमचंद के व्यक्तित्व को उभारने के लिए लेखक ने जिन विशेषणों का उपयोग किया है उनकी सूची बनाइए।

उत्तर-

प्रेमचंद का व्यक्तित्व उभारने के लिए लेखक ने जिन विशेषणों का प्रयोग किया है, वे हैं-

- जनता के लेखक
- महान कथाकार
- साहित्यिक पुरखे
- युग प्रवर्तक
- उपन्यास-सम्राट

**पाठेतर सक्रियता**

प्रश्न 11.

महात्मा गांधी भी अपनी वेशभूषा के प्रति एक अलग सोच रखते थे, इसके पीछे क्या कारण रहे होंगे, पता लगाइए।

उत्तर-

छात्र महात्मा गांधी की जीवनी पढ़कर स्वयं पता लगाएँ।

प्रश्न 12.

महादेवी वर्मा ने 'राजेंद्र बाबू' नामक संस्मरण में पूर्व राष्ट्रपति डा. राजेंद्र प्रसाद का कुछ इसी प्रकार चित्रण किया गया है, उसे पढ़िए।

उत्तर-

छात्र 'राजेंद्र बाबू' संस्मरण पुस्तकालय से लेकर पढ़ें।

प्रश्न 13.

अमृतराय लिखित प्रेमचंद की जीवनी 'प्रेमचंद-कलम का सिपाही' पुस्तक पढ़िए।

उत्तर-

छात्र प्रेमचंद की जीवनी स्वयं पढ़ें।

## अन्य पाठेतर हल प्रश्न

### लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.

लेखक की दृष्टि प्रेमचंद के जूते पर क्यों अटक गई?

उत्तर-

लेखक ने देखा कि प्रेमचंद ने जिस जूते को पहनकर फ़ोटो खिंचाया है, उसमें बड़ा-सा छेद हो गया है। इसमें से प्रेमचंद की अँगुली बाहर निकल आई है। प्रेमचंद ने इस फटे जूते को ढंकने का प्रयास भी नहीं किया।

प्रश्न 2.

फ़ोटो खिंचाने की अगर यह पोशाक है तो पहनने की कैसी होगी? के आधार पर प्रेमचंद की वेश-भूषा के बारे में लिखिए।

उत्तर-

प्रेमचंद ने मोटे कपड़े का कुरता-धोती पहन रखा था। उनके सिर पर वैसी ही टोपी थी। उनके फटे जूते से अँगुली दिख रही थी। ऐसी ही अत्यंत साधारण वेश-भूषा में उन्होंने फ़ोटो खिंचा रखा था।

प्रश्न 3.

प्रेमचंद ने अपने फटे जूते को ढंकने का प्रयास क्यों नहीं किया होगा?

उत्तर-

प्रेमचंद दिखावा एवं आडंबर से दूर रहने वाले व्यक्ति थे। उन्हें सादगीपूर्ण जीवन पसंद था। वे जैसा



वास्तव में थे, वैसा ही दिखना चाहते थे, इसलिए प्रेमचंद ने अपने फटे जूते को छिपाने का प्रयास नहीं किया गया।

प्रश्न 4.

प्रेमचंद के चेहरे पर कैसी मुसकान थी और क्यों?

उत्तर-

प्रेमचंद के चेहरे पर अधूरी मुसकान थी। इसका कारण यह था कि प्रेमचंद महान साहित्यकार होकर भी अभावग्रस्त जिंदगी जी रहे थे। अभावों से उनकी मुसकान खो सी गई थी। फोटोग्राफर के कहने पर भी वे ठीक से जल्दी से मुसकरा न पाए और मुसकान अधूरी रह गई।

प्रश्न 5.

‘मगर यह कितनी बड़ी ट्रेजडी है’, लेखिका ने ऐसा किस संदर्भ में कहा है?

उत्तर-

लेखक ने देखा कि ‘युग प्रवर्तक’, ‘उपन्यास सम्राट’ जैसे भारी भरकम विशेषणों से विभूषित साहित्यकार के पास फोटो खिंचाने के लिए भी अच्छे जूते नहीं होने को बड़ी ‘ट्रेजडी’ कहा है। उसने महान साहित्यकार की अभावग्रस्तता के संदर्भ में ऐसा कहा है।

प्रश्न 6.

‘जूता हमेशा कीमती रहा है’-ऐसा कहकर लेखक ने समाज की किस विसंगति पर प्रकाश डाला है?

उत्तर-

जूता ‘धन और बल’ का प्रतीक है। जूता समाज में सदा से ही आदर पाता आया है। अर्थात् गुणवान व्यक्तियों को भी धनवानों के सामने कमतर आंका गया है। धनवानों ने ज्ञानी व्यक्तियों को भी झुकने पर विवश किया है। यह समाज की विसंगति ही है।

प्रश्न 7.

लेखक अपने जूते को अच्छा नहीं मानता वह अच्छा दिखता है, क्यों?

उत्तर-

लेखक का जूता ऊपर से अच्छा दिखता है पर अँगूठे के नीचे तला फट गया है। उसका अँगूठा जमीन से रगड़ खाता है। और पैनी मिट्टी से रगड़कर लहलुहान हो जाता है। ऐसे तो एक दिन पंजा ही छिल जाएगा इसलिए वह अपने जूते को अच्छा नहीं मानता है।

प्रश्न 8.

प्रेमचंद का जूता फटने के प्रति लेखक ने क्या-क्या आशंका प्रकट की है?

उत्तर-

प्रेमचंद का जूता फटने के प्रति लेखक ने दो आशंकाएँ प्रकट की हैं-

- बनिए के तगादे से बचने के लिए मील-दो मील का चक्कर प्रतिदिन लगाकर घर पहुँचना।
- सदियों से परत दर परत जमी किसी चीज़ पर ढोकर मार-मारकर जूता फाड़ लेना।

प्रश्न 9.

लेखक द्वारा कुंभनदास का उदाहरण किस संदर्भ में दिया गया है?

उत्तर-

लेखक का मानना है कि चक्कर लगाने से जूता फटता नहीं, घिस जाता है। इसकी पुष्टि के लिए ही उन्होंने कुंभ दास का उदाहरण दिया है। कुंभनदास का जूता भी फतेहपुर सीकरी आते-जाते घिस गया था।

प्रश्न 10.

प्रेमचंद ऐसी वेश-भूषा में फ़ोटो खिंचाने को क्यों तैयार हो गए होंगे? पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर-

प्रेमचंद मोटे कपड़े का कुरता-धोती और टोपी पहने फ़ोटो खिंचाने को इसलिए तैयार हो गए होंगे, शायद उनकी पत्नी ने आग्रह किया होगा जिसे वे टाल न पाए होंगे और 'अच्छा, चल भई' कहकर पत्नी के साथ फोटो खिंचाने बैठ गए होंगे।

प्रश्न 11.

यदि अन्य लोगों की तरह प्रेमचंद भी फ़ोटो का महत्व समझते तो क्या करते?

उत्तर-

यदि औरों की तरह प्रेमचंद भी फ़ोटो का महत्व समझते तो वे इस तरह के अत्यंत साधारण कपड़े और फटा जूता पहनकर फ़ोटो न खिंचाते। वे भी दूसरों की तरह फ़ोटो खिंचाने के लिए औरों से कपड़े-जूते आदि उधार माँग लेते।

प्रश्न 12.

लेखक ने सदियों से परत-दर-परत' कहकर किस ओर इशारा किया है?

उत्तर

लेखक ने 'सदियों से जमी परत पर परत' कहकर समाज में फैली उन कुरीतियों, रूढ़ियों और बुराइयों की

और संकेत किया है जो समाज में पुराने समय से चली आ रही हैं और लोग बिना सोचे-समझे इन्हें अपनाए हुए हैं। इनकी जड़े समाज में इतनी गहराई से जम चुकी हैं कि ये सरलता से दूर नहीं की जा सकती।

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.

‘प्रेमचंद के फटे जूते’ पाठ के आधार पर प्रेमचंद की वेशभूषा एवं उनकी स्वाभाविक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-

‘प्रेमचंद के फटे जूते’ पाठ से पता चलता है कि उच्च कोटि को साहित्यकार होने के बाद भी प्रेमचंद साधारण-सा जीवन “: “बिता रहे थे। वे मोटे कपड़े का कुरता-धोती और टोपी पहनते थे। उनके जूतों के बंद बेतरतीब बँधे रहते थे। इसके बाद भी प्रेमचंद को दिखावा एवं आडंबर से परहेज था। वे जिस हाल में थे, उसी में खुश थे और उसी रूप में दिखने में उन्हें कोई शर्म नहीं आती थी। वे अपनी कमियों और कमजोरियों को छिपाना नहीं जानते थे।

प्रश्न 2.

लेखक ने प्रेमचंद को जनता के लेखक’ कहकर उनकी किस विशेषता को बताना चाहा है?

उत्तर-

प्रेमचंद अपने युग के महान कथाकार और उपन्यासकार थे। उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी न होने से उन्होंने खुद गरीबी एवं दुख को अत्यंत निकट से देखा था। इसके अलावा प्रेमचंद पराधीन भारत में भारतीय किसानों और मजदूरों के प्रति अंग्रेजों द्वारा किए गए अत्याचार को देखा था। वे समाज में व्याप्त रूढ़ियों, कुरीतियों और धार्मिक बुराइयों में फंसे लोगों को देख रहे थे। इन्हीं बातों को उन्होंने अपनी कृतियों का विषय बनाया है। ‘पूँस की रात’ में हलकू की समस्या, ‘गोदान’ .. में होरी की दुर्दशा, ‘मंत्र’ में डाक्टर चट्ठा की खेलप्रियता से सुजानभगत के बेटे की मृत्यु आदि का सजीव चित्रण करके जन सामान्य के दुख को मुखरित किया है। लेखक ने ‘जनता का लेखक’ कहकर जनसाधारण के प्रति उनके लगाव को बताना चाहा है।

प्रश्न 3.

लेखक ने प्रेमचंद की दशा का वर्णन करते-करते अपने बारे में भी कुछ कहकर लेखकों की स्थिति पर प्रकाश डाला है। ‘प्रेमचंद’ और लेखक ‘परसाई’ में आपको क्या-क्या समानता-विषमता दिखाई देती है? लिखिए।

उत्तर-

लेखक परसाई द्वारा लिखित पाठ 'प्रेमचंद के फटे जूते' में प्रेमचंद जैसे महान साहित्यकार, जिसे 'युग प्रवर्तक', 'महान कथाकार', 'उपन्यास सम्राट' आदि के रूप में जाना जाता है, की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी न थी। उनकी फटे जूते से अँगुली बाहर निकल आई थी। कुछ ऐसी समान स्थिति लेखक परसाई के जूते की भी थी। उनके जूते का अँगूठे के नीचे का तला फटा था, जिससे अँगूठा जमीन में रगड़कर घायल हो जाता था। इस स्थिति में उसके जूते का तला निकलकर उसके पूरे पंजे को घायल कर देता था। प्रेमचंद और लेखक में अंतर यह था कि इस हाल में भी जहाँ प्रेमचंद मुसकराते हुए फोटो खिंचा लिए, लेखक ऐसा कभी न कर पाता।

# मेरे बचपन के दिन

## पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1.

'मैं उत्पन्न हुई तो मेरी बड़ी खातिर हुई और मुझे वह सब नहीं सहना पड़ा जो अन्य लड़कियों को सहना पड़ता है। इस कथन के आलोक में आप यह पता लगाएँ कि-

(क) उस समय लड़कियों की दशा कैसी थी?

(ख) लड़कियों के जन्म के संबंध में आज कैसी परिस्थितियाँ हैं?

उत्तर-

**(क)** उस समय, अर्थात् सन् 1900 के आसपास भारत में लड़कियों की दशा अच्छी नहीं थी। प्रायः उन्हें जन्म देते ही मार दिया जाता था। उन्हें बोझ समझा जाता था। यदि उनका जन्म हो जाता था तो पूरे घर में मातम छा जाता था। महादेवी वर्मा अपने एक संस्मरण में लिखती हैं-'बैंड वाले, नौकर-चाकर सब लड़का होने की प्रतीक्षा में खुश बैठे रहते थे। जैसे ही लड़की होने का समाचार मिलता, सब चुपचाप विदा हो जाते।

ऐसे वातावरण में लड़कियों को कम भोजन देना, उन्हें घर के कामों में लगाना, पढ़ाई-लिखाई से दूर रखना आदि बुराईयों का पनपना स्वाभाविक था।।

(ख) आज लड़कियों के जन्म के संबंध में स्थितियाँ थोड़ी बदली हैं। पढ़े-लिखे लोग लड़का-लड़की के अंतर को धीरे-धीरे कम करते जा रहे हैं। बहुत-से जागरूक लोग लड़कियों का भी उसी तरह स्वागत सत्कार करते हैं, जैसे लड़के का। शहरों में लड़कियों को लड़कों की तरह पढ़ाया-लिखाया भी जाता है। परंतु लड़कियों के साथ भेदभाव पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। आज जितनी भी भ्रूण-हत्याएँ हो रही हैं, लड़कियों के जन्म को रोकने के लिए हो रही हैं। देश में लड़के-लड़कियों का अनुपात बिगड़ता जा रहा है। आश्चर्य की बात तो यह है कि महानगरों में सबसे कम लड़कियाँ चंडीगढ़ में हैं, जो देश का एक उन्नत शहर माना जाता है। वहाँ न शिक्षा कम है, न धन-वैभव। वास्तव में लड़कियों के जन्म को रोकना वहाँ के निवासियों की मानसिकता पर निर्भर करता है।

प्रश्न 2.

लेखिका उर्दू-फ़ारसी क्यों नहीं सीख पाई ?

उत्तर-

लेखिका उर्दू-फ़ारसी इसलिए नहीं सीख पाई क्योंकि लेखिका की रुचि उर्दू-फ़ारसी में नहीं थी। उसे लगता था कि वह उर्दू-फ़ारसी नहीं सीख सकती है। उसे उर्दू-फ़ारसी पढ़ाने के लिए जब मौलवी साहब आते थे तब वह चारपाई के नीचे छिप जाती थी। मौलवी साहब ने पढ़ाने आना बंद कर दिया और वह उर्दू-फ़ारसी नहीं सीख पाई।

प्रश्न 3.

लेखिका ने अपनी माँ के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?

उत्तर-

लेखिका ने अपनी माँ के हिंदी-प्रेम और लेखन-गायन के शौक का वर्णन किया है। वे हिंदी तथा संस्कृत जानती थीं। इसलिए इन दोनों भाषाओं का प्रभाव महादेवी पर भी पड़ा। महादेवी की माता धार्मिक स्वभाव की महिला थीं। वे पूजा-पाठ किया करती थीं। सवेरे 'कृपानिधान पंछी बन बोले' पद गाती थीं। प्रभाती गाती थीं। शाम को मीरा के पद गाती थीं। वे लिखा भी करती थीं।

प्रश्न 4.

जवारा के नवाब के साथ अपने पारिवारिक संबंधों को लेखिका ने आज के संदर्भ में स्वप्न जैसा क्यों कहा है?

उत्तर-

जवारा के नवाब के साथ अपने पारिवारिक संबंधों को लेखिका ने आज के संदर्भ में स्वप्ने जैसा इसलिए कहा है क्योंकि जवारा के नवाब और लेखिका का परिवार अलग-अलग धर्म-के होकर भी आत्मीय संबंध रखते थे। उनमें भाषा और जाति की दीवार बाधक न थी। दोनों परिवार एक-दूसरे के परिवारों को मिल-

जुलकर मनाते थे। वे एक-दूसरे को यथोचित संबंधों की डोर से बाँधे हुए थे। वे चाची, ताई, देवर, दुलहन जैसे आत्मीयता भरे रिश्तों से जुड़े थे। ऐसा वर्तमान में दुर्लभ हो गया है।

## रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 5.

जेबुन्निसा महादेवी वर्मा के लिए बहुत काम करती थीं। जेबुन्निसा के स्थान पर यदि आप होतीं होते तो महादेवी से आपकी क्या अपेक्षा होती?

उत्तर-

जेबुन्निसा के स्थान पर अगर मैं महादेवी के लिए कुछ काम करती तो मैं संबंधों के आधार पर उनसे अपेक्षा करती। अगर मैं नौकरानी के रूप में उनकी सहायता करती, तो उनसे मजदूरी के साथ-साथ प्रेम और आदर की भी अपेक्षा करती। अगर सखी के रूप में उनकी सहायता करती तो बस उनसे प्रेम और स्नेह चाहती। यदि उनकी प्रशंसिका या कनिष्ठ साथिन के रूप में सहायता करती तो कभी-कभी उनसे कविता भी सुन लेती तथा पढ़ाई में सहायता ले लेती।

प्रश्न 6.

महादेवी वर्मा को काव्य प्रतियोगिता में चाँदी का कटोरा मिला था। अनुमान लगाइए कि आपको इस तरह का कोई पुरस्कार मिला हो और वह देशहित में या किसी आपदा निवारण के काम में देना पड़े तो आप कैसा अनुभव करेंगे/करेंगी?

उत्तर

मुझे चाँदी के कटोरे जैसा कीमती पुरस्कार मिला हो और देशहित की बात आए तो मैं ऐसे पुरस्कार को खुशी-खुशी देता क्योंकि देश के हित से बड़ा कुछ नहीं। देश के हित में ही देशवासियों का हित निहित होता है। ऐसा करके मुझे दूनी खुशी प्राप्त होती और मैं गौरवान्वित महसूस करती।

प्रश्न 7.

लेखिका ने छात्रावास के जिस बहुभाषी परिवेश की चर्चा की है उसे अपनी मातृभाषा में लिखिए।

उत्तर-

परीक्षोपयोगी नहीं।

प्रश्न 8.

महादेवी जी के इस संस्मरण को पढ़ते हुए आपके मानस-पटल पर भी अपने बचपन की कोई स्मृति उभरकर आई होगी, उसे संस्मरण शैली में लिखिए।

उत्तर-

हमारे विद्यालय में गणतंत्र दिवस की पूर्ण संध्या पर ही गणतंत्र दिवस मनाया जा रहा था। उसमें मुझे पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की कविता 'हम जंग न होने देंगे' का पाठ करना था। मैंने अपने हिंदी अध्यापक की देख-रेख में इसका अभ्यास तो किया था पर मन में भय-सा बना था। वैसे भी विद्यालय के सदस्यों और छात्र-छात्राओं के बीच इस तरह कविता पढ़ने का मेरा पहला अवसर था। कार्यक्रम शुरू होने पर जब उद्घोषक कोई नाम बुलाती तो दिल धड़क उठता। जब मेरा नाम बुलाया गया तो काँपते पैरों से मंच पर गया। पहली दो लाइनें पढ़ते ही आत्मविश्वास जाग उठा। फिर जब कविता पूरी की तो हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। मुझे एक सुखद अनुभूति हो रही थी।

प्रश्न 9.

महादेवी ने कवि सम्मेलनों में कविता पाठ के लिए अपना नाम बुलाए जाने से पहले होने वाली बेचैनी का जिक्र किया है। अपने विद्यालय में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेते समय आपने जो बेचैनी अनुभव की होगी, उस पर डायरी का एक पृष्ठ लिखिए।

उत्तर-

26 जनवरी, 20-

आज विद्यालय में गणतंत्र दिवस का आयोजन है। सभी छात्र-छात्राओं के अतिरिक्त सैकड़ों अतिथि भी मंडप में पधारे हैं। सामने मेरे माता-पिता तथा अनेक परिचित जन बैठे हैं। मैं मंच के पीछे अपनी बारी की प्रतीक्षा में बैठी हूँ। मुझे कविता बोलनी है। हालाँकि मैंने पहले भी मंच पर कविता बोली है, परंतु जाने क्यों, आज मेरा दिल धक्-धक् कर रहा है। मेरे शरीर में हरकत हो रही है। जैसे-जैसे मेरे बोलने का समय निकट आ रहा है, मेरी उत्तेजना बढ़ती जा रही है। अब मैं न तो मंच का कोई कार्यक्रम सुन पा रही हूँ, न और किसी की बात सुन रही हूँ। मेरा सारा ध्यान अपना नाम सुनने में लगा है। डर भी लग रहा है कि कहीं मैं कविता भूल न जाऊँ। इसलिए मैंने लिखित कविता हाथ में ले ली है। यदि भूलने लगूँगी तो इसका सहारा ले लूँगी। लो, मेरा नाम बुल चुका है। मैं स्वयं को सँभाल रही हूँ। मेरे कदमों में आत्मविश्वास आ गया है। अब मैं नहीं भूलूँगी।

**भाषा-अध्ययन**

प्रश्न 10.

पाठ से निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द ढूँढ़कर लिखिए-  
विद्वान, अनंत, निरपराधी, दंड, शांति।

उत्तर-

प्रश्न 11.

निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग/प्रत्यय अलग कीजिए और मूल शब्द बताइए-  
निराहारी – निर् + आहार + ई।

सांप्रदायिकता

अप्रसन्नता

अपनापन

किनारीदार

स्वतंत्रता

उत्तर-

		उपसर्ग	प्रत्यय	मूल शब्द
निराहारी	–	निर	ई	आहार
सांप्रदायिकता	–	x	इक, ता	संप्रदाय
अप्रसन्नता	–	अ	ता	प्रसन्न
अपनापन	–	x	पन	अपना
किनारीदार	–	x	दार	किनारी
स्वतंत्रता	–	स्व	ता	तंत्र।

प्रश्न 12.

निम्नलिखित उपसर्ग-प्रत्ययों की सहायता से दो-दो शब्द लिखिए-

उपसर्ग – अन्, अ, सत्, स्व, दुर्

प्रत्यय – दार, हार, वाला, अनीय

उत्तर-

समस्त शब्द	विग्रह	समास का नाम
परमधाम	‘परम धाम (घर) है जो (स्वर्ग)	बह्व्रीहि
कुल-देवी	कुल की देवी	तत्पुरुष
पहले-पहल	सबसे पहले	अव्ययीभाव
पंचतंत्र	पंच तंत्रों का समाहार	द्विगु
उर्दू-फ़ारसी	उर्दू और फ़ारसी	द्वंद्व
रोने-धोने	रोने और धोने	द्वंद्व
कृपानिधान	कृपा के निधान	तत्पुरुष
प्रचार-प्रसार	प्रचार और प्रसार	द्वंद्व
कवि-सम्मेलन	कवियों का सम्मेलन	तत्पुरुष



सत्याग्रह	सत्य के लिए आग्रह	तत्पुरुष
जेब-खर्च	जेब के लिए खर्च	तत्पुरुष
छात्रावास	छात्रों के लिए आवास	तत्पुरुष
जन्मदिन	जन्म का दिन	तत्पुरुष
निराहार	बिना आहार	नञ् तत्पुरुष
ताई-चाची	ताई और चाची	द्वंद्व

प्रश्न 13.

पाठ में आए सामासिक पद छाँटकर विग्रह कीजिए-

पूजा-पाठ पूजा और पाठ

उत्तर-

**पाठेतर सक्रियता**

प्रश्न 14.

बचपन पर केंद्रित मैक्सिम गोर्की की रचना 'मेरा बचपन' पुस्तकालय से लेकर पढ़िए।

उत्तर-

छात्र स्वयं पढ़ें।

प्रश्न 15.

'मातृभूमि : ए विलेज विदाउट विमेन' (2005) फ़िल्म देखें। मनीष झा द्वारा निर्देशित इस फ़िल्म में कन्या भ्रूण हत्या की त्रासदी को अत्यंत बारीकी से दिखाया गया है।

उत्तर-

छात्र इस फ़िल्म को स्वयं देखें।

प्रश्न 16.

कल्पना के आधार पर बताइए कि लड़कियों की संख्या कम होने पर भारतीय समाज का रूप कैसा हो?

उत्तर-

लड़कियों की संख्या कम होने पर भारतीय समाज का स्वरूप विकृत होगा। उससे सामाजिक संतुलन बिगड़ जाएगा। लड़कों के लिए बहुओं की समस्या बढ़ जाएगी। ऐसी स्थिति में महिलाओं की खरीद-फरोख्त की घटनाएँ बढ़ जाएँगी। समाज में अनैतिकता, दुराचार, बलात्कार, अपहरण जैसी घटनाएँ बढ़ जाएँगी। समाज में एक अव्यवस्था का वातावरण होगा जिसमें अशांति होगी। लड़कियों की संख्या यदि

और कम हो गई तो एक दिन समाज में ऐसा समय आएगा जब हर लड़की को द्रौपदी बनने पर विवश होना पड़ेगी।

# अन्य पाठेतर हल प्रश्न

प्रश्न 1.

लेखिका महादेवी वर्मा के बचपन के समय लड़कियों के प्रति समाज की सोच कैसी थी? 'मेरे बचपन के दिन पाठ' के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

लेखिका महादेवी के बचपन अर्थात् बीसवीं शताब्दी के आसपास लड़कियों के प्रति समाज की सोच अच्छी नहीं थी। लोग लड़कियों को बोझ समझकर उनसे जल्द से जल्द छुटकारा पा लेना चाहते थे। वे लड़कियों के पैदा होते ही उन्हें मार देते थे।

प्रश्न 2.

महादेवी को अपने बचपन में वह सब नहीं सहना पड़ा ज अन्य लड़कियों को सहना पड़ता था। ऐसा क्यों?

उत्तर-

महादेवी के परिवार में दो सौ वर्षों तक कोई लड़की पैदा ही नहीं हुई थी। उसके पहले लोग, लड़कियों को पैदा होते ही परमधाम भेज देते थे। लेखिका महादेवी के बाबा ने कुल-देवी दुर्गा की पूजा की तब महादेवी का जन्म हुआ। इतनी मन्नते माँगने के बाद जन्म होने के कारण महादेवी को वह सब नहीं सहना पड़ा।

प्रश्न 3.

महादेवी के बाबा की सोच समाज के अन्य पुरुषों से किस तरह अलग थी?

उत्तर-

महादेवी के बाबा की सोच समाज के अन्य पुरुषों से बिल्कुल अलग थी। अन्य लोग जहाँ कन्या के पैदा होते ही उसे मार देते थे वहीं महादेवी के बाबा ने उसके पालन-पोषण पर ध्यान दिया और पढ़ा-लिखाकर विदुषी बनाना चाहा।

प्रश्न 4.

महादेवी के परिवार में कौन-कौन सी भाषाएँ बोली जाती थीं? महादेवी पर किस भाषा का असर हुआ?

उत्तर-

महादेवी के परिवार में उसके बाबा फ़ारसी और उर्दू के ज्ञाता थे जबकि उसके पिता ने अंग्रेजी पढ़ी थी। हिंदी का वातावरण तो तब बना जब उसकी माँ जबलपुर से आई। वे हिंदी-संस्कृत की जानकारी थी। उनके सान्निध्य के कारण महादेवी पर हिंदी का असर हुआ और वे पंचतंत्र सीखने लगी।

प्रश्न 5.

महादेवी की शिक्षा-दीक्षा में उनकी माता का क्या योगदान रहा?

उत्तर-

महादेवी की शिक्षा-दीक्षा में उनकी माता का विशेष योगदान रहा। वे हिंदी भाषी घर से आई थीं। उन्होंने महादेवी को 'पंचतंत्र' पढ़ना सिखाया। वे धार्मिक विचारों वाली महिला थीं। उनके साथ बैठते-बैठते महादेवी ने संस्कृत सुनाना समझना शुरू कर दिया। इस तरह उनकी पढ़ाई की शुरुआत माँ ने ही कराई।

प्रश्न 6.

क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज का वातावरण पढ़ाई के लिए आदर्श था। पठित पाठ के आलोक में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज का वातावरण बहुत अच्छा था। वहाँ विभिन्न स्थानों से लड़कियाँ पढ़ने आती थी। उनमें कुछ हिंदू भी तो कुछ ईसाई यहाँ धर्म या क्षेत्र के स्थान पर कोई भेदभाव नहीं था। सब एक ही मेस में खाती थीं, जिसमें प्याज तक नहीं प्रयोग की जाती थी। इस तरह वहाँ का वातावरण पढ़ाई के लिए आदर्श था।

प्रश्न 7.

महादेवी की रुचि लेखन में उत्पन्न करने में उनकी माँ का योगदान था, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

महादेवी की माँ हिंदी-संस्कृत की जानकार थी। वे पूजा-पाठ करने वाली धार्मिक विचारों की महिला थी। महादेवी उनके साथ पूजा पर बैठती और ध्यान से सुनती। उनकी माँ मीरा के पद गाती थी। इसे सुन-सुनकर महादेवी ने भी ब्रजभाषा में लिखना शुरू कर दिया। इस तरह उनकी माँ का विशेष योगदान था।

प्रश्न 8.

सुभद्रा कुमारी ने महादेवी की काव्य प्रतिभा को निखारने में कैसे मदद की?

उत्तर-

सुभद्रा कुमारी और महादेवी वर्मा छात्रावास के एक ही कमरे में रहती थीं। सुभद्रा उनसे दो साल बड़ी थी जो कविता लेखन में प्रसिद्ध थी। महादेवी जो अब तक ब्रजभाषा में लिखती थी, सुभद्रा कुमारी को देखकर

खड़ी बोली में लिखने लगी। दोनों एक साथ कविताएँ रचतीं, इससे महादेवी की काव्य प्रतिभा निखरती गई।

प्रश्न 9.

जेबुन्निसा कौन थी? वह महादेवी की मदद कैसे करती थी?

उत्तर-

जेबुन्निसा कोल्हापुर से आई मराठी लड़की थी जो महादेवी के कमरे में रहने आई क्योंकि सुभद्रा छात्रावास से जा चुकी थीं। जेबुन महादेवी की डेस्क साफ कर देती, उनकी पुस्तकें ढंग से रख देती थी। इससे महादेवी को कविता लेखन के लिए कुछ और समय मिल जाता था। इस तरह वह महादेवी की मदद करती थी।

प्रश्न 10.

उस समय विद्यालयों का वातावरण आज के वातावरण से किस तरह अलग था? 'मेरे बचपन के दिन'- पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

उस समय विद्यालयों में सांप्रदायिकता नहीं थी। विभिन्न धर्मों के छात्र-छात्राएँ साथ-साथ पढ़ते थे। वे अपनी-अपनी भाषा में बात करते थे। एक ही मेस में खाते थे, एक ही प्रार्थना में शामिल होते थे, पर आज विद्यालयों का वातावरण वैसा नहीं रहा। अब यहाँ जाति-धर्म, संप्रदाय, भाषा, क्षेत्र आदि के आधार पर अलगाव देखा जा सकता है।

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.

महादेवी और सुभद्रा कुमारी की मुलाकात और मित्रता का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर-

जब महादेवी का दाखिला क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज में करवाया गया तो वहाँ हॉस्टल में जो कमरा मिला, उसमें सुभद्रा कुमारी पहले से ही रह रही थीं। वे महादेवी से दो साल सीनियर थी जो कविता लिखा करती थीं। महादेवी को भी बचपन से लिखने का शौक था पर वह छिप-छिपाकर लिखती थी। उसने सुभद्रा के पूछने पर लिखने से तो मना कर दिया पर सुभद्रा द्वारा तलाशी लेने पर बहुत कुछ निकल आया। यह देखकर सुभद्रा ने महादेवी के बारे में सबको छात्रावास में बता दिया। इसके बाद दोनों में मित्रता हो गई।

प्रश्न 2.

महादेवी को काव्य रचना में प्रसिद्धि दिलाने में काव्य-सम्मेलनों ने किस तरह बढ़ावा दिया? पठित पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज में पढ़ते हुए महादेवी और सुभद्रा कुमारी कविताएँ लिखा करती थीं। उस समय कवि सम्मेलन हुआ करते थे। इन कवि सम्मेलनों में इन्हें लेकर क्रास्थवेट से मैडम जाया करती थी। जहाँ महादेवी कविताएँ सुनाती। इनके अध्यक्ष अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध, श्रीधर पाठक और रत्नाकर जैसे प्रसिद्ध कवि हुआ करते थे। इनमें कविता सुनाने पर लेखिका महादेवी को पुरस्कृत किया जाता था। ये पुरस्कार उनके लिए प्रेरणादायी सिद्ध हुए और उनकी प्रसिद्धि बढ़ती गई।

प्रश्न 3.

जवारा के नवाब की बेगम ने सांप्रदायिक सौहार्द फैलाने की दिशा में अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया, कैसे? मेरे बचपन के दिन पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

जवारा के नवाब की बेगम उसी कंपाउंड के एक बँगले में रहती थी जिसमें लेखिका का परिवार रहता था। वे हिंदू-मुसलमान का भेद माने बिना बच्चों से स्वयं को ताई कहने के लिए कहती। उनके बच्चे लेखिका की माँ को 'चची जान' कहते थे। वे अपने इकलौते लड़के के हाथ पर रक्षाबंधन को राखी बँधवातीं और लेखिक को 'लरिया' या कुछ उपहार देती। इसी तरह वे हिंदू त्योहारों को भी उतनी ही खुशी से मिल-जुलकर मनाती, जितना कि ईद या मुहर्रम को। उनका व्यवहार सांप्रदायिकता के मुँह पर तमाचा था। इस तरह उन्होंने अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

# एक कुत्ता और एक मैना

## पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1.

गुरुदेव ने शांतिनिकेतन को छोड़ कहीं और रहने का मन क्यों बनाया?

उत्तर-

गुरुदेव अस्वस्थ थे। उन्हें एकांत और आराम की आवश्यकता थी। शांति निकेतन में दिन-भर आने-जाने वालों का ताँता लगा रहता था। इसलिए उन्होंने तय किया कि वे श्रीनिकेतन के अपने पुराने तिमंजले मकान में निवास करेंगे।

प्रश्न 2.

मूक प्राणी मनुष्य से कम संवेदनशील नहीं होते। पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

‘एक कुत्ता और एक मैना’ निबंध में कुत्ते का संस्मरण पढ़ने से ज्ञात होता है कि मूक प्राणी भी बहुत संवेदनशील होते हैं। वह स्वामिभक्त कुत्ता गुरुदेव का सान्निध्य पाने के लिए दो मील का अनजान रास्ता तय करके गुरुदेव के पास श्री निकेतन आ गया और गुरुदेव का प्यार भर स्पर्श पाकर आनंदित हो उठा। इसी तरह गुरुदेव की मृत्यु पर वह चिताभस्म लाने वाले के साथ-साथ चलता हुआ उत्तरायण तक आया और चिताभस्म के पास बड़ी देर तक शांत भाव से बैठा रहा।

प्रश्न 3.

गुरुदेव द्वारा मैना को लक्ष्य करके लिखी कविता के मर्म को लेखक कब समझ पाया?

उत्तर-

गुरुदेव द्वारा मैना को लक्ष्य करके लिखी गई कविता के मर्म को लेखक तब समझ पाया, जब उसने मैना के मुख के भावों पर ध्यान केंद्रित किया। उसके सामने मैना की करुण छवि साकार हो उठी। पहले उसने उसके करुण भावों पर ध्यान नहीं दिया था। परंतु कविता पढ़ने के बाद ध्यान दिया तो उसे कविता का मर्म भी समझ में आ गया।

प्रश्न 4.

प्रस्तुत पाठ एक निबंध है। निबंध गद्य-साहित्य की उत्कृष्ट विधा है, जिसमें लेखक अपने भावों और विचारों को कलात्मक और लालित्यपूर्ण शैली में अभिव्यक्त करता है। इस निबंध में उपर्युक्त विशेषताएँ कहाँ झलकती हैं? किन्हीं चार का उल्लेख कीजिए।

उत्तर-

‘एक कुत्ता और एक मैना’ निबंध में लेखक ने अपने भावों-विचारों को कलात्मक और लालित्यपूर्ण शैली में जिन स्थलों पर अभिव्यक्त किया है, वे स्थल हैं-

1. अपने मकान में मैना दंपति के क्रियाकलापों में, जैसे-एक मैना दंपति नियमित भाव से प्रतिवर्ष यहाँ गृहस्थी जमाया करते हैं, तिनके और चीथड़ों का अंबार लगा देते हैं।
2. पत्नी- ये लोग यहाँ कैसे आ गए जी?  
पति- उँह बेचारे आ गए हैं तो रह जाने दो। क्या कर लेंगे!  
पत्नी- लेकिन फिर भी इनको इतना तो खयाल होना चाहिए कि यह हमारा प्राइवेट घर है।
3. एक लँगड़ी मैना को फुदकते देखकर-“देखते हो, यह यूथभ्रष्ट है, रोज़फुदकती है, ठीक यहीं आकर।”
4. शायद यह विधुर पति था जो पिछली स्वयंवर सभा के युद्ध में आहत और परास्त हो गया था या विधवा पत्नी है। जो पिछले बिड़ाल के आक्रमण के समय पति को खोकर युद्ध में ईषत् चोट खाकर एकांत विहार कर रही है।

प्रश्न 5.

आशय स्पष्ट कीजिए-

इस प्रकार कवि की मर्मभेदी दृष्टि ने इस भाषाहीन प्राणी की करुण दृष्टि के भीतर उस विशाल मानव-सत्य को देखा है, जो मनुष्य, मनुष्य के अंदर भी नहीं देख पाता।

उत्तर

रवींद्रनाथ ठाकुर कवि थे। उन्हें मर्मभेदी दृष्टि प्राप्त थी। इसी के बल पर वे कुत्ते जैसे भाषाहीन प्राणी के भीतर छिपे ‘पूर्ण समर्पण’ को देख पाए। उन्होंने देखा कि कुत्ता उन पर विश्वास रखता है, उन्हें चेतन शक्ति मानकर पूरे प्राणपण से उन पर न्योछावर हो सकता है। इस प्रकार रवींद्रनाथ ने कुत्ते के भीतर उस मानवीय अनुभूति को देख लिया जो कि प्रायः मनुष्य एक मनुष्य के भीतर भी नहीं देख पाता।

**रचना और अभिव्यक्ति**

प्रश्न 6.

पशु-पक्षियों से प्रेम इस पाठ की मूल संवेदना है। अपने अनुभव के आधार पर ऐसे किसी प्रसंग से जुड़ी

रोचक घटना को कलात्मक शैली में लिखिए।

उत्तर-

छात्र पशु-पक्षियों से जुड़े किसी प्रसंग या घटना को कलात्मक शैली में स्वयं लिखें।

### **भाषा-अध्ययन**

प्रश्न 7.

1. गुरुदेव ज़रा मुसकरा दिए।
2. मैं जब यह कविता पढ़ता हूँ।

ऊपर दिए गए वाक्यों में एक वाक्य में अकर्मक क्रिया है और दूसरे में सकर्मक। इस पाठ को ध्यान से पढ़कर सकर्मक और अकर्मक क्रिया वाले चार-चार वाक्य छाँटिए।

उत्तर-

#### **अकर्मक वाक्य**

1. अधिकांश लोग बाहर चले गए थे।
2. गुरुदेव जरा मुसकरा देते थे।
3. वे सबसे ऊपर के तल्ले में रहने लगे।
4. गुरुदेव वहाँ बड़े आनंद में थे।

#### **सकर्मक वाक्य**

1. एक दिन हमने सपरिवार उनके दर्शन की ठानी।।
2. हम लोग उस कुत्ते के आनंद को देखने लगे।
3. आँखें मूंदकर अपने रोम-रोम से उस स्नेह-रस का अनुभव करने लगा।
4. देखो, कितनी परितृप्ति इनके चेहरे पर दिखाई दे रही है।

प्रश्न 8.

निम्नलिखित वाक्यों में कर्म के आधार पर क्रिया-भेद बताइए-

(क) मीना कहानी सुनाती है।

(ख) अभिनव सो रहा है।

(ग) गाय घास खाती है।



(घ) मोहन ने भाई को गेंद दी।

(ङ) लड़कियाँ रोने लगीं।

उत्तर-

प्रश्न 9.

नीचे पाठ में से शब्द-युग्मों के कुछ उदाहरण दिए गए हैं; जैसे-

समय-असमय, अवस्था-अनवस्था

इन शब्दों में 'अ' उपसर्ग लगाकर नया शब्द बनाया गया है।

पाठ में से कुछ शब्द चुनिए और उनमें 'अ' एवं 'अन्' उपसर्ग लगाकर नए शब्द बनाइए।

उत्तर-

'अ' और 'अन्' उपसर्ग से बने शब्द-

### पाठेतर सक्रियता

प्रश्न 10.

पशु-पक्षियों पर लिखी कविताओं का संग्रह करें और उनके चित्रों के साथ उन्हें प्रदर्शित करें।

उत्तर-

छात्र कविताओं का संग्रह स्वयं करें और चित्र के साथ उन्हें प्रदर्शित करें।

प्रश्न 11.

हज़ारीप्रसाद द्विवेदी के कुछ अन्य मर्मस्पर्शी निबंध जैसे-'अशोक के फूल' और 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' पढ़िए।

उत्तर-

छात्र पुस्तकालय से पुस्तकें लें और इन निबंधों को पढ़ें।

# अन्य पाठेतर हल प्रश्न

## लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.

गुरुदेव को श्रीनिकेतन के पुराने आवास में ले जाने में परेशानी क्यों हो रही थी?

उत्तर-

गुरुदेव को श्रीनिकेतन के पुराने आवास में ले जाने में इसलिए परेशानी हो रही थी क्योंकि-

- गुरुदेव वृद्ध थे। उनका शरीर कमज़ोर हो चुका था।
- उन्होंने तीसरी मंजिल पर अपना आवास बनाने का निर्णय लिया था।
- लोहे की चक्करदार सीढ़ियों से उन्हें ले जाना आसान न था।
- गुरुदेव अपने आप चल-फिर नहीं सकते थे।

प्रश्न 2.

गुरुदेव कैसे दर्शनार्थियों से डरते थे और क्यों ?

उत्तर-

गुरुदेव उन दर्शनार्थियों से डरते थे जो समय-असमय, स्थान आदि का ध्यान रखे बिना गुरुदेव से मिलने आ जाते थे और देर तक वह गुरुदेव से बातें किया करते थे। उनकी इस धृष्टता से गुरुदेव को कितनी परेशानी होती थी इसकी उन्हें चिंता नहीं रहती थी।

प्रश्न 3.

गुरुदेव को शांतिनिकेतन की तुलना में श्रीनिकेतन किस तरह सुविधाजनक लगा?

उत्तर-

गुरुदेव को शांतिनिकेतन की अपेक्षा श्रीनिकेतन कई तरह से सुविधाजनक लगा; जैसे-

- श्रीनिकेतन का वातावरण अधिक शांतिमय था।
- श्रीनिकेतन में गुरुदेव से मिलने वालों की भीड़ नहीं होती थी।
- श्रीनिकेतन में वे अकेले रहते थे।
- यहाँ उन्हें अधिक सुखानुभूति होती थी।

प्रश्न 4.

अचानक कुत्ते के आ जाने से गुरुदेव को कैसा लगा और क्यों?

उत्तर-

श्रीनिकेतन में अचानक कुत्ते के आ जाने से गुरुदेव को बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि उसे श्रीनिकेतन के दो मील लंबे रास्ते का पता न था, न उसे किसी ने बताया था कि गुरुदेव यहाँ हैं। वह आत्मज्ञान से आया था।

प्रश्न 5.

कुत्ता गुरुदेव के पास क्यों आ गया? गुरुदेव का सान्निध्य उसे कैसा लगता था?

उत्तर-

कुत्ता अत्यंत स्वामिभक्त था। वह गुरुदेव से असीम लगाव रखता था। वह गुरुदेव का प्यार भरा स्पर्श पाने के लिए उनके पास गया था। जब गुरुदेव ने कुत्ते की पीठ पर हाथ फेरा तो वह आँखें बंदकर रोम-रोम से स्नेह रस का अनुभव करने लगा। गुरुदेव के सान्निध्य की परितृप्ति उसके चेहरे पर झलकने लगी।

प्रश्न 6.

आरोग्य में लिखी कविता में गुरुदेव ने कुत्ते की किस अद्भुत विशेषता की ओर ध्यान आकर्षित कराया है?

उत्तर-

आरोग्य में लिखी कविता में गुरुदेव ने कुत्ते की अद्भुत विशेषता के बारे में लिखा है कि इस वाक्यहीन प्राणिलोक में यही अकेला जीव अच्छा-बुरा सबको भेदकर संपूर्ण मनुष्य को देख सकता है। यह उस आनंद को देख सका है जिसे प्राण दिया जा सकता है, जिसमें अहैतुक प्रेम ढाल दिया जा सकता है, जिसकी चेतना असीम चैतन्य लोक में राह दिखा सकती है।

प्रश्न 7.

गुरुदेव द्वारा लिखी कविता पढ़कर लेखक के सामने कौन-सी घटना साकार हो उठती है?

उत्तर-

गुरुदेव द्वारा लिखी कविता पढ़कर लेखक के सामने श्री निकेतन के तितल्ले वाली वह घटना साकार हो उठती है, जब स्वामिभक्त कुत्ता गुरुदेव को खोजते-खोजते दो मील चलकर आ गया और गुरुदेव के पास खड़ा होकर पूँछ हिलाने लगा। गुरुदेव द्वारा उसकी पीठ पर हाथ फेरते ही उसका रोम-रोम स्नेह रस से आनंदित हो उठा।

प्रश्न 8.

गुरुदेव की मृत्यु पर कुत्ते ने अपनी संवेदना का परिचय कैसे दिया?

उत्तर-

गुरुदेव की मृत्यु के बाद जब उनका चिता भस्म कोलकाता से आश्रम लाया गया उस समय अपने सहज बोध के बल पर। आश्रम के द्वार तक आया और चिताभस्म के साथ अन्य आश्रमवासियों के साथ गंभीर भाव से उत्तरायण तक आया और कलश के पास थोड़ी देर तक बैठा रहा।

प्रश्न 9.

गुरुदेव पशु-पक्षियों से भी लगाव रखते थे। एक कुत्ता और एक मैना' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

गुरुदेव पशु-पक्षियों से भी लगाव रखते थे, यह बात दो उदाहरणों से स्पष्ट हो जाती है-

- गुरुदेव का स्वामिभक्त कुत्ता उनका सान्निध्य पाने के लिए सदैव आतुर रहता था। गुरुदेव भी उस पर प्यार भरा हाथ फेरकर उसे आनंदमय कर देते थे।
- गुरुदेव ने दल से अलग होकर चल रही मैना को देखकर उसकी करुण स्थिति के बारे में अनुमान कर लिया।

प्रश्न 10.

गुरुदेव प्रकृति से निकटता रखते हुए उससे असीम प्रेम करते थे। उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

गुरुदेव प्रकृति के निकट रहकर उससे असीम प्रेम करते थे। यह इस बात से पता चलता है कि लेखक जब गुरुदेव से मिलने गया तो वे कुरसी पर बैठे अस्तगामी सूर्य की ओर ध्यानमग्न होकर आनंदित हो रहे थे। बगीचे में सवेरे-सेवेरे टहलते हुए वे एक-एक फूल-पत्ते को ध्यान से देख रहे थे। यह उनके प्रकृति प्रेम का उदाहरण है

प्रश्न 11.

मैना के चेहरे पर करुण भाव देखकर लेखक ने क्या अनुमान लगाया?

उत्तर-

गुरुदेव की बात पर विचार करके लेखक ने मैना के चेहरे के करुणभाव को देखकर लेखक ने यह अनुमान लगाया कि शायद यह विधुर मैना है जो पिछली स्वयंवर-सभा के युद्ध में घायल होकर परास्त हो गया था या विधवा पत्नी है जो पिछले बिड़ाल आक्रमण के समय पति को खोकर ईषत् चोट खाकर एकांत विहार कर रही है।

**दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

प्रश्न 1.

लेखक ने किस आधार पर ऐसा कहा है कि मैना दूसरों पर अनुकंपा ही दिखाया करती है?

उत्तर-

लेखक तीन-चार साल से ऐसे नए मकान में रहने लगा है जिसकी दीवारों में सूराख छोड़ दिया गया है। इसी मकान में एक मैना दंपति प्रतिवर्ष घोंसला बना लिया करता था। वे तिनके और चिथड़े लाकर जमा करते और नाना प्रकार की मधुर वाणी में गाना शुरू कर देते। उन्हें मकान में रहने वालों की कोई परवाह नहीं। यदि नर मैना कोई कागज का टुकड़ा लाते तो मादा और नर दोनों नाच-गाना और आनंद से सारा मकान मुखरित कर देते। मैना के ऐसे स्वभाव को देखकर ही लेखक ने कहा है कि मैना दूसरों पर अनुकंपा दिखाया करती है।

प्रश्न 2.

करुण भाव वाली मैना को लक्ष्य करके गुरुदेव ने जो कविता लिखी थी, उसका सार अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर-

गुरुदेव द्वारा लिखी कविता का सार इस प्रकार है। गुरुदेव ने अपने बगीचे में सेमल के पेड़ के नीचे एक अकेली मैना देखी जो लँगड़ाकर चल रही थी। इसके बाद गुरुदेव ने देखा कि वह मैना रोज़ सवेरे साथियों से अलग होकर कीड़ों का शिकार करती है, बरामदे में चढ़ जाती है, नाच-नाचकर चहल-कदमी करती है। गुरुदेव सोचते हैं कि समाज के किस दंड पर उसे निर्वासन मिला है। कुछ ही दूरी पर बाकी मैनाएँ बक-झक कर रही हैं, घास पर उछल-कूद रही हैं पर इसके जीवन में न जाने कहाँ गाँठ पड़ी है। इसकी चाल में वैराग्य का गर्व भी नहीं है।

प्रश्न 3.

लेखक को कौओं के संबंध में किस नए तथ्य का ज्ञान हुआ और कैसे?

उत्तर-

एक दिन गुरुदेव सवेरे-सवेरे बगीचे में टहल रहे थे। लेखक भी एक अध्यापक महोदय को लेकर उनके साथ हो लिया गुरुदेव एक-एक फूल-पत्ते को ध्यान से देखते हुए टहल रहे थे तभी गुरुदेव ने पूछा कि आश्रम के कौए कहीं चले गए। हैं क्या, उनकी आवाज़ सुनाई ही नहीं दे रही। लेखक अब तक कौओं को सर्वव्यापी पक्षी समझता था पर उस दिन पता चला कि कौए भी प्रवास पर चले जाते हैं। आखिर सप्ताह भर बाद ही आश्रम में बहुत से कौए दिखाई दिए।

# साखियाँ एवं सबद

## दोहा 1.

मानसरोवर सुभग जल , हंसा केलि कराहि।  
मुकताफल मुकता चुगै , अब उड़ी अनत न जाही।।

भावार्थ –

यह एक दोहा छन्द हैं।

कैलाश पर्वत पर स्थित मानसरोवर झील का पानी एकदम साफ व निर्मल है जिसमें हंस (एक पक्षी) निवास करता है और वह उसी मानसरोवर झील में मोती के दानों को चुग कर बड़े आनंद से क्रीड़ा करते हुए अपने जीवन को बिताता है। वह उस मानसरोवर झील को छोड़कर अन्यत्र कहीं नहीं जाना चाहता है।

कबीरदास जी का यह दोहा इसी संदर्भ को आधार मानकर लिख गया हैं। इस दोहे में कबीरदास जी कहते हैं कि जब व्यक्ति ईश्वर भक्ति में लीन हो जाता हैं तो उसका हृदय निर्मल हो जाता हैं यानि जब व्यक्ति हृदय रूपी मानसरोवर में , क्रीड़ा (खेल) रूपी साधना कर रहा हो और क्रीड़ा करते हुए वह आनंदित होकर भक्ति रूपी मोती चुग रहा हो तो , फिर वह प्रभु की भक्ति को छोड़कर कहीं और नहीं जाना चाहता हैं।

दूसरे शब्दों में , व्यक्ति का मन अगर ईश्वर भक्ति में लग जाता है तो फिर उसे सांसारिक वासनाओं , मोह माया व बाह्य आडंबरों से कोई लेना देना नहीं होता है। उसे तो ईश्वर भक्ति में ही आनंद व खुशी प्राप्त होती हैं और फिर वह ईश्वर भक्ति का मार्ग छोड़कर किसी अन्य मार्ग में जाना नहीं चाहता हैं। इस दोहे में शांत रस का प्रयोग किया गया हैं।

## दोहा 2.

प्रेमी ढूँढ़त में फिरों , प्रेमी मिले न कोई।  
प्रेमी कों प्रेमी मिले , सब विष अमृत होइ।।

भावार्थ –

कबीरदास जी कहते हैं कि वो अपने प्रेमी (ईश्वर) को सब जगह ढूढ़ते फिर रहे हैं लेकिन उन्हें उनके प्रेमी (ईश्वर) कहीं नहीं मिल रहे हैं।

कबीरदास जी कहते हैं कि अगर उन्हें उनके ईश्वर रूपी प्रेमी मिल जाए तो , उनके मन का सारा विष (यानि दुख , कठिनाई ) अमृत (सुख) में बदल जायेगा। यानि भगवान की भक्ति से ही सारे दुखों का नाश होता है और सुखों की प्राप्ति होती है।

दोहा 3.

हस्ती चढ़िए ज्ञान कौं , सहज दुलीचा डारि।

स्वान रूप संसार है , भूँकन दे झक मारि।।

भावार्थ –

कबीरदास जी कहते हैं कि मनुष्य को हमेशा ही ज्ञान रूपी हाथी पर , साधना रूपी आसन (गलीचा) बिछाकर सवारी करनी चाहिए।

कबीरदास जी कहते हैं कि जिस प्रकार कुत्तों के भौंकने के बावजूद , हाथी उनकी परवाह किए बगैर अपनी मस्ती में आगे बढ़ता जाता है। उसी प्रकार इस संसार के लोग भी आपको अच्छा-बुरा बोलते रहेंगे। आप उनकी बातों को अनसुना कर , उन्हें अनदेखा कर , अपने कर्तव्यों का पालन सहज रूप से करते हुए आगे बढ़ते रहिए। एक दिन वो थक हार कर , स्वयं ही चुपचाप बैठ जाएंगे। यहां पर संसार की तुलना भौंकने वाले कुत्तों से की है।

दोहा 4.

पखापखी के कारने , सब जग रहा भुलान।

निरपख होई के हरि भजै , सोई संत सुजान।।

भावार्थ –

कबीरदास जी कहते हैं कि पक्ष और विपक्ष के चक्कर में इस दुनिया के सारे लोग आपस में लड़ रहे हैं और वो अपने इस झगड़े में ईश्वर को ही भूल गए हैं। जो व्यक्ति बिना भेदभाव के निष्पक्ष होकर , ईश्वर की भक्ति में मग्न रहता है। सही अर्थों में वही सच्चा भक्त और अच्छा इंसान होता है।

#### दोहा 5.

हिंदु मूआ राम कहि , मुसलमान खुदाई।  
कहै कबीर सो जीवता , दुहूँ के निकटि न जाइ॥

भावार्थ -

उपरोक्त दोहे में कबीरदास जी कहते हैं कि हिंदू राम का नाम जपते हुए और मुसलमान खुदा का नाम जपते-जपते सारा जीवन बिता देते हैं और दोनों ही न ईश्वर और न ही खुदा को अच्छे से जान पाते हैं। यानि अंत में उन्हें कुछ भी हासिल नहीं होता है।

कबीरदास जी के अनुसार जो मनुष्य इन सब बातों से दूर रहता है , असल में वही जीवित है और उसका ही जीवन सार्थक है। अर्थात् मनुष्य को जाती-पाँती , धर्म सम्प्रदाय के भेदभाव से अपने आप को दूर रखना चाहिए। वही मनुष्य सही अर्थों पर जीता है जो ईश्वर की भक्ति पर लीन रहता है।

#### दोहा 6.

काबा फिर कासी भया , रामहिं भया रहीम।  
मोट चुन मैदा भया , बैठी कबीरा जीम॥

भावार्थ -

उपरोक्त दोहे में कबीरदास जी कहते हैं कि उस ईश्वर को मनुष्य चाहे काबा में जाकर ढूँढ़े या काशी जाकर या फिर राम के नाम से पुकारे या रहीम के नाम से , सभी एक समान ही है।

जिस प्रकार गेहूं को मोटा पीसने के बाद वह आटा बन जाता है और ज्यादा बारीक पीसने पर वह मैदा बन जाता है। लेकिन दोनों ही रूपों में गेहूं पीसने के बाद खाने के ही काम आता है। उसी प्रकार प्रभु को आप किसी भी नाम से बुलाओ , प्रभु एक ही हैं। फिर चाहे उसे काबा जाकर ढूँढ़ो या काशी।

#### दोहा 7.

ऊँचे कुल का जनमिया, जे करनी ऊँच न होई।  
सुबरन कलस सुरा भरा , साधु निंदा सोई॥



भावार्थ -

उपरोक्त दोहे में कबीरदास जी कहते हैं कि ऊँचे कुल में जन्म लेने से मनुष्य ऊँचा नहीं होता है। बल्कि अपने कर्मों से ऊँचा होता है क्योंकि इंसान की असली पहचान तो उसके कर्मों से ही होती है ना कि उसके कुल से।

जिस प्रकार सोने के घड़े में रखी होने के बाद भी शराब , शराब ही रहेगी , अमृत नहीं बन जाएगी। और सोने के घड़े में होने के बाद भी साधु उसे बुरी चीज बता कर उसकी निंदा ही करेगा। उसी प्रकार ऊँचे कुल में जन्म लेने के बाद व्यक्ति अगर बुरे कर्म करता है तो लोग उसके कुल की अनदेखी कर , उसकी निंदा ही करेंगे यानी व्यक्ति अपने कर्मों से ही महान बन सकता है।

**सबद में संत महात्माओं के भजनों व कथनों को संजोया गया है।**

दोहा 2.

मोकों कहाँ ढूँढ़े बंदे , मैं तो तेरे पास में।  
ना मैं देवल ना मैं मस्जिद , ना काबे कैलास में।  
ना तो कौने क्रिया -कर्म में , नहीं योग वैराग में।  
खोजी होय तो तुरते मिलिहों , पल भर की तलास में।  
कहें कबीर सुनो भाई साधो , सब स्वासों की स्वास में।

भावार्थ -

इन पंक्तियों में कबीर दास जी कहते हैं कि ईश्वर सर्वत्र व्याप्त हैं। लेकिन अपनी अज्ञानता वश मनुष्य ईश्वर की खोज में जीवन भर भटकता रहता है। कभी वह मंदिर जाता है तो कभी मस्जिद पहुंच जाता है। कभी काबा में तो , कभी कैलाश में ईश्वर को ढूढ़ता रहता है।

और कभी उस ईश्वर को पाने के लिए पूजा-पाठ , तंत्र मंत्र करता है या फिर साधु का चोला पहन कर वैराग्य धारण कर लेता है। और इस प्रकार वह अपना सारा जीवन ईश्वर की खोज में व्यर्थ गंवा देता है। लेकिन ये सब बाह्य आडंबर या दिखावे से ज्यादा कुछ नहीं है। कबीरदास जी के अनुसार भगवान तो मनुष्य के अंदर उसकी आत्मा में ही बसते हैं। वह हर जीव के भीतर ही विद्यमान हैं। उनसे मिलने के लिए आपको किसी बाहरी आडंबर की

जरूरत नहीं है और न ही कही जाने की। अगर मनुष्य सिर्फ अपने अंदर ही झाँककर देखे तो , उसे ईश्वर पल भर में मिल जायेंगे।

यानि सरल शब्दों में इसका अर्थ यह है कि ईश्वर कण-कण में निवास करता है।उसको ढूढ़ने के लिए कहीं जाने की जरूरत नहीं है। बस आपको सच्चे मन से उसे देखना होता है।  
**दोहा 2.**

संतों भाई आई ग्यान की आँधी रे।

भ्रम की टाटी सबै उड़ानी , माया रहै न बाँधी॥

हिति चित की द्वै थूनी गिरानी, मोह बलिंडा तूटा।

त्रिस्नाँ छाँनि परि घर ऊपरि, कुबधि का भाँडाँ फूटा।

जोग जुगति काया का निकस्या, हरि की गति जब जाँणी॥

आँधी पीछै जो जल बूठा, प्रेम हरि जन भीनाँ।

कहै कबीर भाँन के प्रगटे उदित भया तम खीनाँ॥

**भावार्थ -**

इन पंक्तियों में कबीरदास जी ने ज्ञान के महत्व को बड़ी सरलता से समझाया है। उन्होंने ज्ञान की तुलना आँधी से करते हुए कहा है कि जिस प्रकार आंधी आती है तो कच्ची झोपड़ी की सभी दीवारें अपने आप गिर जाती हैं और वह बंधन मुक्त हो जाती हैं। उसी प्रकार जब व्यक्ति को ज्ञान प्राप्त होता है तो उसका मन सारे सांसारिक बंधनों से मुक्त हो जाता है।

कबीरदास जी आगे कहते हैं कि झोपड़ी की दीवारें गिरने के बाद जब छत को गिरने से रोकने वाला लकड़ी का टुकड़ा जो खम्भे को जोड़ता है , वह भी टूट जाता है तो छत भी स्वतः ही गिर जाती है। और छत के गिरते ही झोपड़ी के अंदर रखा हुआ सारा सामान नष्ट हो जाता है।

उसी प्रकार ज्ञान प्राप्त होते ही मनुष्य सभी विकारों लोभ , मोह , लालच , जाति पाँति , स्वार्थ आदि से मुक्त हो जाता है। परंतु जिनका घर मजबूत होता है यानि जिनके मन में कोई छल-कपट नहीं होता , उन पर आंधी-तूफान का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। अर्थात् ज्ञानी व्यक्ति को कोई भी सांसारिक चीज डगमगा नहीं सकती है।

आंधी के बाद जब बरसात होती है तो , वह सारी गंदी चीजें को धोकर साफ कर देती है। उसी प्रकार ज्ञान की प्राप्ति होने के बाद मनुष्य का मन निर्मल हो जाता है और फिर वह ईश्वर भक्ति में लीन हो जाता है।

### पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास

#### साखियाँ

प्रश्न 1.

‘मानसरोवर’ से कवि का क्या आशय है?

उत्तर-

मानसरोवर के दो अर्थ हैं-

- एक पवित्र सरोवर जिसमें हंस विहार करते हैं।
- पवित्र मन या मानस।

प्रश्न 2.

कवि ने सच्चे प्रेमी की क्या कसौटी बताई है?

उत्तर-

कवि ने सच्चे प्रेमी की यह कसौटी बताई है कि उसका मन विकारों से दूर तथा पवित्र होता है। इस पवित्रता का असर मिलने वाले पर पड़ता है। ऐसे प्रेमी से मिलने पर मन की पवित्रता और सारे पाप नष्ट हो जाते हैं।

प्रश्न 3.

तीसरे दोहे में कवि ने किस प्रकार के ज्ञान को महत्त्व दिया है?

उत्तर-

इस दोहे में अनुभव से प्राप्त आध्यात्मिक ज्ञान को महत्त्व दिया गया है।

प्रश्न 4.

इस संसार में सच्चा संत कौन कहलाता है?

उत्तर-

इस संसार में सच्चा संत वही है जो जाति-धर्म, संप्रदाय आदि के भेदभाव से दूर रहता है, तर्क-वितर्क, वैर-विरोध और राम-रहीम के चक्कर में पड़े बिना प्रभु की सच्ची भक्ति करता है। ऐसा व्यक्ति ही सच्चा संत होता है।

प्रश्न 5.

अंतिम दो दोहों के माध्यम से कबीर ने किस तरह की संकीर्णताओं की ओर संकेत किया है?

उत्तर-

अंतिम दो दोहों में कबीर ने निम्नलिखित संकीर्णताओं की ओर संकेत किया है-

1. अपने-अपने मत को श्रेष्ठ मानने की संकीर्णता और दूसरे के धर्म की निंदा करने की संकीर्णता।
2. ऊँचे कुल के अहंकार में जीने की संकीर्णता।

प्रश्न 6.

किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके कुल से होती है या उसके कर्मों से? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर-

किसी व्यक्ति की पहचान उसके कर्म से होती है, कुल से नहीं। कोई व्यक्ति यदि ऊँचे कुल में जन्म लेकर बुरे कर्म करता है तो वह निंदनीय होता है। इसके विपरीत यदि साधारण परिवार में जन्म लेकर कोई व्यक्ति यदि अच्छे कर्म करता है तो समाज में आदरणीय बन जाता है सूर, कबीर, तुलसी और अनेकानेक ऋषि-मुनि साधारण से परिवार में जन्मे पर अपने अच्छे कर्मों से आदरणीय बन गए। इसके विपरीत कंस, दुर्योधन, रावण आदि बुरे कर्मों के कारण निंदनीय हो गए।

प्रश्न 7.

काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ, सहज दुलीचा डारि।

स्वान रूप संसार है, भँकन दे झख मारि।

उत्तर-

- इसमें कवि ने एक सशक्त चित्र उपस्थित किया है। सहज साधक मस्ती से हाथी पर चढ़े हुए जा रहे हैं।  
और संसार-भर के कुत्ते भौंक-भौंककर शांत हो रहे हैं परंतु वे हाथी का कुछ बिगाड़ नहीं पा रहे। यह चित्र निंदकों पर व्यंग्य है और साधकों के लिए प्रेरणा है।

- सांगरूपक अलंकार का कुशलतापूर्वक प्रयोग किया गया है  
ज्ञान रूपी हाथी  
सहज साधना रूपी दुलीचा  
निंदक संसार रूपी श्वान  
निंदा रूपी भौंकना
- 'झाख मारि' मुहावरे का सुंदर प्रयोग।
- 'स्वान रूप संसार है' एक सशक्त उपमा है।

### सबद (पद)

प्रश्न 8.

मनुष्य ईश्वर को कहाँ-कहाँ ढूँढ़ता फिरता है?

उत्तर-

मनुष्य अपने धर्म-संप्रदाय और सोच-विचार के अनुसार ईश्वर को मंदिर, मस्जिद, काबा, कैलाश जैसे पूजा स्थलों और धार्मिक स्थानों पर खोजता है। ईश्वर को पाने के लिए कुछ लोग योग साधना करते हैं तो कुछ सांसारिकता से दूर होकर संन्यासी-बैरागी बन जाते हैं और इन क्रियाओं के माध्यम से ईश्वर को पाने का प्रयास करते हैं।

प्रश्न 9.

कबीर ने ईश्वर-प्राप्ति के लिए किन प्रचलित विश्वासों का खंडन किया है?

उत्तर-

कबीर ने ईश्वर प्राप्ति के प्रचलित विश्वासों का खंडन किया है। उनके अनुसार ईश्वर ने मंदिर में है, न मसजिद में; न काबा में है, न कैलाश आदि तीर्थ यात्रा में; वह न कर्मकांड करने में मिलता है, न योग साधना से, न वैरागी बनने से। ये सब ऊपरी दिखावे हैं, ढोंग हैं। इनमें मन लगाना व्यर्थ है।

प्रश्न 10.

कबीर ने ईश्वर को 'सब स्वाँसों की स्वाँस में क्यों कहा है?

उत्तर-

कबीर का मानना था कि ईश्वर घट-घट में समाया है। वह प्राणी की हर साँस में समाया हुआ है। उसका वास प्राणी के मन में ही है।

प्रश्न 11.

कबीर ने ज्ञान के आगमन की तुलना सामान्य हवा से न कर आँधी से क्यों की?

उत्तर-

कबीर के अनुसार, जब प्रभु ज्ञान का आवेश होता है तो उसका प्रभाव चमत्कारी होता है। उससे पूरी जीवन शैली बदल जाती है। सांसारिक बंधन पूरी तरह कट जाते हैं। यह परिवर्तन धीरे-धीरे नहीं होता, बल्कि एकाएक और पूरे वेग से होता है। इसलिए उसकी तुलना सामान्य हवा से न करके आँधी से की गई है।

प्रश्न 12.

ज्ञान की आँधी का भक्त के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर

ज्ञान की आँधी आने से भक्त के जीवन पर अनेक प्रभाव पड़ते हैं-

- भक्त के मन पर छाया अज्ञानता का भ्रम दूर हो जाता है।
- भक्त के मन का कूड़ा-करकट (लोभ-लालच आदि) निकल जाता है।
- मन में प्रभु भक्ति का भाव जगता है।
- भक्त का जीवन भक्ति के आनंद में डूब जाता है।

प्रश्न 13.

भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) हिति चित्त की वै श्रृंणी गिराँनी, मोह बलिंडा तूटा।

(ख) आँधी पीछे जो जल बूठा, प्रेम हरि जन भीनाँ।

उत्तर-

इसका भाव यह है कि ईश्वरीय ज्ञान हो जाने के बाद प्रभु-प्रेम के आनंद की वर्षा हुई। उस आनंद में भक्त का हृदय पूरी तरह सराबोर हो गया।

## रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 14.

संकलित साखियों और पदों के आधार पर कबीर के धार्मिक और सांप्रदायिक सद्भाव संबंधी विचारों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-

पाठ में संकलित साखियों से ज्ञात होता है कि कबीर समाज में फैले जाति-धर्म के झगड़े, ऊँच-नीच की

भावना, मनुष्य का हिंदू-मुसलमान में विभाजन आदि से मुक्त समाज देखना चाहते थे। वे हिंदू-मुसलमान के रूप में राम-रहीम के प्रति कट्टरता के घोर विरोधी थे। वे समाज में सांप्रदायिक सद्भाव देखना चाहते थे। कबीर चाहते थे कि समाज को कुरीतियों से मुक्ति मिले। इसके अलावा उन्होंने ऊँचे कुल में जन्म लेने के बजाए साधारण कुल में जन्म लेकर अच्छे कार्य करने को श्रेयस्कर माना है।

### **भाषा अध्ययन**

प्रश्न 15.

निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए-

पखापखी, अनत, जोग, जुगति, बैराग, निरपख.

उत्तर-

पखापखी – पक्ष-विपक्ष

अनत – अन्यत्र

जोग – योग

जुगति – युक्ति

बैराग – वैराग्य

निष्पक्ष – निरपख

### **पाठेतर सक्रियता**

प्रश्न 16.

कबीर की साखियों को याद कर कक्षा में अंत्याक्षरी का आयोजन कीजिए।

उत्तर-

छात्र स्वयं करें।

# अन्य पाठेतर हल प्रश्न

## लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.

हंस किसके प्रतीक हैं? वे मानसरोवर छोड़कर अन्यत्र क्यों नहीं जाना चाहते हैं?

उत्तर-

हंस जीवात्मा के प्रतीक हैं। वे मानसरोवर अर्थात् मेन रूपी सरोवर को छोड़कर अन्यत्र इसलिए जाना चाहते हैं क्योंकि उसे प्रभु भक्ति का आनंद रूपी मोती चुगने को मिल रहे हैं। ऐसा आनंद उसे अन्यत्र दुर्लभ है।

प्रश्न 2.

कबीर ने सच्चा संत किसे कहा है? उसकी पहचान बताइए।

उत्तर-

कबीर ने सच्चा संत उसे कहा है जो हिंदू-मुसलमान के पक्ष-विपक्ष में न पड़कर इनसे दूर रहता है और दोनों को समान दृष्टि से देखता है, वही सच्चा संत है। उसकी पहचान यह है कि किसी धर्म/संप्रदाय के प्रति कट्टर नहीं होता है और प्रभुभक्ति में लीन रहता है।

प्रश्न 3.

कबीर ने 'जीवित' किसे कहा है?

उत्तर-

कबीर ने उस व्यक्ति को जीवित कहा है जो राम और रहीम के चक्कर में नहीं पड़ता है। इनके चक्कर में पड़े व्यक्ति राम-राम या खुदा-खुदा करते रह जाते हैं पर उनके हाथ कुछ नहीं लगता है। इन दोनों से दूर रहकर प्रभु की सच्ची भक्ति करने वालों को ही कबीर ने 'जीवित' कहा है।

प्रश्न 4.

'मोट चून मैदा भया' के माध्यम से कबीर क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर-

मोट चून मैदा भया के माध्यम से कबीर कहना चाहते हैं कि हिंदू और मुसलमान दोनों धर्मों की बुराइयाँ समाप्त हो गई और वे अच्छाइयों में बदल गईं। अब मनुष्य इन्हें अपनाकर जीवन सँवार सकता है।



प्रश्न 5.

कबीर 'सुबरन कलश' की निंदा क्यों करते हैं?

उत्तर-

कबीर 'सुबरन कलश' की निंदा इसलिए करते हैं क्योंकि कलश तो बहुत महंगा है परंतु उसमें रखी सुरा व्यक्ति के लिए हर तरह से हानिकारक है। सुरा के साथ होने के कारण सोने का पात्र निंदनीय बन गया है।

प्रश्न 6.

'सुबरन कलश' किसका प्रतीक है? मनुष्य को इससे क्या शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए?

उत्तर-

'सुबरन कलश' अच्छे और प्रतिष्ठित कुल का प्रतीक है जिसमें जन्म लेकर व्यक्ति अपने-आप को महान समझने लगता है। व्यक्ति तभी महान बनता है जब उसके कर्म भी महान हैं। इससे व्यक्ति को अच्छे कर्म करने की शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

प्रश्न 7.

कबीर मनुष्य के लिए क्रिया-कर्म और योग-वैराग्य को कितना महत्वपूर्ण मानते हैं?

उत्तर-

कबीर मनुष्य के लिए क्रिया-कर्म और योग-वैराग्य को महत्वपूर्ण नहीं मानते हैं क्योंकि मनुष्य इन क्रियाओं के माध्यम से ईश्वर को पाने का प्रयास करता है, जबकि कबीर के अनुसार ईश्वर को इन क्रियाओं के माध्यम से नहीं पाया जा सकता है।

प्रश्न 8.

मनुष्य ईश्वर को क्यों नहीं खोज पाता है?

उत्तर-

मनुष्य ईश्वर को इसलिए नहीं खोज पाता है क्योंकि वह ईश्वर का वास मंदिर-मस्जिद जैसे धर्मस्थलों और काबा-काशी जैसी पवित्र मानी जाने वाली जगहों पर मानता है। वह इन्हीं स्थानों पर ईश्वर को खोजता-फिरता है। वह ईश्वर को अपने भीतर नहीं खोजता है।

प्रश्न 9.

कबीर ने संसार को किसके समान कहा है और क्यों?

उत्तर-

कबीर ने संसार को श्वान रूपी कहा है क्योंकि जिस तरह हाथी को जाता हुआ देखकर कुत्ते अकारण भौंकते

हैं उसी तरह ज्ञान पाने की साधना में लगे लोगों को देखकर सांसारिकता में फँसे लोग तरह-तरह की बातें बनाने लगते हैं। वे ज्ञान के साधक को लक्ष्य से भटकाना चाहते हैं।

प्रश्न 10.

कबीर ने 'भान' किसे कहा है? उसके प्रकट होने पर भक्त पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर-

कबीर ने 'भान' (सूर्य) ज्ञान को कहा है। ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त होने पर मनुष्य के मन का अंधकार दूर हो जाता है। इस अंधकार के दूर होने से मनुष्य के मन से कुविचार हट जाते हैं। वह प्रभु की सच्ची भक्ति करता है और उस आनंद में डूब जाता है।

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.

स्पष्ट कीजिए कि कबीर खरी-खरी कहने वाले सच्चे समाज सुधारक थे।

उत्तर-

कबीर ने तत्कालीन समाज में व्याप्त कुरीतियों और बुराइयों को अत्यंत निकट से देखा था। उन्होंने महसूस किया कि सांप्रदायिकता, धार्मिक कट्टरता, भक्ति का आडंबर, मूर्तिपूजा, ऊँच-नीच की भावना आदि प्रभु-भक्ति के मार्ग में बाधक हैं। उन्होंने ईश्वर की वाणी को जन-जन तक पहुँचाते हुए कहाँमोको केही ढूँढे बंदे में तो तेरे पास में। इसके अलावा ऊँचे कुल में जन्म लेकर महान कहलाने वालों के अभिमान पर चोट करते हुए कहा- 'सुबरन कलस सुरा भरा, साधू निंदा सोय'। इससे स्पष्ट होता है कि कबीर खरी-खरी कहने वाले सच्चे समाज-सुधारक थे।

प्रश्न 2.

ज्ञान की आँधी आने से पहले मनुष्य की स्थिति क्या थी? बाद में उसकी दशा में क्या-क्या बदलाव आया? पठित 'सबद' के आधार पर लिखिए।

उत्तर-

ज्ञान की आँधी आने से पहले मनुष्य का मन मोह-माया, अज्ञान तृष्णा, लोभ-लालच और अन्य दुर्विचारों से भरा था। वह सांसारिकता में लीन था, इससे वह प्रभु की सच्ची भक्ति न करके भक्ति का आडंबर करता था। ज्ञान की आँधी आने के बाद मनुष्य के मन से अज्ञान का अंधकार और कुविचार दूर हो गए। उसके मन में प्रभु-ज्ञान का प्रकाश फैल गया। वह प्रभु की सच्ची भक्ति में डूबकर उसके आनंद में सराबोर हो गया।

# वाख

## वाख 1.

रस्सी कच्चे धागे की , खींच रही मैं नाव।

जाने कब सुन मेरी पुकार , करें देव भवसागर पार।

भावार्थ –

उपरोक्त काव्य खंड में कवयित्री ने अपनी जिंदगी की तुलना नाव से और अपनी श्वासों (सांस) की तुलना कच्ची डोरी से की है। कवयित्री कहती है कि मैं अपनी जिंदगी रूपी नाव को अपनी श्वासों रूपी कच्ची डोरी से खींच रही हूँ। यानि जैसे-तैसे अपनी जिंदगी गुजार रही हूँ। आगे कवयित्री कहती हैं कि पता नहीं कब प्रभु उनकी करुण पुकार सुनकर , उन्हें इस संसार के जन्म मरण रूपी भवसागर से पार उतारेंगे।

पानी टपके कच्चे सकोरे , व्यर्थ प्रयास हो रहे मेरे।

जी में उठती रह-रह हूक , घर जाने की चाह है घेरे।।

भावार्थ –

यहाँ पर कवयित्री ने अपने शरीर की तुलना कच्ची मिट्टी के घड़े या बर्तन से की है जिसमें से लगातार पानी टपक रहा है। कवयित्री के कहने का तात्पर्य यह हैं कि हर बीतते दिन के साथ उनकी उम्र कम होती जा रही है और प्रभु से मिलने के उनके सारे प्रयास व्यर्थ होते जा रहे हैं।

कवयित्री आगे कहती है कि उनका दिल बार-बार प्रभु मिलन को तड़प उठता हैं और अब उनके अंदर सिर्फ अपने घर जाने यानि उस परमात्मा में विलीन होने की व्याकुलता बढ़ती ही जा रही है।

## वाख 2.

खा खा कर कुछ पाएगा नहीं ,

न खाकर बनेगा अहंकारी।

भावार्थ –

इस काव्य खंड में कवयित्री ने जीवन में संतुलन बनाकर चलने की अहमियत को समझाया है। और जीवन में मध्यम मार्ग को अपनाने की बात कही हैं। कवयित्री कहती हैं कि मनुष्य को बहुत अधिक सांसारिक वस्तुओं व भोग-विलासिता में लिप्त नहीं रहना चाहिए। इससे भी कुछ हासिल नहीं होगा।

बल्कि इससे वह प्रतिदिन आत्मकेंद्रित बनता चला जाएगा। और एकदम सब कुछ त्याग कर बैराग्य धारण करने से भी कुछ हासिल नहीं होगा। इससे भी व्यक्ति अहंकारी बन जाएगा।

सम खा तभी होगा समभावी ,  
खुलेगी साँकल बन्द द्वार की।

भावार्थ -

आगे कवयित्री कहती हैं कि इसीलिए जीवन में संतुलन बनाकर चलना जरूरी है। न बहुत ज्यादा सांसारिक चीजों में लिप्तता और ना ही एकदम बैराग्य की भावना रखनी चाहिए। बल्कि दोनों को बराबर यानि संतुलित मात्रा में अपने जीवन में जगह देनी चाहिए। जिससे समानता की भावना मन में उत्पन्न होगी।

और हृदय में दूसरों के लिये प्रेम , दया , करुणा , उदारता की भावना जन्म लेगी। मन की दुविधा दूर होंगी। और फिर हम सभी लोगों को खुले मन से अपने जीवन में अपना पाएंगे या अपने हृदय के द्वार सभी लोगों के लिए समान भाव से खोल पाएंगे।

वाख 3.

आई सीधी राह से , गई न सीधी राह।

सुषुम-सेतु पर खड़ी थी , बीत गया दिन आह !

भावार्थ -

इस काव्य खंड में कवयित्री अपने किये कर्मों पर पश्चाताप कर रही हैं। वो कहती हैं कि जब वो इस दुनिया में आई थी यानी जब उन्होंने जन्म लिया था , तब उनका मन एकदम पवित्र व निर्मल था। उनके मन में किसी के प्रति राग-द्वेष की भावना नहीं थी। लेकिन अब जब जाने का समय आया है तो उनका मन छल-कपट , भेदभाव और सांसारिक माया मोह के बंधनों से भरा पड़ा है

और उन्होंने परमात्मा को पाने का या उनसे मिलने का सीधा रास्ता यानी भक्ति के मार्ग को चुनने के बजाय हठयोग मार्ग को चुना। और अपने और परमात्मा के बीच सेतु बनाने के लिए कुंडली योग को जागृत करने का सहारा लिया। परंतु वे अपने इस प्रयास में भी असफल हो गईं।

और अब जब उनको अपनी गलती का एहसास हुआ है तो बहुत देर हो चुकी है। अब वो मृत्यु के एकदम निकट पहुंच चुकी हैं।

ज़ेब टटोली कौड़ी ना पाई।

माझी को दूँ , क्या उतराई ?

भावार्थ -

आगे कवयित्री कहती हैं कि अब जब वह अपनी जिंदगी का हिसाब-किताब करने बैठी हैं तो उन्हें अपनी झोली खाली नजर आ रही हैं। तब उन्हें लगता है कि उन्होंने अपने पूरे जीवन में पुण्य कर्म या अच्छे कर्म तो किये ही नहीं और अब उनके पास पुण्य कर्म करने का समय भी खत्म हो चुका है और परमात्मा से मिलने का समय बहुत पास चुका है।

कवयित्री आगे कहती हैं कि जब परमात्मा मुझे जन्म मरण के इस भवसागर से पार उतारेंगे तो वो उनको उतराई (मेहनताने) के रूप में भेंट स्वरूप क्या देंगी।

**वाख 4.**

थल थल में बसता है शिव ही,  
भेद न कर क्या हिन्दू-मुसलमां।

**भावार्थ -**

इस काव्य खंड में कवयित्री कहती हैं कि ईश्वर कण-कण में बसता है। वह सबके हृदय में मौजूद है। इसीलिए हमें हिंदू और मुसलमान का भेदभाव अपने मन में नहीं रखना चाहिए।

जानी है तो स्वयं को जान ,  
यही है साहिब से पहचान।।

**भावार्थ -**

कवयित्री आगे कहती हैं कि अगर तुम सच में जानी हो , तो सबसे पहले अपने अंदर झांक कर देखो , अपने आपको पहचानो , अपने मन को पवित्र व निर्मल करो , क्योंकि ईश्वर से मिलने का यही एकमात्र रास्ता है।

### **पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास**

**प्रश्न 1.**

‘रस्सी’ यहाँ किसके लिए प्रयुक्त हुआ है और वह कैसी है?

**उत्तर-**

‘रस्सी’ शब्द जीवन जीने के साधनों के लिए प्रयुक्त हुआ है। वह स्वभाव में कच्ची अर्थात् नश्वर है।

**प्रश्न 2.**

कवयित्री द्वारा मुक्ति के लिए किए जाने वाले प्रयास व्यर्थ क्यों हो रहे हैं?

उत्तर-

कवयित्री देखती है कि दिन बीतते जाने और अंत समय निकट आने के बाद भी परमात्मा से उसका मेल नहीं हो पाया है। ऐसे में उसे लगता है कि उसकी साधना एवं प्रयास व्यर्थ हुई जा रही है।

प्रश्न 3.

कवयित्री का 'घर जाने की चाह' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर-

परमात्मा से मिलना।

प्रश्न 4.

भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) जेब टटोली कौड़ी न पाई।

(ख) खा-खाकर कुछ पाएगा नहीं, न खाकर बनेगा अहंकारी।

उत्तर-

(क) "जेब टटोली कौड़ी न पाई" का भाव यह है कि सहज भाव से प्रभु भक्ति न करके कवयित्री ने हठयोग का सहारा लिया। इस कारण जीवन के अंत में कुछ भी प्राप्त न हो सका।

(ख) भाव यह है कि मनुष्य को संयम बरतते हुए सदैव मध्यम मार्ग अपनाना चाहिए। अधिकाधिक भोग-विलास में डूबे रहने से मनुष्य को कुछ नहीं मिलता है और भोग से पूरी तरह दूरी बना लेने पर उसके मन में अहंकार जाग उठता है।

प्रश्न 5.

बंद द्वार की साँकल खोलने के लिए ललयद ने क्या उपाय सुझाया है?

उत्तर-

ललयद ने सुझाव दिया है कि भोग और त्याग के बीच संतुलन बनाए रखो। न तो भोगों में लिप्त रहो, न ही शरीर को सुखाओ; बल्कि मध्यम मार्ग अपनाओ। तभी प्रभु-मिलन का द्वार खुलेगा।

प्रश्न 6.

ईश्वर प्राप्ति के लिए बहुत से साधक हठयोग जैसी कठिन साधना भी करते हैं, लेकिन उससे भी लक्ष्य प्राप्ति नहीं होती। यह भाव किन पंक्तियों में व्यक्त हुआ है?

उत्तर-

उपर्युक्त भाव प्रकट करने वाली पंक्तियाँ हैं-

आई सीधी राह से, गई न सीधी राह।  
सुषुम-सेतु पर खड़ी थी, बीत गया दिन आह!  
जेब टटोली, कौड़ी न पाई।  
मांझी को क्या दें, क्या उतराई ?

प्रश्न 7.

‘ज्ञानी’ से कवयित्री का क्या अभिप्राय है?

उत्तर-

‘ज्ञानी’ से कवयित्री का अभिप्राय है-जिसने परमात्मा को जाना हो, आत्मा को जाना हो।

प्रश्न 8.

हमारे संतों, भक्तों और महापुरुषों ने बार-बार चेताया है कि मनुष्यों में परस्पर किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं होता, लेकिन आज भी हमारे समाज में भेदभाव दिखाई देता है-

(क) आपकी दृष्टि में इस कारण देश और समाज को क्या हानि हो रही है?

(ख) आपसी भेदभाव को मिटाने के लिए अपने सुझाव दीजिए।

उत्तर-

(क) हमारे समाज में जाति-धर्म, भाषा, संप्रदाय आदि के नाम पर भेदभाव किया जाता है। इससे समाज और देश को बहुत हानि हो रही है। इससे समाज हिंदू-मुसलमान में बँटकर सौहार्द और भाई-चारा खो बैठा है। दोनों एक-दूसरे के शत्रु से नजर आते हैं। त्योहारों के समय इनकी कट्टरता के कारण किसी न किसी अनहोनी की आशंका बनी। रहती है। इसके अलावा समय-असमय दंगे होने का भय बना रहता है। इससे कानून व्यवस्था की समस्या उठ खड़ी होती है तथा विकास पर किया जाने वाला खर्च अकारण नष्ट होता है।

(ख) आपसी भेदभाव मिटाने के लिए लोगों को सहनशील बनना होगा, सर्वधर्म समभाव की भावना लानी होगी तथा कट्टरता त्याग कर धार्मिक सौहार्द का वातावरण बनाना होगा। सभी धर्मों के अनुयायियों के साथ समानता का व्यवहार करना होगा तथा वोट की खातिर किसी धर्म विशेष का तुष्टीकरण बंद करना होगा ताकि अन्य धर्मानुयायियों को अपनी उपेक्षा न महसूस हो।

पाठेतर सक्रियता

प्रश्न 9.

भक्तिकाल में ललद्दयद के अतिरिक्त तमिलनाडु की आंदाल, कर्नाटक की अक्क महादेवी और

राजस्थान की मीरा जैसी भक्त कवयित्रियों के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए एवं उस समय की सामाजिक परिस्थितियों के बारे में कक्षा में चर्चा कीजिए।

उत्तर-

छात्र स्वयं करें।

प्रश्न 10.

ललयद कश्मीरी कवयित्री हैं। कश्मीर पर एक अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर-

कश्मीर हमारे देश के उत्तरी भाग में स्थित है। यह पर्वतीय प्रदेश है। यहाँ का भू-भाग ऊँचा-नीचा है। कश्मीर के ऊँचे पहाड़ों पर सरदियों में बरफ पड़ती है। यह सुंदर प्रदेश हिमालय की गोद में बसा है। अपनी विशेष सुंदरता के कारण यह मुगल बादशाहों को विशेष प्रिय रहा है। मुगल सम्राज्ञी ने उसकी सुंदरता पर मुग्ध होकर कहा था, 'यदि धरती पर कहीं स्वर्ग है तो यहीं है।'

कश्मीर में झेलम, सिंधु आदि नदियाँ बहती हैं जिससे यहाँ हरियाली रहती है। यहाँ के हरे-भरे वन, सेब के बाग, खूबसूरत घाटियाँ, विश्व प्रसिद्ध डल झील, इसमें तैरते खेत, शिकारे, हाउसबोट आदि सैलानियों के आकर्षण का केंद्र हैं। यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता देखने के लिए देश से नहीं वरन विदेशी पर्यटक भी आते हैं। पर्यटन उद्योग राज्य की आमदनी में अपना विशेष योगदान देता है। वास्तव में कश्मीर जितना सुंदर है उतने ही सुंदर यहाँ के लोग भी हैं। ये मृदुभाषी हँसमुख और मिलनसार प्रकृति के हैं। कश्मीर वासी विशेष रूप से परिश्रमी होते हैं। वास्तव में कश्मीर धरती का स्वर्ग है।

## अन्य पाठ्यतर हल प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.

नाव किसका प्रतीक है? कवयित्री उसे कैसे खींच रही है?

उत्तर-

नाव इस नश्वर शरीर का प्रतीक है। कवयित्री उसे साँसों की डोर रूपी रस्सी के सहारे खींच रही है।



प्रश्न 2.

कवयित्री भवसागर पार होने के प्रति चिंतिते क्यों हैं?

उत्तर-

कवयित्री भवसागर पार होने के प्रति इसलिए चिंतित है क्योंकि वह नश्वर शरीर के सहारे भवसागर पार करने का निरंतर प्रयास कर रही है परंतु जीवन का अंतिम समय आ जाने पर भी उसे अच्छी प्रार्थना स्वीकार होती प्रतीत नहीं हो रही है।

प्रश्न 3.

कवयित्री ने अपने व्यर्थ हो रहे प्रयासों की तुलना किससे की है और क्यों?

उत्तर-

कवयित्री ने अपने व्यर्थ हो रहे प्रयासों की तुलना कच्चे सकोरों से की है। मिट्टी के इन कच्चे सकोरों में जल रखने से जल रिसकर बह जाता है और सकोरा खाली रहता है उसी प्रकार कवयित्री के प्रयास निष्फल हो रहे हैं।

प्रश्न 4.

कवयित्री के मन में कहाँ जाने की चाह है? उसकी दशा कैसी हो रही है?

उत्तर-

कवयित्री के मन में परमात्मा की शरण में जाने की चाह है। यह चाह पूरी न हो पाने के कारण उसकी दशा चिंताकुल है।

प्रश्न 5.

बंद द्वार की साँकल खोलने के लिए कवयित्री क्या आवश्यक मानती है?

उत्तर-

बंद द्वार की साँकल खोलने के लिए कवयित्री का मानना है कि मनुष्य को भोग लिप्ता से आवश्यक दूरी बनाकर भोग और त्याग के बीच का मध्यम मार्ग अपनाना चाहिए। उसे संयम रखते हुए भोग और त्याग में समान भाव रखना चाहिए।

प्रश्न 6.

‘न खाकर बनेगा अहंकारी’-कवयित्री ने ऐसा क्यों कहा है?

उत्तर-

‘न खाकर बनेगा अहंकारी’-कवयित्री ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि भोग से दूरी बनाते-बनाते लोग इतनी

दूरी बना लेते हैं कि वे वैराग्य धारण कर लेते हैं। उन्हें अपनी इंद्रियों को वश में करने के कारण घमंड हो जाता है। वे स्वयं को सबसे बड़ा तपस्वी मानने लगते हैं।

प्रश्न 7.

कवयित्री किसे साहब मानती है? वह साहब को पहचानने का क्या उपाय बताती है?

उत्तर-

कवयित्री परमात्मा को साहब मानती है, जो भवसागर से पार करने में समर्थ हैं। वह साहब को पहचानने का यह उपाय बताती है कि मनुष्य को आत्मज्ञानी होना चाहिए। वह अपने विषय में जानकर ही साहब को पहचान सकता है।

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.

‘जेब टटोली कौड़ी न पाई’ के माध्यम से कवयित्री ने क्या कहना चाहा है? इससे मनुष्य को क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर-

‘जेब टटोली कौड़ी न पाई’ के माध्यम से कवयित्री यह कहना चाहती है कि हठयोग, आडंबर, भक्ति का दिखावा आदि के माध्यम से प्रभु को प्राप्त करने का प्रयास असफल ही होता है। इस तरह का प्रयास भले ही आजीवन किया जाए पर उसके हाथ भक्ति के नाम कुछ नहीं लगता है। भवसागर को पार करने के लिए मनुष्य जब अपनी जेब टटोलता है तो वह खाली मिलती है। इससे मनुष्य को यह शिक्षा मिलती है कि भक्ति का दिखावा एवं आडंबर नहीं करना चाहिए।

प्रश्न 2.

‘वाख’ पाठ के आधार पर बताइए कि परमात्मा को पाने के रास्ते में कौन-कौन सी बाधाएँ आती हैं?

उत्तर-

परमात्मा को पाने के रास्ते में आने वाली निम्नलिखित बाधाएँ पाठ में बताई गई हैं-

1. क्षणभंगुर मानव शरीर और नश्वर साँसों के सहारे मनुष्य परमात्मा को पाना चाहता है।
2. परमात्मा को पाने के प्रति मन का शंकाग्रस्त रहना।
3. अत्यधिक भोग में लिप्त रहना या भोग से पूरी तरह दूर होकर वैरागी बन जाना।
4. मन में अभिमान आ जाना।
5. सहज साधना का मार्ग त्यागकर हठयोग आदि का सहारा लेना।

6. ईश्वर को सर्वव्यापक न मानना।
7. मत-मतांतरों के चक्कर में उलझे रहना।

इन बाधाओं के कारण प्रभु-प्राप्ति होना कठिन हो जाता है।

# सवैये

1

मानुष हों तो वही रसखानि बसों ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।

जौ पसु हों तो कहा बस मेरो चरों नित नंद की धेनु मँझारन॥

पाहन हों तो वही गिरि को जो कियो हरिछत्र पुरंदर धारन।

जौ खग हों तो बसेरो करों मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन॥

**शब्दार्थ**—मानुष-मनुष्य। बसों-बसना, रहना। ग्वारन-ग्वालों के मध्य। कहा बस-वश में रहना। चरों-चरता रहूँ। नित-हमेशा। धेनु-गाय। मँझारन-बीच में। पाहन-पत्थर। गिरि-पर्वत। छत्र-छाता। पुरंदर-इंद्र। धारन-धारण किया। खग-पक्षी। बसेरो-निवास करना। कालिंदी-यमुना। कूल-किनारा। कदंब-एक वृक्ष। डारन-शाखाएँ, डालें।

**भावार्थ**—कृष्ण की लीला भूमि ब्रज के प्रति अपना लगाव प्रकट करते हुए कवि कहता है कि अगले जन्म में यदि मैं मनुष्य बनूँ तो गोकुल गाँव के ग्वाल बालों के बीच ही निवास करूँ। यदि मैं पशु बनूँ तो इसमें मेरा कोई जोर (वश) नहीं है फिर भी मैं नंद बाबा की गायों के बीच चरना चाहता हूँ। यदि मैं पत्थर बनूँ तो उसी गोवर्धन पर्वत का पत्थर बनना चाहता हूँ, जिसे कृष्ण ने अपनी उँगली पर उठाकर लोगों को इंद्र के प्रकोप से बचाया था। यदि मैं पक्षी बन

जाऊँ तो मैं उसी कदंब के पेड़ पर एक आश्रय बनाऊंगा जो यमुना के तट पर है और जिसके नीचे श्रीकृष्ण रास रचाया करते थे।

## 2

या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।

आठहुँ सिद्धि नवौ निधि के सुख नंद की गाइ चराइ बिसारौं ।।

रसखान कबौं इन आँखिन सौं, ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं।

कोटिक ए कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं।।

**शब्दार्थ-** या-इस। लकुटी-लाठी। कामरिया-छोटा कंबल। तिहूँ-तीनों। पुर-नगर, लोक। तजि डारौं-छोड़ दूँ। नवौ निधि-नौ निधियाँ। बिसारौं-भूलूँ। कबौं-जब से। सौं-से। तड़ाग-तालाब। निहारौं-देखता हूँ। कोटिक-करोड़ों। कलधौत-सोना। धाम-भवन। करील-एक प्रकार का वृक्ष। कुंजन-लताओं का घर। वारौं-न्योछावर करना।

**भावार्थ-** कृष्ण से जुड़ी वस्तुओं के प्रति अपना प्रेम प्रकट करते हुए कवि कहता है कि जिस लाठी और कंबल को लेकर कृष्ण गाय चराया करते थे उसके बदले मैं तीनों लोकों का सुख त्यागने को तैयार हूँ। मैं नंद की गायों को चराने के बदले आठों सिद्धियों और नौ निधियों का सुख भी भूल सकता हूँ। मैं ब्रजभूमि पर स्थित बागों, वनों, तालाबों को देखते रहना चाहता हूँ। मैं इन करील के कुंजों में रहने के बदले हजारों सोने के महलों का सुख त्यागने को तैयार हूँ।

## 3

मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरें पहिरौंगी।

ओढ़ि पितंबर लै लकुटी बन गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी।।

भावतो वोहि मेरो रसखानि सौं तेरे कहे सब स्वाँग करौंगी।

## या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी।।

**शब्दार्थ**—मोरपखा-मोर के पंखों से बना मुकुट । राखिहों-रचूँगी। गुंज-एक जंगली पौधे का छोटा-सा फल । गरें-गले में। पहिरौंगी-पहनूँगी। पितंबर (पीतांबर)-पीलावस्त्र। गोधन-गाय रुपी धन। गवारिन-गवालिन। फिरौंगी-फिरूँगी। भावतो-अच्छा लगना। वोहि-जो कुछ। स्वाँग-रूप धारण करना। मुरलीधर-कृष्ण। अधरा-होंठों पर। धरौंगी-रखूँगी।

**भावार्थ**—कृष्ण के सौंदर्य पर मुग्ध एक गोपी दूसरी गोपी से कहती है कि हे सखी! मैं कृष्ण की तरह ही अपने सिर पर मयूर के पंखों का मुकुट तथा गले में गुंज की माला पहनूँगी। मैं पीले वस्त्र धारण कर श्रीकृष्ण की तरह ही गायों को पीछे लाठी लेकर वन-वन फिरूँगी। मेरे कृष्ण को जो भी अच्छा लगता है मैं उनके कहने पर सब कुछ करने को तैयार हूँ पर हे सखी! कृष्ण की उस मुरली को मैं अपने होंठों पर कभी भी न रखूँगी। क्योंकि उस मुरली ने ही कृष्ण को हमसे दूर कर रखा है।

## 4

काननि दै अँगुरी रहिबो जबहीं मुरली धुनि मंद बजैहै।

मोहनी तानन सों रसखानि अटा चढ़ि गोधन गैहै तौ गैहै।।

टेरि कहीं सिगरे ब्रजलोगनि काल्हि कोऊ कितनो समुझैहै।

माइ री वा मुख की मुसकानि सम्हारी न जैहै, न जैहै, न जैहै।।

**शब्दार्थ**—काननि-कानों में। दै-देकर। अँगुरी-उँगली। रहिबो-रहूँगी। धुनि-धुन। मंद-मधुर स्वर में। बजैहै-बजाएँगे। मोहनी-मोहनेवाली। तानन-तानों, धुनों से। अटा-अटारी, अट्टालिका । गोधन-व्रजक्षेत्र में गाया जाने वाला लोकगीत । गैहै-गाएँगे। टेरी-पुकारकर

बुलाना। सिगरे-सारे। काल्हि-कल। समुझैहै -समझाएँगे। माइ री-हे माँ। वा-वह, उसके। सम्हारी-सँभाला। न जैहै-नहीं जाएगी।

**भावार्थ-**श्रीकृष्ण की मुरली की ध्वनि तथा उनकी मुस्कान पर मोहित एक गोपी कहती है कि जब श्रीकृष्ण मधुर स्वर में मुरली बजाएँगे तब मैं अपने कानों में अँगुली डाल लूँगी ताकि मैं उसे न सुन सकूँ। ऊँची-ऊँची अट्टालिकाओं पर चढ़कर कृष्ण गोधन गाते हैं तो गाते रहें, मैं उससे बेअसर रहूँगी। मैं ब्रज के लोगों से चिल्लाकर कहना चाहती हूँ कि कल को मुझे कोई कितना भी समझाए पर श्रीकृष्ण की एक मुस्कान पर मैं अपने वश में नहीं रह सकूँगी। मुझ पर उस मुस्कान का जादू अवश्य चल जाएगा।

### पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1.

ब्रजभूमि के प्रति कवि का प्रेम किन-किन रूपों में अभिव्यक्त हुआ है?

उत्तर-

कवि को ब्रजभूमि से गहरा प्रेम है। वह इस जन्म में ही नहीं, अगले जन्म में भी ब्रजभूमि का वासी बने रहना चाहता है। ईश्वर अगले जन्म में उसे ग्वाला बनाएँ, गाय बनाएँ, पक्षी बनाएँ या पत्थर बनाएँ-वह हर हाल में ब्रजभूमि में रहना चाहता है। वह ब्रजभूमि के वन, बाग, सरोवर और करील-कुंजों पर अपना सर्वस्व न्योछावर करने को भी तैयार है।

प्रश्न 2.

कवि का ब्रज के वन, बाग और तालाब को निहारने के पीछे क्या कारण हैं?

उत्तर-

कवि का ब्रज के वन-बाग और तालाब निहारने का कारण यह है कि वह इन सबसे श्रीकृष्ण का जुड़ाव महसूस करता है। कवि श्रीकृष्ण का अनन्य भक्त है। अपने आराध्य से जुड़ी वस्तुएँ उसे शांति और आनंद की अनुभूति कराती हैं।

प्रश्न 3.

एक लकुटी और कामरिया पर कवि सब कुछ न्योछावर करने को क्यों तैयार है?

उत्तर-

कवि के लिए सबसे महत्वपूर्ण हैं-कृष्ण। इसलिए कृष्ण की एक-एक चीज़ उसके लिए महत्वपूर्ण है। यही कारण है कि वह कृष्ण की लाठी और कंबल के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार है।

प्रश्न 4.

सखी ने गोपी से कृष्ण का कैसा रूप धारण करने का आग्रह किया था? अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

उत्तर-

सखी ने गोपी से कृष्ण का ठीक वैसा ही रूप धारण करने का अग्रह किया था जैसा कृष्ण दिखते थे। इसके लिए उसने सिर पर मोर पंखों को बना मुकुट, गले में गूँज की माला, शरीर पर पीला वस्त्र पहने और हाथ में लाठी लेने का अग्रह किया था।

प्रश्न 5.

आपके विचार से कवि पशु, पक्षी और पहाड़ के रूप में भी कृष्ण का सान्निध्य क्यों प्राप्त करना चाहता है?

उत्तर-

कवि पशु, पक्षी और पहाड़ के रूप में भी कृष्ण का सान्निध्य इसलिए प्राप्त करना चाहता है क्योंकि इन सबके साथ श्रीकृष्ण का जुड़ाव किसी न किसी रूप में रहा था।

प्रश्न 6.

चौथे सवैये के अनुसार गोपियाँ अपने आप को क्यों विवश पाती हैं?

उत्तर-

चौथे सवैये के अनुसार गोपियाँ अपने आपको इसलिए विवश पाती हैं क्योंकि श्रीकृष्ण की मुसकान अत्यंत आकर्षक है। इस मुसकान के आकर्षण से बच पाना उनके लिए कठिन हो जाता है। इस मुसकान के कारण वे अपने तन-मन पर अपना नियंत्रण नहीं रख पाती हैं।

प्रश्न 7.

भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) कोटिक ए कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारों।

(ख) माइ री वा मुख की मुसकानि सम्हारी न जैहै, न जैहै, न जैहै।

उत्तर-

(क) रसखान ब्रजभूमि से इतना प्रेम करते हैं कि वे वहाँ के काँटेदार करील के कुंजों के लिए करोड़ों महलों

के सुखों को भी न्योछावर करने को तैयार हैं। आशय यह है कि वे महलों की सुख-सुविधा त्यागकर भी उस ब्रजभूमि पर रहना पसंद करते हैं।

(ख) एक गोपी कृष्ण की मधुर-मोहिनी मुसकान पर इतनी मुग्ध है कि उससे कृष्ण की मोहकता झेली नहीं जाती। वह पूरी तरह उस पर समर्पित हो गई है।

प्रश्न 8.

‘कालिंदी कुल कदंब की डारन’ में कौन-सा अलंकार है?

उत्तर-

‘कालिंदी कुल कदंब की डारन’ में ‘क’ वर्ण की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है।

प्रश्न 9.

काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए

या मुरली मुरलीधर की अधरा न धरी अधरा न धरौंगी॥

उत्तर-

इसमें यमक अलंकार का सौंदर्य है। ‘मुरली मुरलीधर’ में सभंग यमक है। ‘अधरान’ धरी ‘अधरा न’ में भी सभंग यमक है।

अधरान = अधरों पर

अधरा न = होठों पर नहीं।

अनुप्रास अलंकार का सौंदर्य भी देखते बनता है।

## रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 10.

प्रस्तुत सवैयाँ में जिस प्रकार ब्रजभूमि के प्रति प्रेम अभिव्यक्त हुआ है, उसी तरह आप अपनी मातृभूमि के प्रति अपने मनोभावों को अभिव्यक्त कीजिए।

उत्तर-

छात्र स्वयं करें।

प्रश्न 11.

रसखान के इन सवैयाँ का शिक्षक की सहायता से कक्षा में आदर्श वाचन कीजिए। साथ ही किन्हीं दो



सवैयों को कंठस्थ कीजिए।

उत्तर-

छात्र अध्यापक की मदद से स्वयं करें।

### पाठेतर सक्रियता

प्रश्न 12.

सूरदास द्वारा रचित कृष्ण के रूप-सौंदर्य संबंधी पदों को पढ़िए।

उत्तर-

छात्र स्वयं पढ़ें।

# अन्य पाठेतर हल प्रश्न

### लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.

रसखान अगले जन्म में मनुष्य बनकर कहाँ जन्म लेना चाहते थे और क्यों ?

उत्तर-

रसखान अगले जन्म में मनुष्य बनकर ब्रज क्षेत्र के गोकुल गाँव में जन्म लेना चाहते थे क्योंकि ब्रज उनके आराध्य श्रीकृष्ण की लीला भूमि रही है। ब्रज क्षेत्र में जन्म लेकर वह श्रीकृष्ण से जुड़ाव की अनुभूति करता है।

प्रश्न 2.

रसखान ने ऐसा क्यों कहा है, 'जो पसु हों तो कहा बस मेरो'?

उत्तर-

'जो पसु हों तो कहा बस मेरो' कवि रसखान ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि पशु की अपनी इच्छा नहीं चलती है। कोई भी उसके गले में रस्सी डालकर कहीं भी ले जा सकता है। उसकी इच्छा-अनिच्छा का कोई महत्व नहीं रहती है।

प्रश्न 3.

कवि किस गिरि का पत्थर बनना चाहते हैं और क्यों?

उत्तर-

कवि गोवर्धन पर्वत का पत्थर बनना चाहता है क्योंकि इंद्र के प्रकोप और क्रोध से ब्रजवासियों को मचाने के लिए गोवर्धन पर्वत को छाते की तरह उठाकर श्रीकृष्ण ने उनकी रक्षा की थी। गोवर्धन पर्वत का पत्थर बनकर कवि श्रीकृष्ण से जुड़ाव महसूस करता है।

प्रश्न 4.

‘कालिंदी कुल कदंब की डारन’ का भाव स्पष्ट करते हुए बताइए कि कवि ने इसका उल्लेख किस संदर्भ में किया

उत्तर-

‘कालिंदी कुल कदंब की डारन’ का भाव है-यमुना नदी के किनारे स्थित कदंब की डालों पर बसेरा बनाना। कवि ने इसका उल्लेख अगले जन्म में पक्षी बनकर श्रीकृष्ण से जुड़ी वस्तुओं का सान्निध्य पाने के संदर्भ में किया है।

प्रश्न 5.

गोपी किस तरह के वस्त्र धारण करना चाहती है और क्यों?

उत्तर-

गोपियाँ पीले रंग के वैसे ही वस्त्र पहनना चाहती हैं जैसा श्रीकृष्ण पहना करते थे क्योंकि वह श्रीकृष्ण के रूप सौंदर्य पर मोहित है और वैसा ही रूप बनाना चाहती है।

प्रश्न 6.

श्रीकृष्ण की मुसकान का गोपियों पर क्या असर होता है?

उत्तर-

श्रीकृष्ण की मुसकान अत्यंत आकर्षक एवं मादक है। गोपियाँ इस मुसकान को देखकर अपनी सुध-बुध खो बैठती हैं। उनका खुद अपने तन-मन पर नियंत्रण नहीं रह जाता है। वे विवश होकर स्वयं को नहीं संभाल पाती हैं।

प्रश्न 7.

गोपियाँ ब्रज के लोगों से क्या कहना चाहती हैं और क्यों ?

उत्तर-

गोपियाँ ब्रज के लोगों से यह कहना चाहती हैं कि कृष्ण के प्रभाव से बचने के लिए कानों में अँगुली रख

लेंगी तथा उनके गोधन को नहीं सुनेंगी पर श्रीकृष्ण की मुसकान देखकर वह स्वयं को नहीं सँभाल पाएंगी और तन-मन पर वश नहीं रहेगा।

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.

श्रीकृष्ण और उनसे जुड़ी वस्तुओं का सान्निध्य पाने के लिए कवि क्या-क्या त्यागने को तैयार है?

उत्तर-

रसखान श्रीकृष्ण के प्रति अगाध आस्था और लगाव रखते हैं। वे अपने आराध्य से जुड़ी हर वस्तु से प्रेम करते हैं। इन वस्तुओं को पाने के लिए वे अपना सर्वस्व त्यागने को तैयार हैं। वे लकुटी और कंबल के बदले तीनों लोकों का राज्य, उनकी गाँ चराने के बदले आठों सिधियाँ और नवों निधियों का सुख छोड़ने को तैयार हैं। श्रीकृष्ण जिन करील के कुंजों की छाया में मुरली बजाते हुए विश्राम किया करते थे उन कुंजों की छाया पाने के लिए कवि सोने के सैकड़ों महलों का सुख छोड़ने को तैयार है।

प्रश्न 2.

‘ब्रज के बन-बाग, तड़ाग निहारों’ का अशय स्पष्ट करते हुए बताइए कि कवि ने ऐसा क्यों कहा है?

उत्तर-

ब्रज के बन-बाग और तड़ाग देखने का आशय है-ब्रजभूमि पर स्थित उन बन-बाग और तालाबों को निहारते रहना जहाँ श्रीकृष्ण गाँ चराया करते थे और विश्राम किया करते थे। कवि ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि कवि रसखान श्रीकृष्ण का अनन्य भक्त है। वह श्रीकृष्ण से ही नहीं वरन उनसे जुड़ी हर वस्तु से अत्यधिक लगाव रखता है। इन वस्तुओं को पाने के लिए वह अपना हर सुख त्यागने को तैयार है। यह श्रीकृष्ण के प्रति कवि की भक्ति भावना की पराकाष्ठा है।

प्रश्न 3.

‘या मुरली मुरलीधर की अधरा न धरी अधरा न धरौंगी’ का भाव स्पष्ट करते हुए बताइए कि गोपी ने ऐसा क्यों कहा होगा?

उत्तर-

भाव यह है कि गोपी श्रीकृष्ण का रूप बनाने के लिए उनकी हर वस्तु धारण करने को तैयार है पर उनकी मुरली नहीं, क्योंकि गोपी मुरली से ईर्ष्या भाव रखती है। इसी मुरली ने गोपियों को कृष्ण से दूर कर रखा है। कृष्ण के होठों से लगकर मुरली गोपियों की व्यथा बढ़ाती है।

# कैदी और कोकिला

क्या गाती हो?

क्यों रह-रह जाती हो?

कोकिल बोलो तो!

क्या लाती हो?

सन्देश किसका है?

कोकिल बोलो तो!

**कैदी और कोकिला भावार्थ :-** उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने कारागार में बंद एक स्वतंत्रता सेनानी की मनोदशा को दर्शाया है। रात के घोर अंधकार में कारागृह के ऊपर जब वह एक कोयल को गाते हुए सुनता है, तो उसके मन में कई तरह के भाव एवं प्रश्न उत्पन्न होने लगते हैं। उसे ऐसा लगता है कि कोयल उसके लिए कोई संदेश लेकर आयी है, कोई प्रेरणा का स्रोत लेकर आयी है।

उससे इन प्रश्नों का बोझ सहा नहीं जाता और वह एक-एक कर के कोयल से सारे प्रश्न पूछने लगता है। वह सर्वप्रथम कोयल से पूछता है कि तुम क्या गा रही हो? फिर गाते-गाते तुम बीच-बीच में चुप क्यों हो जाती हो। वो कोयल से कहता है – हे कोयल! ज़रा बताओ तो, क्या तुम मेरे लिए कोई संदेश लेकर आयी हो? अगर कोई संदेश लेकर आयी हो, तो उसे कहते-कहते चुप क्यों हो जा रही हो और यह संदेश तुम्हें कहाँ से मिला है, ज़रा मुझे बताओ।

ऊँची काली दीवारों के घेरे में,

डाकू, चोरों, बटमारों के डेरे में,

जीने को देते नहीं पेट-भर खाना

मरने भी देते नहीं, तड़प रह जाना!

जीवन पर अब दिन-रात कड़ा पहरा है,

शासन है, या तम का प्रभाव गहरा है?  
हिमकर निराश कर चला रात भी काली,  
इस समय कालिमामयी जगी क्यों आली?

**कैदी और कोकिला भावार्थ :-** इन पंक्तियों में कवि ने अंग्रेज़ों के अत्याचार एवं उनके काले कारनामों को जनता के सामने प्रस्तुत किया है। पराधीन भारत में, जेल में बंद स्वतंत्रता सेनानी जेल के अंदर होने वाले अत्याचार एवं अपनी दयनीय स्थिति का वर्णन करते हुए कहता है कि उन्हें जेल के अंदर अंधकार में काली और ऊँची दीवारों के बीच डाकू, चोरों-उचककों के साथ रहना पड़ रहा है। जहाँ उसका कोई मान सम्मान नहीं है।

जबकि स्वतंत्रता सेनानियों के साथ इस तरह का बर्ताव नहीं किया जाना चाहिए। उन्हें जीने के लिए पेट-भर खाना भी नहीं दिया जाता और ना ही उन्हें मरने दिया जाता है। यानि कि उन्हें तड़पा-तड़पा कर जीवित रखना ही प्रशासन का उद्देश्य है। इस प्रकार उनकी स्वतंत्रता पूरी तरह से छीन ली गई है और उनके ऊपर रात-दिन कड़ा पहरा लगा होता है।

अंग्रेजी शासन उनके साथ घोर अन्याय कर रहा है और अंग्रेज़ों के राज में स्वतंत्रता सेनानी को आकाश में भी घोर अंधकार रूपी निराशा दिख रही है, जहाँ न्याय रूपी चंद्रमा का थोड़ा-सा भी प्रकाश नहीं है। इसलिए स्वतंत्रता सेनानी के माध्यम से कवि कोयल से पूछता है – हे कोयल! इतनी रात को तू क्यों जाग रही है और दूसरों को क्यों जगा रही है? क्या तू कोई संदेश लेकर आयी है?

क्यों हूक पड़ी?  
वेदना बोझ वाली-सी;  
कोकिल बोलो तो!  
क्या लुटा?  
मृदुल वैभव की  
रखवाली-सी,  
कोकिल बोलो तो!

**कैदी और कोकिला भावार्थ :-** इन पंक्तियों में कवि ने कोयल के स्वर में निहित वेदना को

बोझ के सामान बताकर, पराधीन भारतवासियों के मन में छुपी वेदना की तरफ इशारा किया है। जेल में बंद स्वतंत्रता सेनानी कोयल की आवाज़ में दर्द का अनुभव करता है। उसे ऐसा लगता है कि कोयल ने अंग्रेज़ सरकार द्वारा किये जाने वाले अत्याचार को देख लिया है। इसीलिए उसके कंठ से मीठी एवं मधुर ध्वनि के बजाय वेदना का स्वर सुनाई पड़ रहा है, जिसमें कोयल के दर्द की हूक शामिल है। कवि के अनुसार कोयल अपनी वेदना सुनाना चाहती है।

इसीलिए कवि कोयल से पूछ रहा है – कोयल! बोलो तो तुम्हारा क्या लूट गया है, जो तुम्हारे कंठ से वेदना की ऐसी हूक सुनाई पड़ रही है? कोयल तो सबसे मीठी एवं सुरीली आवाज के लिए विख्यात है, जिसे गाते हुए सुनकर कोई भी मनुष्य प्रसन्न हो उठता है। लेकिन, जेल में बंद स्वतंत्रता सेनानी को कोयल की आवाज़ ना तो सुरीली लगी और न ही मीठी लगी, बल्कि उसे कोयल की आवाज़ में दुःख और वेदना की अनुभूति हुई। इसीलिए वह व्याकुल हो उठा और कोयल से बार-बार पूछने लगा कि बताओ कोयल तुम्हारे ऊपर क्या विपदा आई है?।

क्या हुई बावली?  
अर्ध रात्रि को चीखी,  
कोकिल बोलो तो!  
किस दावानल की  
ज्वालायें हैं दीखी?  
कोकिल बोलो तो!

**कैदी और कोकिल भावार्थ :-** स्वतंत्रता सेनानी को कोयल का इस तरह अंधकार से भरी आधी रात में गाना (चीखना), बड़ा ही अस्वाभाविक लगा। इसी वजह से उसने कोयल को बावली कहते हुए उससे पूछा है कि तुम्हें क्या हुआ है? तुम इस तरह आधी रात में क्यों चीख रही हो? क्या तुमने जंगल में लगी हुई आग देख ली है? यहाँ पर कवि ने जंगल की भयावह आग के रूप में अंग्रेज़ी सरकार की यातनाओं की तरफ इशारा किया है। उन्हें ऐसा लग रहा है कि कोयल ने अंग्रेज़ी सरकार की हैवानियत देख ली है, इसलिए वह चीख-चीख कर ये बात सबको बता रही है।

क्या? -देख न सकती जंजीरों का गहना?  
हथकड़ियाँ क्यों? ये ब्रिटिश-राज का गहना,  
कोल्हू का चरक चूँ?- जीवन की तान,  
गिट्टी पर अंगुलियों ने लिखे गान!  
हूँ मोट खींचता लगा पेट पर जूआ,  
खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कूँआ।  
दिन में करुणा क्यों जगे, रुलानेवाली,  
इसलिए रात में ग़जब ढा रही आली?

**कैदी और कोकिला भावार्थ :-** कवि को यह लगता है कि कोयल उसे जंजीरों में बंधा हुआ देखकर यूँ चीख पड़ी है। इसलिए कैदी कोयल से कहता है – क्या तुम हमें इस तरह जंजीरों में लिपटे हुए नहीं देख सकती हो? अरे ये तो अंग्रेज़ी सरकार द्वारा हमें दिया गया गहना है। अब तो कोल्हू चलने की आवाज हमारे जीवन का प्रेरणा-गीत बन गया है। दिन-भर पत्थर तोड़ते-तोड़ते हम उन पत्थरों पर अपनी उंगलियों से भारत की स्वतंत्रता के गान लिख रहे हैं। हम अपने पेट पर रस्सी बांध कर कोल्हू का चरसा चला-चला कर, ब्रिटिश सरकार की अकड़ का कुआँ खाली कर रहे हैं।

अर्थात् हम इतनी यातनाएं सहने और भूखे रहने के बाद भी अंग्रेज़ी शासन के सामने नहीं झुक रहे हैं, जिससे उनकी अकड़ ज़रूर कम हो जाएगी। इसी वजह से दिन में हमारे अंदर यातनाओं को सहने के लिए ग़जब का आत्मबल आ जाता है, जिससे हमारे अंदर कोई करुणा उत्पन्न नहीं होती और ना ही हम रोते हैं। शायद तुम्हें यह बात पता चल गई है, इसीलिए शायद तुम मुझे रात में सांत्वना देने आयी हो। परन्तु, तुम्हारे इस वेदना भरे स्वर ने मेरे ऊपर ग़जब ढा दिया है और मेरे मन को व्याकुल कर दिया है।

इस शांत समय में,  
अंधकार को बेध, रो रही क्यों हो?  
कोकिल बोलो तो!

चुपचाप, मधुर विद्रोह-बीज  
इस भाँति बो रही क्यों हो?  
कोकिल बोलो तो!

**कैदी और कोकिला भावार्थ :-** आगे कवि कोयल से कहता है कि इस आधी-रात्रि में तुम अँधेरे को चीरते हुए इस तरह क्यों रो रही हो? कोयल बोलो तो, क्या तुम हमारे अंदर अंग्रेज़ी सरकार के खिलाफ़ विद्रोह के बीज बोना चाहती हो? इस तरह कवि ने जेल में कैद एक स्वतंत्रता सेनानी के मन की दशा का वर्णन किया है कि किस प्रकार कोयल यह गीत गा-गा कर भारतीयों में देश-प्रेम एवं देशभक्ति की भावना को मजबूत बनाना चाहती है, ताकि वे अंग्रेज़ों की परतंत्रता से मुक्ति पा सकें।

काली तू, रजनी भी काली,  
शासन की करनी भी काली,  
काली लहर कल्पना काली,  
मेरी काल कोठरी काली,  
टोपी काली, कमली काली,  
मेरी लौह-श्रृंखला काली,  
पहरे की हुंकृति की ब्याली,  
तिस पर है गाली, ऐ आली!

**कैदी और कोकिला भावार्थ :-** प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने अंग्रेज़ी शासन-काल के दौरान जेलों में स्वतंत्रता सेनानियों के साथ हो रहे घोर अत्याचार का वर्णन किया है। काले रंग को हमारे समाज में फैले दुःख और अशांति का प्रतीक माना गया है। इसीलिए कवि ने यहाँ हर चीज को काला बताया है। कवि कैदी के माध्यम से कह रहा है कि कोयल तू खुद काली है, ये रात भी घोर काली है और ठीक इसी तरह अंग्रेज़ी सरकार द्वारा की जाने वाली सारी करतूतें भी काली हैं और जेल की काली चारदीवारी में चलने वाली हवा भी काली है।

मैंने जो टोपी पहनी हुई है, वह भी काली है और जो कम्बल मैं ओढ़ता हूँ वह भी काला है। मैंने जो लोहे की जंजीरें पहन रखी हैं, वह भी काली है और इसी वजह से हमारे अंदर आने वाली कल्पनाएं भी काली हो गई हैं। इतनी यातनाओं को सहने के बाद, हमें हमारे ऊपर



दिन-भर नजर रखने वाले पहरेदारों की हुंकार और गाली भी सुननी पड़ती हैं। जो किसी काले सांप की भाँति हमें डँसने को दौड़ती हैं।

इस काले संकट-सागर पर

मरने की, मदमाती!

कोकिल बोलो तो!

अपने चमकीले गीतों को

क्योंकर हो तैराती!

कोकिल बोलो तो!

**कैदी और कोकिला भावार्थ :-** कवि यह नहीं समझ पा रहा है कि कोयल स्वतंत्र होने के बाद भी इस अँधेरी आधी रात में कारागार के ऊपर मंडराकर अपनी मधुर आवाज़ में गीत क्यों गा रही है। क्या वह इस संकट में खुद को इसलिए ले आयी है कि उसने मरने की ठान ली है। इसका कोई लाभ होने वाला नहीं है। इसलिए कैदी कोयल से पूछ रहा है – हे कोयल! बताओ तुम क्यों इस विपरीत परिस्थिति में आज़ादी की भावना जगाने वाले गीत गा रही हो?

तुझे मिली हरियाली डाली,

मुझे मिली कोठरी काली!

तेरा नभ-भर में संचार

मेरा दस फुट का संसार!

तेरे गीत कहावें वाह,

रोना भी है मुझे गुनाह!

देख विषमता तेरी-मेरी,

बजा रही तिस पर रणभेरी!

**कैदी और कोकिला भावार्थ :-** प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने स्वतंत्र कोयल एवं बंदी कैदी की मनःस्थिति की तुलना बड़े ही मार्मिक ढंग से की है। जहाँ एक ओर कोयल पूरी तरह से स्वतंत्र, किसी भी पेड़ की डाली में जाकर बैठ सकती है। कहीं पर भी विचरण कर सकती है और अपने मनचाहे गीत गा सकती है। वहीं दूसरी ओर कैदी के लिए अंधकार से भरी 10

फुट की जेल की चारदीवारी है। जिसमें उसे अपना जीवन बिताना है, वह वहाँ अपनी इच्छानुसार कुछ भी नहीं कर सकता।

कोयल के मधुर गान को सुनकर सब लोग वाह-वाह करते हैं। वहीं किसी कैदी के रोने को कोई सुनता तक नहीं है। इस प्रकार, कैदी और कोयल की परिस्थिति में ज़मीन-आसमान का फर्क है, मगर, फिर भी कोयल युद्ध का संगीत क्यों बजा रही है? कैदी कोयल से जानना चाहता है कि आखिर कोयल के इस तरह रहस्यमय ढंग से गाने का क्या मतलब है?

इस हृकृति पर,  
अपनी कृति से और कहो क्या कर दूँ?  
कोकिल बोलो तो!  
मोहन के व्रत पर,  
प्राणों का आसव किसमें भर दूँ!  
कोकिल बोलो तो!

**कैदी और कोकिला भावार्थ :-** प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने कोयल और कैदी दोनों के अंदर स्वतंत्रता की प्रबल भावना को दिखाया है। जहां कोयल अपने जोशीले गान से देशवासियों में विद्रोह को जागृत कर रही है, वहीं कैदी स्वतंत्रता के लिए लगातार अंग्रेज़ी सरकार की यातनायें सहन कर रहा है। इसीलिए कवि ने यहाँ कोयल की आवाज को कैदी के लिए आजादी का संदेश बताया है। जिसे सुनकर कैदी कुछ भी करने के लिए तैयार हो सकता है।

इसलिए इन पंक्तियों में कैदी कोयल से पूछ रहा है कि हे कोयल! मुझे बता कि मैं गांधी जी द्वारा चलाये जा रहे इस स्वतंत्रता संग्राम में किस तरह अपने प्राण झोंक दूँ? मैं तम्हारे संगीत को सुनकर अपनी रचनाओं के द्वारा क्रान्ति की ज्वाला भड़काने वाली अग्नि तो पैदा कर रहा हूँ, लेकिन तुम मुझे बताओ कि मैं देश की आज़ादी के लिए और क्या कर सकता हूँ?

## पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1.

कोयल की कूक सुनकर कवि की क्या प्रतिक्रिया थी?

उत्तर-

कोयल की कूक सुनकर कवि को लगा कि वह मानो उसे कुछ कहना चाहती है। या तो वह उसे निरंतर लड़ते रहने की प्रेरणा देना चाहती है या उसकी यातनाओं के दर्द को बाँटना चाहती है। उसे लगता है कि कोकिल कवि के कष्टों को देखकर आँसू बहा रही है और चुपचाप अँधेरे को बेधकर विद्रोह की चेतना जगा रही है। इसलिए अंत में कवि उसके इशारों पर आत्म-बलिदान करने को तैयार हो जाता है।

प्रश्न 2.

कवि ने कोकिल के बोलने के किन कारणों की संभावना बताई?

उत्तर-

कवि ने कोकिल के बोलने पर निम्नलिखित कारणों की संभावना जताई है-

- कोयल जेल में बंद क्रांतिकारियों को देशवासियों की दुर्दशा के बारे में बताने आयी है।
- कोयल कैदी क्रांतिकारियों को धैर्य बँधाने एवं दिलासा देने आई है।
- कोयल कैदी क्रांतिकारियों के दुखों पर मरहम लगाने आई है।
- कोयल पागल हो गई है जो आधी रात में चीख रही है।

प्रश्न 3.

किस शासन की तुलना तम के प्रभाव से की गई है और क्यों?

उत्तर-

ब्रिटिश शासन की तुलना तम के प्रभाव से की गई है।

क्यों ब्रिटिश शासकों ने बेकसूर भारतीयों पर घोर अत्याचार किए। उन्होंने स्वतंत्रता सेनानियों को कारागृह में तरह-तरह की यातनाएँ दीं। उन्हें कोल्हू के बैल की तरह जोता गया।

प्रश्न 4.

कविता के आधार पर पराधीन भारत की जेलों में दी जाने वाली यंत्रणाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर-

पराधीन भारत की जेलों में भारतीयों को पशुओं की भाँति-रखा जाता था। उन्हें ऐसी यातनाएँ दी जाती थीं कि सुनकर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इनमें से कुछ निम्नलिखित हैं-

- उन्हें ऊँची-ऊँची दीवार वाली जेलों में रखा जाता था।
- उन्हें दस फुट की छोटी-छोटी कोठरियों में रखा जाता था।
- उन्हें भरपेट खाना नहीं दिया जाता था।
- उनके साथ पशुओं-सा व्यवहार किया जाता था।
- उन्हें बात-बात पर गालियाँ दी जाती थीं।
- उन्हें तड़प-तड़पकर मरने के लिए छोड़ दिया जाता था।

प्रश्न 5.

भाव स्पष्ट कीजिए

(क) मृदुल वैभव की रखवाली-सी, कोकिल बोलो तो!

(ख) हूँ मोट खींचता लगा पेट पर जूआ, खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कुँआ।

उत्तर-

(क) कवि के अनुसार, वैसे तो संसार में कष्ट-ही-कष्ट हैं। यदि कहीं कुछ मृदुलता और सरसता बची है तो वह कोयल के मधुर स्वर में बची है। अतः कोयल मृदुलता की रखवाली करने वाली है। वह उससे पूछता है कि आखिर वह जेल में अपना मधुर स्वर गुँजाकर उसे क्या कहना चाहती है!

(ख) इसमें जेल की असहनीय यातनाएँ झेलता हुआ कवि स्वाभिमानपूर्वक कहता है कि वह अपने पेट पर कोल्हू का जूआ बाँधकर चरसा चला रहा है। आशय यह है कि उससे पशुओं जैसा सख्त काम लिया जा रहा है। फिर भी वह हार नहीं मान रहा। इससे ब्रिटिश सरकार की अकड़ ढीली पड़ रही है। अंग्रेजों को बोध हो गया है कि अब अत्याचार करने से भी वे सफल नहीं हो सकते।

प्रश्न 6.

अर्धरात्रि में कोयल की चीख से कवि को क्या अंदेशा है?

उत्तर-

आधी रात में कोयल की चीख सुनकर कवि को यह अंदेशा होता है कि उसने भारतीयों के आक्रोश एवं असंतोष की ज्वाला देख ली होगी। यह ज्वाला जंगल में लगने वाली आग के समान भयंकर रही होगी। कोयल उसी ज्वाला (क्रांति) की सूचना देने जेल परिसर के पास आई है।

प्रश्न 7.

कवि को कोयल से ईर्ष्या क्यों हो रही है?

उत्तर-

कवि को कोयल से इसलिए ईर्ष्या हो रही है क्योंकि कोयल स्वतंत्र है, जबकि कवि बंदी है। कोयल हरियाली का आनंद ले रही है, जबकि कवि दस फुट की अँधेरी कोठरी में जीने के लिए विवश है। कोयल के गान की सभी सराहना करते हैं, जबकि कवि के लिए रोना भी गुनाह हो गया है।

प्रश्न 8.

कवि के स्मृति-पटल पर कोयल के गीतों की कौन सी मधुर स्मृतियाँ अंकित हैं, जिन्हें वह अब नष्ट करने पर तुली है?

उत्तर-

कवि के स्मृति पटल पर कोयल की कर्णप्रिय अत्यंत मधुर स्वर की स्मृतियाँ अंकित हैं, जिन्हें अब वह नष्ट करने पर तुली है।

प्रश्न 9.

हथकड़ियों को गहना क्यों कहा गया है?

उत्तर-

गहना उस आभूषण को कहते हैं, जो धारणकर्ता का गौरव और सौंदर्य बढ़ाए। पं. माखनलाल चतुर्वेदी जैसे क्रांतिकारी, जिन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए स्वयं प्रेरणा से संघर्ष का मार्ग अपनाया था, जेल को अपना प्रिय आवास तथा हथकड़ियों को गहना समझते थे। उन्हें किसी गलत कार्य के लिए हथकड़ी नहीं पहननी पड़ी। उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति के महान उद्देश्य के लिए हथकड़ियाँ स्वीकार कीं, अतः उनसे उनका गौरव बढ़ा। समाज ने उन्हें उन हथकड़ियों के लिए प्रतिष्ठा दी। इसलिए उन्होंने हथकड़ियों को गहना कहा।

प्रश्न 10.

‘काली तू .... ऐ आली!’-इन पंक्तियों में ‘काली’ शब्द की आवृत्ति से उत्पन्न चमत्कार का विवेचन कीजिए।

उत्तर-

‘काली तू ... ऐ आली!’ इन पंक्तियों में काली शब्द की आवृत्ति हुई है। इस शब्द का अर्थ भी उसके संदर्भानुसार है। संदर्भ के अनुसार काली शब्द के निम्नलिखित अनेक अर्थ हैं-

- हथकड़ियाँ रात, कोयल आदि का रंग काला बताने के लिए।
- अंग्रेजों के अन्यायपूर्ण कारनामों बताने के लिए।

- पराधीन भारतीयों का भविष्य अंधकारमय बताने के लिए।
- अंग्रेजों के प्रति भारतीयों के मन में उठने वाले आक्रोश के संबंध में।

प्रश्न 11.

काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए

(क) किस दावानल की ज्वालाएँ हैं दीखीं?

(ख) तेरे गीत कहावें वाह, रोना भी है मुझे गुनाह!

देख विषमता तेरी-मेरी, बजा रही तिस पर रणभेरी!

उत्तर-

(क)

- इस काव्य-पंक्ति में जेल की यातनाओं को दावानल की ज्वालाएँ कहा गया है। ब्रिटिश जेलों की असहनीय यातनाओं के लिए यह उपमान सटीक बन पड़ा है।
- इसमें कोयल की कूक को चीख मानकर कवि उससे प्रश्न कर रहा है। कोयल का मानवीकरण प्रभावी बन पड़ा है।
- दावानल की ज्वालाएँ में रूपकातिशयोक्ति तथा अनुप्रास अलंकार हैं।
- प्रश्न शैली का प्रयोग प्रभावी बन पड़ा है।

(ख)

- इसमें कोयल की मधुर तान और जेल में बंद कवि की यातनाओं का तुलनात्मक वर्णन बहुत मार्मिक बन पड़ा है। कोयले सब जगह प्रशंसा पाती है, जबकि कवि के लिए रोना भी संभव नहीं है।
- कोयल का मानवीकरण बहुत सुंदर बन पड़ा है। कवि को प्रतीत होता है कि कोयल रणभेरी बजाने वाली स्वतंत्रता-सेनानी है और अपनी कूक द्वारा संघर्ष की प्रेरणा दे रही है।
- भाषा अत्यंत सरल, प्रवाहमयी, संगीतात्मक तथा तुकांत है।
- 'तेरी-मेरी' में अनुप्रास और स्वरमैत्री का संगम है। रचना और अभिव्यक्ति

**रचना एवं अभिव्यक्ति**

प्रश्न 12.

कवि जेल के आसपास अन्य पक्षियों का चहकना भी सुनता होगा लेकिन उसने कोकिला की ही बात क्यों की है?

उत्तर-

अल्पपक्षियों का चहकना सुनकर भी कवि केवल कोयल से ही बातें करता है क्योंकि कोयले का स्वर अन्य पक्षियों की अपेक्षा मधुर एवं कर्णप्रिय होता है। कोयल ही आधी रात के सुनसान में कैंक रही थी। कोयल की कैंक में ही उसे क्रांतिकारियों का संदेश होने की संभावना लगी।

प्रश्न 13.

आपके विचार से स्वतंत्रता सेनानियों और अपराधियों के साथ एक-सा व्यवहार क्यों किया जाता होगा?

उत्तर-

ब्रिटिश सरकार भारत की स्वतंत्रता के विरोध में थी। वह क्रांतिकारियों को दबाना चाहती थी। इसलिए वह उन्हें शारीरिक तथा मानसिक रूप से पीड़ित करती थी। उन्हें मानसिक रूप से तोड़ने के लिए उन्हें चोरों, अपराधियों, बटमारों के साथ रखती थी तथा आम अपराधियों जैसा दुर्व्यवहार करती थी।

### पाठेतर सक्रियता

प्रश्न 14.

पराधीन भारत की कौन-कौन सी जेलें मशहूर थीं, उनमें स्वतंत्रता सेनानियों को किस-किस तरह ही यातनाएँ दी जाती थीं? इस बारे में जानकारी प्राप्त कर जेलों की सूची एवं स्वतंत्रता सेनानियों के नामों को राष्ट्रीय पर्व पर भित्ति पत्रिका के रूप में प्रदर्शित करें।

उत्तर-

पराधीन भारत में निम्नलिखित जेलें मशहूर थीं-

- अंडमान निकोबार की जेल
- पोरबंदर की जेल
- इलाहाबाद की नैनी जेल
- कोलकाता जेल
- पूना की यरवदा जेल

इन जेलों में स्वतंत्रता सेनानियों को अमानवीय स्थितियों में रखा जाता था। उन्हें सीलन भरे छोटे-छोटे कमरे में रखा जाता था ताकि वे बीमार हो जाएँ। उन्हें पेटभर खाना नहीं दिया जाता था। उनसे जानवरों की भाँति काम करवाया जाता था। उन्हें बार-बार पर गालियाँ दी जाती थीं और मारा-पीटा जाता था। भित्ति पत्रिका पर प्रदर्शन का कार्य छात्र स्वयं करें।

प्रश्न 15.

स्वतंत्र भारत की जेलों में अपराधियों को सुधारक हृदय परिवर्तन के लिए प्रेरित किया जाता है। पता लगाइए कि इस दिशा में कौन-कौन से कार्यक्रम चह रहे हैं ?

उत्तर-

- स्वतंत्रता भारत की जेलों में अपराधियों को सुधार कर उनका हृदय परिवर्तन करने के लिए अनेक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं; जैसे
- उन्हें लघु एवं कुटीर उद्योगों का प्रशिक्षण दिया जाता है।
- उन्हें नशा न करने की प्रेरणा देने हेतु नशा मुक्ति केंद्र चलाया जाता है।
- उन्हें योग-व्यायाम आदि सिखाया जाता है।
- उनकी शिक्षा का प्रबंध किया जाता है।
- अनेक कार्यक्रमों के द्वारा उनका मनोरंजन किया जाता है।
- समय-समय पर उनके लिए प्रवचन आयोजित किए जाते हैं।

## अन्य पाठेतर हल प्रश्न

लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1.

‘जीवन पर अब दिन-रात कड़ा पहरा है’-ऐसा किसने कहा है और क्यों?

उत्तर-

‘जीवन पर अब दिन-रात कड़ा पहरा है’-ऐसा कवि ने कहा है क्योंकि कवि को स्वतंत्रता की माँग करने के कारण जेल में कैदकर दिया गया है। उसे वहाँ भरपेट भोजन नहीं दिया जाता है और मरने भी नहीं दिया जाता है। कवि एवं प्रसिद्ध क्रांतिकारियों की मृत्यु जेल में होने पर अंग्रेजों के विरुद्ध वातावरण बनने का भय था।

प्रश्न 2.

कवि को हिमकर किस तरह निराश कर चला गया?

उत्तर-



स्वतंत्रता सेनानी कवि को जेल में कैद कर दिया गया था। रात के सुनसान समय में वह चंद्रमा से बातें करते हुए उसके सहारे समय बिता रहा था परंतु रात बीतने से पहले ही चंद्रमा छिप गया। अब कवि अकेला पड़ गया। इस तरह हिमकर उसे निराश करके चला गया।

प्रश्न 3.

कवि ने किसकी वेदना को बोझ के समान बताया है और क्यों?

उत्तर-

कवि पराधीन भारत में रह रहे भारतीयों की वेदना को बोझ के समान बताया है क्योंकि पराधीन भारतीयों के साथ अंग्रेज़ नाना प्रकार की यंत्रनाएँ देते थे। वे निर्दोषों पर भी अत्याचार करते थे। अंग्रेजों का यह क्रूर व्यवहार भारतीयों की बोझ जैसी भारी वेदना बन गया था।

प्रश्न 4.

कोयल असमय चीख पड़ी थी। उसके इस प्रकार चीखने के कारणों के बारे में कवि क्या-क्या कल्पनाएँ करता है।

उत्तर-

कोयल के असमय चीखने के कारणों के बारे में कवि कई कल्पनाएँ करता है-

- कोयल ने भारतीय के आक्रोश रूपी दावनल की ज्वालाएँ देख ली हैं।
- कोयल अपने जिस मृदुल वैभव की रखवाली कर रही थी, शायद वह लूट लिया गया।

प्रश्न 5.

ब्रिटिश राज का गहना किसे कहा गया है और क्यों? पठित पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

अंग्रेज़ सरकार ने क्रांतिकारियों और स्वतंत्रता सेनानियों को जेल में रखकर हथकड़ियाँ पहना दी थी। इन हथकड़ियों को ब्रिटिश राज का गहना कहा गया है। ये हथकड़ियाँ भारतमाता को आजाद कराने के पवित्र उद्देश्य को पूरा करते हुए मिली थी, इसलिए इन्हें गहना कहा गया है।

प्रश्न 6.

कवि की अँगुलियाँ किस पर गाने लिख रही थीं और कैसे?

उत्तर-

पराधीन भारत की जेलों में बंद कैदियों से पशुओं के समान काम लिया जाता था। उनसे मोट से पानी

खिंचवाने, गिट्टियाँ तोड़ने जैसा काम लिया जाता था। गिट्टियाँ तोड़ने से उठने वाली आवाज़ों को सुन कर लगता था कि ये कवि की अँगुलियों द्वारा लिखे गए गीत हैं।

प्रश्न 7.

‘तिस पर है गाली, ऐ आली!’ पंक्ति के आधार पर जेल के कर्मचारियों के व्यवहार का वर्णन कीजिए।

उत्तर-

पराधीन भारत की जेलों में स्वतंत्रता की माँग करने वाले तथा क्रांतिकारियों के रूप में बंदी लोगों के साथ निर्मम व्यवहार किया जाता था। जेल के कर्मचारी उन्हें बात-बात पर गालियाँ देते थे और अपमानित करते थे। इस स्थिति में कैदी अपमान का चूट पीकर रह जाते थे।

प्रश्न 8.

जेल में कवि के रोने को भी गुनाह क्यों माना जाता था?

उत्तर-

पराधीन भारत में अंग्रेजों द्वारा भारतीयों के साथ अमानवीय व्यवहार किया था। वे निर्दोष भारतीयों को भी जेल में डाल देते थे। ऐसी ही दशा में स्वतंत्रता के लिए आवाज उठाने वाले कवि को भी जेल में डाल दिया गया। यहाँ उसे रोने भी नहीं दिया जाता था। क्योंकि कवि का रोना सुनकर अन्य कैदियों के मन में कहीं उसके प्रति सहानुभूति और अंग्रेजों के प्रति आक्रोश भड़क सकता था।

प्रश्न 9.

जेल में कैदी के रूप में कवि को क्या-क्या काम करना पड़ा?

उत्तर-

कैदी के रूप में कवि को-

- पेट पर जूआ रखकर मोट खींचना पड़ा।
- उसे पत्थर के टुकड़े तथा गिट्टियाँ तोड़नी पड़ीं।
- बैलों की जगह कोल्हू में उसे जुतकर काम करना पड़ा।

प्रश्न 10.

‘कैदी और कोकिला’ कविता के आधार पर कोयल और कवि की स्थिति में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

कोयल और कवि की स्थिति में अंतर यह है कि-

- कोयल हरी-भरी डालियों पर कैक-कूककर लोगों का ध्यान खींच रही है, जबकि कवि की किस्मत में जेल की काली कोठरी लिखी है।
- कोयल आज़ादी से आकाश में उड़ती-फिर रही है जबकि कवि की दुनिया दस फुट की कोठरी में सिमटकर रह गई
- कोयल के गीतों पर लोग वाह-वाह कह उठते हैं जबकि कवि का रोना भी अपराध समझा जाता है।

## दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.

कवि को जेल क्यों भेजा गया होगा, अपनी कल्पना के आधार पर लिखिए।

उत्तर-

स्वतंत्रता सभी को प्रिय होती है। कवि भी स्वतंत्र रहना चाहता था। दुर्भाग्य से उस समय देश अंग्रेजों का गुलाम था। कवि ने लोगों को अपनी खोई आज़ादी पाने की प्रेरणा देते हुए देश प्रेम बढ़ाने एवं मातृभूमि को स्वतंत्र कराने के लिए अपना तन-मन-धन समर्पित करने वाली कविताएँ लिखी होंगी। यह बात अंग्रेजों को नागवार गुजरी और उन्होंने कवि की रचनाएँ जब्त कर ली होंगी। उन्होंने कवि को ऐसी कविताएँ लिखने से मना किया होगा पर स्वाभिमान की कवि ने मौखिक रूप से लोगों में देश प्रेम जगाने तथा स्वतंत्रता की चिनकारी भड़काने का काम किया होगा। इससे क्रुद्ध अंग्रेजों ने कवि को जेल भेज दिया होगा।

प्रश्न 2.

अंग्रेजों ने कवि को बौद्धिक रूप से अशक्त करने का प्रयास क्यों किया और कैसे?

उत्तर-

अंग्रेजों की दृष्टि में आजादी की माँग करना सबसे बड़ा अपराध था। वे इसे राजद्रोह से कम नहीं समझे थे। ऐसे क्रांतिकारियों का दमन करने के लिए वे तरह-तरह के हथकंडे अपनाते थे। कवि लेखक, एवं विचारशील लोगों के साथ वे इस तरह अत्याचार करते थे कि बौद्धिक रूप से कमज़ोर या अशक्त हो जाएँ और उनकी वैचारिक क्षमता शून्य हो जाय। उन्होंने कवि को जेल की उस कोठर में बंद कर दिया जिसमें डाकू, चोर, लुटेरे बटमार आदि बंद थे। ऐसे में कवि को विचारविमर्श करने के लिए ऐसे लोग मिलते थे जो चोरी-छीना झपटी से आगे की बात सोच ही नहीं सकते थे। इस तरह वे कवि को बौद्धिक रूप से अशक्त करने का प्रयास कर रहे थे।

प्रश्न 3.

‘मरने भी देते नहीं, तड़प रह जाना’ के आलोक में बताइए कि अंग्रेज़ कवि जैसे कैदियों को मरने भी नहीं देते थे, क्यों?

उत्तर-

पराधीन भारत की जेलों में बंद स्वतंत्रता सेनानियों एवं क्रांतिकारियों पर अंग्रेज़ तरह-तरह के अत्याचार करते थे। उन्हें बैलों की जगह कोल्हू चलाने और मोट खींचने जैसे काम करने को विवश कर देते थे। ऐसे कठोर शारीरिक श्रम के बाद भी वे न उन्हें पेट भर खाना देते थे और न मरने देते थे। कवि जैसे कैदियों को न मरने देने का कारण यह था कि ये क्रांतिकारी एवं स्वतंत्रता सेनानी अपने कार्यों से प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय होते थे। जेल में इनकी मृत्यु होने पर भारतीय जन का आक्रोश भड़क सकता था, जिसे नियंत्रित करना कठिन हो जाता था। ऐसे में उनके विरुद्ध घृणा का वातावरण बनने का भय था।

# ग्राम श्री

काव्यांश 1 .

फैली खेतों में दूर तलक  
मखमल की कोमल हरियाली ,  
लिपटीं जिससे रवि की किरणें  
चाँदी की सी उजली जाली !  
तिनकों के हरे हरे तन पर  
हिल हरित रुधिर है रहा झलक ,  
श्यामल भू तल पर झुका हुआ  
नभ का चिर निर्मल नील फलक !

भावार्थ -

कवि खेतों में फैली हरियाली को देखकर कहते हैं कि जहां तक नजर जाती है वहां तक खेतों में मखमल के जैसी हरियाली ही हरियाली दिखाई दे रही हैं और उस हरियाली के ऊपर जब सूरज की किरणें पड़ती हैं तो ऐसा लगता है मानो उससे कोई चांदी की जाली लिपट गई हो या उसके ऊपर कोई चांदी की जाली बिछा रखी हो।

और नये-नये उगे हरे-हरे घास के तिनकों व पत्तियों के ऊपर पड़ी ओस की बूंदों तो ऐसी प्रतीत होती हैं मानो जैसे हरा रुधिर यानी खून उनमें बह रहा हो। यहां पर घास के हरे तिनकों का मानवीकरण किया गया है।

पूरी प्रकृति को निहारने पर कवि को ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि धरती के सांवलेपन को सदा आकाश में छाई रहने वाली निर्मल स्वच्छ नीलिमा ने ढक रखा हो। यानि हरी भरी धरती के ऊपर फैला नीला आकाश ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो जैसे उसने धरती के ऊपर अपना आँचल फैला रखा हो।

## काव्यांश 2.

रोमांचित सी लगती वसुधा  
आई जौ गेहूँ में बाली,  
अरहर सनई की सोने की  
किंकिणियाँ हैं शोभाशाली !  
उड़ती भीनी तैलाक्त गंध  
फूली सरसों पीली पीली ,  
लो , हरित धरा से झाँक रही  
नीलम की कलि , तीसी नीली !

भावार्थ –

उपरोक्त पंक्तियों में कवि खेतों पर खड़ी फसलों व रंग बिरंगे फूलों से सजी धरती के सौंदर्य को देखकर मंत्रमुग्ध हैं। वो कहते हैं कि इस हरियाली को देखकर धरती भी रोमांचित है , अति प्रसन्न है क्योंकि अब जौ और गेहूँ में बालियां आ चुकी हैं।

अरहर (एक प्रकार की दाल) और सनई (एक रेशेदार पौधा , जो रस्सी बनाने के काम आता है) के पौधों में खिले पीले फूल व कलियों को देखकर ऐसा लग रहा है मानो जैसे प्रकृति ने सोने की करधनी (कमर में बांधने का आभूषण) बांध रखी हो जो हवा से हिल कर मधुर आवाज में बज रही है।

कवि आगे कहते हैं कि खेतों में पीली-पीली सरसों अब पूरी तरह से फूल चुकी है जिसमें से निकलने वाली तेल की हल्की-हल्की गंध हवा में फैल रही है। तीसी (अलसी का पौधा) के नीले-नीले खिले हुए फूलों को देख कर कवि को ऐसा लग रहा है मानो नीलम (रत्न) की कलियां हरी भरी धरती से झांक रही हो यानि अलसी का पौधों पर खिले नीले फूल बहुत सुंदर दिखाई दे रहे हैं।

### काव्यांश 3.

रंग रंग के फूलों में रिलमिल  
हंस रही सखियाँ मटर खड़ी ,  
मखमली पेटियों सी लटकीं  
छीमियाँ, छिपाए बीज लड़ी !  
फिरती है रंग रंग की तितली  
रंग रंग के फूलों पर सुंदर ,  
फूले फिरते ही फूल स्वयं  
उड़ उड़ वृंतों से वृंतों पर !

### भावार्थ –

उपरोक्त पंक्तियों में कवि कहते हैं कि खेतों में नीले व सफेद रंग के फूलों से सजे मटर के पौधों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो जैसे दो सखियां आपस में मिलजुल कर खिल-खिला रही हों। कवि ने यहाँ पर मटर का मानवीकरण किया गया है।

आगे कवि कहते हैं कि मटर के बेल पर लगी फलियां ऐसी प्रतीत हो रही हैं मानो जैसे मटर के पौधों पर कोई मखमली पेटियों (डिब्बा) लटक रही हो , जिनके अंदर बीजों की लड़ियों छिपाई गई हों।

बसंत ऋतु के आगमन से खेतों पर खिले रंग-बिरंगे फूलों पर सुंदर-सुंदर रंग-बिरंगी तितलियां मंडरा रही हैं और जब तेज हवा चलती है तो फूलों की डंठलों (टहनी) जोर जोर से हिलती हुई ऐसा प्रतीत होती है मानो स्वयं फूल , उड़ – उड़ कर उनमें जाकर बैठ रहे हैं यानि फूल भी खुश होकर मस्ती में झूम रहे हैं।

### काव्यांश 4.

अब रजत स्वर्ण मंजरियों से  
लद गई आम तरु की डाली,  
झर रहे ढाक , पीपल के दल ,  
हो उठी कोकिला मतवाली !  
महके कटहल, मुकुलित जामुन ,  
जंगल में झरबेरी झूली ,  
फूले आड़ू , नीम्बू , दाड़िम  
आलू , गोभी , बैंगन , मूली !

भावार्थ -

वसंत ऋतु के आगमन के साथ ही आम , लीची आदि के पौधों में बौर आने लगती है और आड़ू , खुमानी आदि के पेड़ों में रंग बिरंगी फूल खिलने लगते हैं जो प्रकृति के सौंदर्य में चार चांद लगाते हैं।

उपरोक्त पंक्तियों में कवि कहते हैं कि आम के पेड़ की डाली -डाली सफेद व पीले रंग के बौरों (मंजरियों) से लद गई हैं। पलाश (ढाक) के फूल व पीपल के पत्ते गिरने लगे हैं। यह सब देख कर कोयल भी मस्त होकर गा रही हैं।

कटहल महक रहा है और उसकी भीनी भीनी खशबू हवा में फैल रही है। मगर जामुन अभी अधखिला ही है। और जंगल में बेर की झड़ियों में बेर झूलने लगे हैं। आड़ू , नीम्बू , दाड़िम में फूल आने लगे हैं। और आलू , गोभी , बैंगन , मूली भी फूल रही हैं।

काव्यांश 5.

पीले मीठे अमरुदों में  
अब लाल लाल चित्तियाँ पड़ीं ,  
पक गये सुनहले मधुर बेर ,  
अँवली से तरु की डाल जड़ी!  
लहलह पालक, महमह धनिया ,  
लौकी औ' सेम फलीं , फैलीं

मखमली टमाटर हुए लाल ,  
मिर्चों की बड़ी हरी थैली !

भावार्थ –

उपरोक्त पंक्तियों में कवि कहते हैं कि अमरुद पककर पीले व मीठे हो चुके हैं जिनमें लाल-लाल चितियाँ (धब्बे) पड़ चुकी हैं। बेर भी पककर सुनहरे व मीठे हो चुके हैं और आंवले के पेड़ में पास लगे छोटे – छोटे आंवले के दाने ऐसे प्रतीत हो रहे मानो जैसे किसी आभूषण में नग जड़ दिए हो।

पालक लहलहा रहा है तो धनिया पूरे वातावरण में खुशबू बिखेर रही है। लौकी और सेम की बेले हर रोज फैलती ही (बढ़ती ही ) जा रही हैं। और टमाटर भी पककर एकदम मखमल जैसे लाल हो गए हैं और मिर्च के पौधों पर लगी हरी-हरी मिर्च तो ऐसी लग रही है मानो किसी ने हरे-हरे थैले पौधों पर लटका दिया हों।

काव्यांश 6.

बालू के साँपों से अंकित  
गंगा की सतरंगी रेती  
सुंदर लगती सरपत छाई  
तट पर तरबूजों की खेती ;  
अँगुली की कंधी से बगुले  
कलँगी सँवारते हैं कोई ,  
तिरते जल में सुरखाब , पुलिन पर  
मगरौठी रहती सोई !

भावार्थ –

उपरोक्त पंक्तियों में कवि गंगा नदी के किनारे खड़े होकर गंगा नदी के तट पर फैली रेत व वहां पर रहने वाले पक्षियों को देखकर आनंदित हैं।

उपरोक्त पंक्तियों में कवि कहते हैं कि गंगा के किनारे पड़ी रेत (बालू) में पड़े निशान ऐसे प्रतीत होते हैं मानो किसी ने रेत पर सांप की आकृतियों को उकेर दिया हो। गंगा के तट पर



फैली तरबूजों की खेती और सरपट (एक घास ) से बनाई झोपड़ियों भी बहुत ही सुंदर दिखाई दे रही हैं।

एक बगुला जो एक पंजे पर खड़ा हुआ दूसरे पंजा से अपना सिर खुजलाते हुए ऐसा प्रतीत होता रहा है जैसे बगुला अपने पंजे से अपनी कलगी सँवार रहा हो। यानि अपने बालों पर कंधी कर रहा हो।

कवि आगे कहते हैं कि सुरखाब पक्षी धीरे धीरे गंगा नदी के कम गहरे पानी में उतर रहे हैं लेकिन मगरौठी (पक्षी) गीली रेत में सुस्ताया हुआ सा दिखाई दे रहा है।

काव्यांश 7.

हँसमुख हरियाली हिम-आतप  
सुख से अलसाए-से सोये ,  
भीगी अँधियाली में निशि की  
तारक स्वप्नों में-से खोये-  
मरकत डिब्बे सा खुला ग्राम-  
जिस पर नीलम नभ आच्छादन-  
निरुपम हिमांत में स्निग्ध शांत  
निज शोभा से हरता जन मन !

भावार्थ –

उपरोक्त पंक्तियों में कवि अपने गांव के हरे भरे सौंदर्य को देख रहे हैं। जो उन्हें बहुत सुंदर दिखाई दे रहा है। कवि कहते हैं प्रकृति अपनी इस अकूत सम्पदा (फसल , रंग बिरंगे फूल , हरे भरे पेड़ पौधे , प्रकृति की अकूत सम्पदा है ) से बेहद खुश हैं।

और इन सर्दियों की धूप (हिम-आतप) में तो हरियाली (प्रकृति) सुख से कभी अलसाई (आलस्य से भरी हुई) हुई तो , कभी सोई दिख रही रही हैं और इस हरियाली के ऊपर पड़ी ओस की बूँदें , उन तारों की भांति दिखाई दे रही हैं जो अपने सपनों में खोये हुए हैं। इस हरे-भरे गांव की हरियाली को देख कर कवि को ऐसा लग रहा है मानो पन्नों (हरे रंग का रत्न) से भरा कोई डिब्बा खुल गया हो , जिसको नीलम की सी आभा देने वाले नीले

रंग का आकाश ढके हुए हो। यानि पन्नों से भरे उस डिब्बे को नीले आसमान ने ढक रखा हो।

सर्दियों के अंत (हिमांत) में इस गाँव के चारों तरफ लहलहाती फसल , हरियाली व गांव की शांति सभी लोगों को अपनी तरफ आकर्षित करती हैं।

### पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1.

कवि ने गाँव को 'हरता जन-मन' क्यों कहा है?

उत्तर-

कवि ने गाँव को 'हरता जन-मन' इसलिए कहा है क्योंकि उसकी शोभा अनुराग है। खेतों में दूर-दूर तक मखमली हरियाली फैली हुई है। उस पर सूरज की धूप चमक रही है। इस शोभा के कारण पूरी वसुधा प्रसन्न दिखाई देती है। इसके कारण गेहूँ, जौ, अरहर, सनई, सरसों की फसलें उग आई हैं। तरह-तरह के फूलों पर रंगीन तितलियाँ मँडरा रही हैं। आम, बेर, आड़, अनार आदि मीठे फल पैदा होने लगे हैं। आलू, गोभी, बैंगन, मूली, पालक, धनिया, लौकी, सेम, टमाटर, मिर्च आदि खूब फल-फूल रहे हैं। गंगा के किनारे तरबूजों की खेती फैलने लगी है। पक्षी आनंद विहार कर रहे हैं। ये सब दृश्य मनमोहक बन पड़े हैं। इसलिए गाँव सचमुच जन-मन को हरता है।

प्रश्न 2.

कविता में किस मौसम के सौंदर्य का वर्णन है?

उत्तर-

कविता में सरदी के मौसम के सौंदर्य का वर्णन है। इसी समय गुलाबी धूप हरियाली से मिलकर हरियाली पर बिछी चाँदी की उजली जाली का अहसास कराती है और पौधों पर पड़ी ओस हवा से हिलकर उनमें हरावत होने का भान होता है। इसके अलावा खेत में सब्जियाँ तैयार होने, पेड़ों पर तरह-तरह के फल आने, तालाब के किनारे रेत पर मँगरौठ नामक पक्षी के अलसीकर सोने से पता चलता है कि यह सरदी के मौसम का ही वर्णन है।

प्रश्न 3.

गाँव को 'मरकत डिब्बे-सा खुला' क्यों कहा गया है?

उत्तर-

गाँव में चारों ओर मखमली हरियाली और रंगों की लाली छाई हुई है। विविध फसलें लहलहा रही हैं। वातावरण मनमोहक सुगंधों से भरपूर है। रंगीन तितलियाँ उड़ रही हैं। चारों ओर रेशमी सौंदर्य छाया हुआ है। सूरज की मीठी-मीठी धूप इस सौंदर्य को और जगमगा रही है। इसलिए इस गाँव की तुलना मरकत डिब्बे से की गई है।

प्रश्न 4.

अरहर और सनई के खेत कवि को कैसे दिखाई देते हैं?

उत्तर-

अरहर और सनई फलीदार फसलें हैं। इनकी फसलें पकने पर, जब हवा चलती है तो इनमें से मधुर आवाज़ आती है। यह मधुर आवाज़ किसी स्त्री की कमर में बँधी करधनी से आती हुई प्रतीत होती है। इन्हीं मधुर आवाजों के कारण कवि को अरहर और सनई के खेत धरती की करधनी जैसे दिखाई देते हैं।

प्रश्न 5.

भाव स्पष्ट कीजिए-

1. बालू के साँपों से अंकित गंगा की सतरंगी रेती।
2. हँसमुख हरियाली हिम-आतप सुख से अलसाए-से सोए।

उत्तर-

1. गंगा-तट की रेत बल-खाते साँप की तरह लहरदार है और वह विविध रंगों वाली है।
2. हरियाली धूप के प्रकाश में जगमगाती हुई हँसमुख-सी लग रही है। सर्दों की धूप भी स्थिर और शांत है। उन्हें देखकर यों लगता है मानो दोनों अलसाकर एक-दूसरे के संग सो गए हों।

प्रश्न 6.

निम्न पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?

तिनकों के हरे हरे तन पर

हिल हरित रुधिर है रहा झलक

उत्तर-

1. हरे-हरे' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
2. 'हरे-हरे' 'हिल-हरित' में अनुप्रास अलंकार है।

3. 'हरित रुधिर'-रुधिर का रंग हरा बताने के कारण विरोधाभास अलंकार है।
4. 'तिनकों के हरे-भरे तन पर' में रूपक एवं मानवीकरण अलंकार है।

प्रश्न 7.

इस कविता में जिस गाँव का चित्रण हुआ है वह भारत के किस भू-भाग पर स्थित है?

उत्तर-

इस कविता में गंगा के तट पर बसे गाँव का चित्रण हुआ है।

प्रश्न 8.

भाव और भाषा की दृष्टि से आपको यह कविता कैसी लगी? उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर-

'ग्राम श्री' कविता में उस ग्रामीण सौंदर्य का चित्रण है जो लोगों के मन को अनायास अपनी ओर खींच लेता है। गाँव हरियाली से भरपूर है। यह खेतों में लहराती फसलें हैं जिन पर रंग-बिरंगे फूल खिले हैं तो दूसरी ओर फलों से लदे पेड़ भी हैं जिन पर पके फल मुँह में पानी ला देते हैं।

कविता में गंगा की सतरंगी रेती और जल क्रीड़ा करते पक्षियों का चित्रण भी है। हरा-भरा गाँव देखकर लगता है कि यह मरकत का कोई डिब्बा हो। कविता की भाषा सरल सहज बोधगम्य, प्रवाहमयी है जिसमें चित्रमयता है। वर्णन इतना प्रभावी है कि सारा का सारा दृश्य आँखों के सामने साकार हो उठता है। कविता में अनुप्रास, रूपक मानवीकरण और विरोधाभास अलंकारों का सहज एवं स्वाभाविक प्रयोग है। इस तरह 'ग्राम श्री' कविता भाव एवं भाषा की दृष्टि से उत्कृष्ट है।

प्रश्न 9.

आप जहाँ रहते हैं उस इलाके के किसी मौसम विशेष के सौंदर्य को कविता या गद्य में वर्णित कीजिए।

उत्तर-

मैं दिल्ली का रहने वाला हूँ। हमारा गाँव उस क्षेत्र में है जो यमुना नदी से मात्र एक-डेढ़ किलोमीटर ही दूर है। इस क्षेत्र में सरदी और गरमी दोनों ही खूब पड़ती हैं। मुझे गरमी का मौसम पसंद है। गरमी में यमुना के दोनों किनारों पर सब्जियों की खेती की जाती है जिससे हरियाली बढ़ जाती है। इन खेतों में जाकर खीरा, ककड़ी, खरबूजा, तरबूज आदि तोड़कर खाने का अपना अलग ही आनंद होता है। दोस्तों के साथ यमुना के उथले पानी में नहाने, रेत पर उछलने-कूदने और लोटने का मज़ा अलग ही है। इस ऋतु में सुबह-शाम जल क्रीड़ा करते हुए पक्षियों को निहारना सुखद लगता है। आम, फालसा, लीची आदि फल इसी समय खाने को मिलते हैं। यहाँ की हरियाली आँखों को बहुत अच्छी लगती है।

## पाठेतर सक्रियता

प्रश्न 10.

सुमित्रानंदन पंत ने यह कविता चौथे दशक में लिखी थी। उस समय के गाँव में और आज के गाँव में आपको क्या परिवर्तन नज़र आते हैं? इस पर कक्षा में सामूहिक चर्चा कीजिए।

उत्तर-

छात्र परिचर्चा का आयोजन स्वयं करें।

प्रश्न 11.

अपने अध्यापक के साथ गाँव की यात्रा करें और जिन फ़सलों और पेड़-पौधों का चित्रण प्रस्तुत कविता में हुआ है, उनके बारे में जानकारी प्राप्त करें।

उत्तर-

छात्र अपने माता-पिता एवं अध्यापक की मदद से स्वयं जानकारी प्राप्त करें।

## अन्य पाठेतर हल प्रश्न

### लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.

चाँदी की उजली जाली के समान किसे कहा गया है? यह जाली कहाँ दिखाई दे रही है?

उत्तर-

सूरज की सफ़ेद किरणों को चाँदी की उजली जाली के समान कहा गया है। यह जाली खेतों में दूर-दूर तक फैली हरियाली से लिपटी हुई दिखाई दे रही है।

प्रश्न 2.

तिनकों पर ओस की बूंदें देखकर कवि ने क्या नवीन कल्पना की है? और क्यों?

उत्तर-

तिनकों पर ओस की बूंदों को देखकर कवि ने हरे रक्त की नवीन कल्पना की है क्योंकि तिनकों पर पड़ी ओस की बूंदें हवा से हिल-डुल रही हैं। इससे बूंदें तिनकों के हरे रक्त-सी प्रतीत हो रही हैं।

प्रश्न 3.

‘ग्राम श्री’ कविता के आधार पर बताइए कि आकाश कैसा दिखाई दे रहा है?

उत्तर-

‘ग्राम श्री’ कविता से ज्ञात होता है कि आकाश चिर निर्मल विस्तृत नीले पर्दे या फलक के समान है। यह विशाल परदा हरी-भरी धरती पर झुका हुआ है।

प्रश्न 4.

धरती रोमांचित-सी क्यों लगती है? यह रोमांच किस तरह प्रकट हो रहा है?

उत्तर-

धरती रोमांचित-सी इसलिए लग रही है क्योंकि गेहूँ और जौ में बालियाँ आ गई हैं। जिस तरह रोमांचित होने पर हमारे शरीर के रोएँ खड़े हो जाते हैं, उसी प्रकार गेहूँ जौ की बालियों में दानों पर लगे नुकीले भाग को देखकर लगता है कि ये धरती के रोम हैं जिनसे उसका रोमांच प्रकट हो रहा है।

प्रश्न 5.

सरसों फूलने का वातावरण पर क्या असर पड़ा है? इसे झाँककर कौन देख रहा है?

उत्तर-

सरसों के फूलने से वातावरण में तेल की गंध भर गई है जो हवा के साथ उड़ती फिर रही है। इस पीली-पीली फूली सरसों को अलसी की कली हरी-भरी धरती से झाँक-झाँक कर देख रही है।

प्रश्न 6.

खेतों में खड़ी मटर के सौंदर्य का वर्णन ‘ग्राम श्री’ कविता के आधार पर कीजिए।

उत्तर-

खेतों में मटर की फसल खड़ी है। उस पर रंग-बिरंगे फूल और फलियाँ आ चुकी हैं। इन फूलों को देखकर लगता है कि मटर सखियों के संग हँस रही है। वह अपनी मखमली पेटियों जैसे छीमियों में बीजों की लड़ी छिपा रखी है।

प्रश्न 7.

तितलियों के उड़ने से वातावरण पर क्या प्रभाव पड़ रहा है? इस दृश्य को देखकर कवि अनूठी कल्पना कर रहा है?

उत्तर-

पेड़-पौधे एवं फसलों पर रंग-बिरंगे सुंदर फूल खिले हैं। ये फूल हवा के साथ झूम रहे हैं तितलियाँ उड़ती-फिरती एक फूल से दूसरे फूल पर आ जा रही हैं। इससे वातावरण अत्यंत सुंदर बन गया है। इनको देखकर कवि यह कल्पना करता है कि स्वयं फूल ही उड़कर एक डाल से दूसरी डाल पर जा रहे हैं।

प्रश्न 8.

अमरूद, बेर और आँवला जैसे फल और उनके पेड़ कवि का मन क्यों लुभा रहे हैं?

उत्तर-

कच्चे हरे दिखाई देने वाले अमरूद अब पककर पीले हो गए हैं और उन पर लाल-लाल चित्तियाँ पड़ गई हैं। बेर के फल अब पककर सुनहरे और मीठे हो गए हैं। आँवले की डालियाँ अब छोटे-छोटे आँवलों से जड़ी हुई दिखाई दे रही हैं। इस कारण ये फल और पेड़ कवि का मन लुभा रहे हैं।

प्रश्न 9.

कवि ने हरी थैली किसे कहा है और क्यों ?

उत्तर-

कवि ने शिमला मिर्च के पौधों पर आई बड़ी-बड़ी मिरचों को हरी थैली कहा है। ये मिर्च गुच्छों के रूप में इन पौधों पर लटक रहे हैं। इन्हें देखकर लगता है कि बड़ी-बड़ी हरी-हरी थैलियाँ लटक रही हैं।

प्रश्न 10.

कवि द्वारा हरियाली और तारों का किस तरह मानवीकरण किया गया है? 'ग्राम श्री' कविता के आधार पर लिखिए।

उत्तर-

हरियाली पर सरदियों की धूप पड़ने से लग रहा है कि हरियाली हँस रही है जो धूप के साथ मिलकर सुखपूर्वक अलसाई सी सो रही है। शाम के समय ओस पड़ने से रात भीगी-सी लग रही है। ऐसी रात में तारों को देखकर लगता है कि वे सपनों में खोए हुए हैं।

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1.

प्रकृति सतत परिवर्तनशील है। 'ग्राम श्री' कविता में वर्णित आम, पीपल और ढाक के पेड़ों के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

'ग्राम श्री' कविता में एक ओर दर्शाया गया है कि आम के पेड़ों पर अब सोने और चाँदी के रंग के बौर आ चुके हैं। इससे सारी डालियाँ मंजरियों-सी जड़ी हुई लग रही हैं। दूसरी ओर पीपल और ढाक के पेड़ अपनी पुरानी पत्तियाँ गिराते जा रहे हैं। पत्तियाँ गिरने से ढूँठ जैसे दिखने वाले ये पेड़ सौंदर्यहीन हो गए हैं जबकि आम के पेड़ का सौंदर्य बढ़ गया है। इस तरह एक ओर सौंदर्य की सृष्टि हो रही है तो दूसरी ओर समाप्ति। इस तरह हम कह सकते हैं कि प्रकृति सतत परिवर्तनशील है।

प्रश्न 2.

‘ग्राम श्री’ कविता में कुछ पेड़ वातावरण की सुंदरता में वृद्धि कर रहे हैं तो कुछ वातावरण को महका रहे हैं। वातावरण को सुगंधित बनाने वाले इन पेड़ों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर-

‘ग्राम श्री’ कविता में आम, अमरूद, आँवला आदि ऐसे अनेक पेड़ों का उल्लेख है जो वातावरण की सुंदरता बढ़ा रहे हैं तो कुछ पेड़ ऐसे भी हैं जो वातावरण को सुगंधित बना रहे हैं। ऐसे पेड़ों में कटहल, जामुन, आड़ू, नींबू, अनार आदि प्रमुख हैं। इन पर फूल आ गए हैं जिसकी सुगंध चारों तरफ फैल रही है। इसके अलावा खेतों में धनिया भी उगी है जो अपनी महक बिखेर रही है।

प्रश्न 3.

गंगा के किनारों का सौंदर्य देखकर कवि अभिभूत क्यों है? ‘भ श्री’ कविता के आधार पर लिखिए।

उत्तर-

गंगा के दोनों किनारों की चमकती रेत धूप में सतरंगी प्रतीत हो रही है। हवा से पानी के लहराने के कारण रेत पर टेढ़ी मेढ़ी रेखाएँ बन गई हैं, जो साँपों के चलने से बनी हुई लगती है। इनके किनारे सरपत से लँकी हुई तरबूजों की खेती सुंदर लग रही है। इसी सरपत नामक लंबी-लंबी घास से बनी कुछ झोपड़ियाँ भी हैं, जिनमें बैठकर तरबूजों एवं सब्जियों की रखवाली की जाती है। पानी में पक्षी अपनी-अपनी क्रीड़ा में व्यस्त हैं। यह सब देखकर कवि अभिभूत है।

प्रश्न 4.

‘ग्राम श्री’ कविता के आधार पर गाँव के उस सौंदर्य का वर्णन कीजिए जिसके कारण वे जन-मन को आकर्षित कर रहे हैं?

उत्तर

गाँव में पेड़-पौधे एवं फ़सलों के कारण चारों ओर हरियाली फैली है। सरदियों की गुलाबी धूप पाकर यह हरियाली खिल उठती है। ऐसा लगता है कि जैसे धूप और हरियाली सुख से सोए हुए हैं। ओस भरी शांत रातों में तारों को देखकर लगता है कि वे जैसे सपनों में खोए हुए हैं। हरा-भरा गाँव पन्ना नामक हरे रत्न के खुले डिब्बे जैसा लग रहा है जिसको नीला आकाश आच्छादित किए हुए है। अपनी सुंदरता में अनूठे, सुंदर और शांत गाँव इतने अच्छे लग रहे हैं कि वे लोगों का मन अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं।

# चंद्र गहना से लौटती बेर



### काव्यांश 1.

देख आया चंद्र गहना।  
देखता हूँ दृश्य अब मैं  
मेड़ पर इस खेत की बैठा अकेला।  
एक बीते के बराबर  
यह हरा ठिगना चना,  
बाँधे मुरैठा शीश पर  
छोटे गुलाबी फूल का,  
सजकर खड़ा है।

#### भावार्थ –

कवि चंद्र गहना नामक एक गांव से लौट रहे हैं। लौटते वक्त रास्ते पर पड़ने वाले खेतों के प्राकृतिक सौंदर्य को देखकर कवि उसकी सुंदरता पर मोहित होकर एक खेत की मेंड़ ( दो खेतों के बीचों-बीच थोड़ा ऊँचा स्थान) पर अकेले बैठ कर खेतों की शोभा को देखने लग जाते हैं।

कवि को ऐसा आभास होता है जैसे प्रकृति ने किसी स्वयंवर का आयोजन किया हो। बालिस्त भर (22.5 सेंटीमीटर) के एक ठिगने (छोटा) से चने के पौधे पर खिले गुलाबी फूल को देखकर कवि को ऐसा प्रतीत होता है मानो जैसे कोई छोटा सा , नाटा सा आदमी अपने सिर पर गुलाबी पगड़ी बांधे दूल्हा बनकर खड़ा हो। यहाँ पर कवि ने चने के पौधे का मानवीकरण किया है

### काव्यांश 2.

पास ही मिलकर उगी है  
बीच में अलसी हठीली  
देह की पतली, कमर की है लचीली,  
नील फूले फूल को सर पर चढ़ा कर  
कह रही, जो छुए यह  
दूँ हृदय का दान उसको।

#### भावार्थ –

चने के पौधे के पास ही उगे एक अलसी के पौधे को कवि एक ऐसी नवयुवती के रूप में देख रहे हैं जिसका पतला शरीर है और लचीली कमर है। अलसी के पौधे में एक नीले रंग का फूल भी खिला है ।

कवि कहते हैं कि पास पर ही एक पतले शरीर व लचीली कमर वाली हठीली अलसी भी उगी है जिसने अपने बालों में नीले रंग का फूल सजा रखा है। (उस समय अलसी की खेती नहीं की जाती थी। यह खुद-ब-खुद उग जाती थी। इसीलिए कवि ने इसे “हठीली” कहा है । लेकिन आजकल इसकी खेती की जाती है।)

उस अलसी के नीले फूल को देखकर कवि को ऐसा लग रहा है मानो जैसे वह कह रही हो , जो मेरे बालों में लगे इस नीले फूल को सबसे पहले छुएगा , उसे वह अपना हृदय (दिल) दे देगी। यहाँ पर कवि ने अलसी के पौधे का मानवीकरण किया है।

काव्यांश 3.

और सरसों की न पूछो-  
हो गयी सबसे सयानी ,  
हाथ पीले कर लिए हैं  
ब्याह-मंडप में पधारी  
फाग गाता मास फागुन  
आ गया है आज जैसे।  
देखता हूँ मैं स्वयंवर हो रहा है ,  
प्रकृति का अनुराग-अंचल हिल रहा है।

भावार्थ -

उपरोक्त पंक्तियों में कवि कहते हैं कि सरसों के बारे में तो पूछो ही मत। वह तो इतनी सयानी हो गई है कि उसने तो अपने हाथ खुद ही पीले कर लिए हैं और सजधज कर दुल्हन के रूप में ब्याह मंडप में आ गई है।

साथ ही कवि को ऐसा लग रहा है जैसे फाल्गुन का महीना भी फाग (शादी ब्याह के वक्त गाये जाने वाले शगुन गीत) गाते हुए इस ब्याह में शामिल होने आ चुका है। यहाँ पर कवि ने सरसों के पौधे का मानवीकरण किया है।

कवि आगे कहते हैं कि मैं इस पूरे प्राकृतिक स्वयंवर को देख रहा हूँ जिसमें सरसों दुल्हन और चना दूल्हा बनकर ब्याह मंडप में बैठे हैं और जब हल्की-हल्की हवा चलती है तो पेड़ पौधों , खेतों पर खड़ी फसलों व फूल-पत्तों के हिलने से कवि को ऐसा लग रहा है मानो जैसे प्रकृति भी अपना प्रेम भरा आंचल हिला कर , इस स्वयंवर के प्रति अपनी प्रसन्नता व्यक्त कर रही हो या उनको अपना आशीर्वाद दे रही हो।

काव्यांश 4.

इस विजन में ,  
दूर व्यापारिक नगर से  
प्रेम की प्रिय भूमि उपजाऊ अधिक है।  
और पैरों के तले है एक पोखर,  
उठ रहीं इसमें लहरियाँ,

नील तल में जो उगी है घास भूरी  
ले रही वो भी लहरियाँ।

भावार्थ –

इन पंक्तियों में कवि कहते हैं कि शहर की भीड़भाड़ वाली जगह में प्रेम का अभाव है। वहाँ लोगों के दिलों में प्रेम कम पनपता है। जबकि इस निर्जन स्थान पर प्रेम की भूमि बहुत अधिक उपजाऊ है। यहाँ प्रेम बहुत अधिक पनप रहा है यानि शहर से दूर इस निर्जन स्थान पर कवि को हर जगह प्रेम ही प्रेम दिखायी दे रहा है।

कवि जिस जगह पर बैठे हैं वहाँ से नीचे की ओर एक छोटा सा पोखर (तालाब) है जिसमें छोटी-छोटी लहरें उठ रही हैं और उस पोखर की तलहटी पर भूरे रंग की धास-पूस उगी है। कवि को ऐसा लग रहा है जैसे वह धास-पूस भी पानी की लहरों के साथ लहरा रही है यानि पानी की लहरों के साथ वह भी हिल रही है।

काव्यांश 5.

एक चांदी का बड़ा-सा गोल खम्भा  
आँख को है चकमकाता।  
हैं कई पत्थर किनारे  
पी रहे चुपचाप पानी,  
प्यास जाने कब बुझेगी!

भावार्थ –

इन पंक्तियों में सूरज की किरणें पोखर के पानी में बीचो-बीच पडने से कवि को ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे पोखर के बीच कोई चांदी का खंभा रखा हो जिसकी जगमगाहट से आँखों चौंधिया रही हो। यह कवि की कल्पना है।

कवि आगे कहते हैं कि वही पोखर के किनारे पड़े पत्थर चुपचाप पानी पीते जा रहे हैं और इतना पानी पीकर भी उनको संतुष्टि नहीं मिल पा रही है। न जाने इनकी प्यास कब बुझेगी। यहाँ पत्थरों का मानवीकरण किया है।

काव्यांश 6.

चुप खड़ा बगुला डुबाये टांग जल में,  
देखते ही मीन चंचल  
ध्यान-निद्रा त्यागता है,  
चट दबा कर चोंच में  
नीचे गले को डालता है!

एक काले माथ वाली चतुर चिड़िया  
श्वेत पंखों के झपाटे मार फौरन  
टूट पड़ती है भरे जल के हृदय पर,  
एक उजली चटुल मछली  
चोंच पीली में दबा कर  
दूर उड़ती है गगन में!

भावार्थ -

उपरोक्त पंक्तियों में कवि पोखर के किनारे रहने वाले पक्षियों की बात कर रहे हैं। कवि कहते हैं कि एक बगुला अपनी टांग पानी में डुबाये चुपचाप ध्यान मग्न होकर खड़ा है और जैसे ही उसे कोई मछली दिखाई देती है तो वह अपनी ध्यान व नींद मुद्रा को त्याग कर सीधे पानी में अपनी चोंच डालकर मछली को पकड़कर निगल लेता है।

और काले माथे वाली एक चालक चिड़िया जिसके सफेद पंख हैं। वह जैसे ही पानी में मछली को देखती हैं तो तेजी से पानी के अंदर जाकर , झपट्टा मारकर एक सफेद चतुर मछली को अपनी पीली चोंच में दबाकर दूर आसमान में उड़ जाती है।

काव्यांश 7.

और यहीं से-  
भूमि ऊंची है जहाँ से-  
रेल की पटरी गयी है।  
ट्रेन का टाइम नहीं है।  
मैं यहाँ स्वच्छंद हूँ,  
जाना नहीं है।

भावार्थ -

उपरोक्त पंक्तियों में कवि के आसपास कही थोड़ी सी ऊंची जगह हैं , जहाँ रेल की पटरियों हैं। उसे देखकर कवि कहते हैं कि उस ऊंची भूमि / जमीन से रेलवे लाइन जा रही है पर अभी ट्रेन के आने का समय नहीं हुआ है। इसीलिए यहां मैं आजाद हूँ। मुझे कहीं जाने की जल्दी भी नहीं है या मेरा अभी कहीं जाने का विचार भी नहीं है। इसीलिए मैं निश्चित होकर इस स्थान की सुंदरता को और थोड़े समय के लिए देख सकता हूँ।

काव्यांश 8.

चित्रकूट की अनगढ़ चौड़ी  
कम ऊंची-ऊंची पहाड़ियाँ

दूर दिशाओं तक फैली हैं।  
बाँझ भूमि पर  
इधर उधर रीवां के पेड़  
कांटेदार कुरूप खड़े हैं।

भावार्थ -

कवि को सामने चित्रकूट की चौड़ी लेकिन कम ऊँचाई वाली पहाड़ियां दिखाई दे दी हैं। कवि कहते हैं कि चित्रकूट की ये कम ऊँचाई वाली पहाड़ियां दूर-दूर तक फैली हुई दिखाई दे रही हैं और वहां की भूमि बंजर हैं और उस बंजर भूमि पर रीवा के कांटेदार और बेहद बदसूरत पेड़ खड़े दिखाई दे रहे हैं।

काव्यांश 9.

सुन पड़ता है  
मीठा-मीठा रस टपकाता  
सुग्गे का स्वर  
टैं टैं टैं टैं ;  
सुन पड़ता है।  
वनस्थली का हृदय चीरता ,  
उठता-गिरता  
सारस का स्वर  
टिरटों टिरटों ;  
मन होता है-  
उड़ जाऊँ मैं  
पर फैलाए सारस के संग  
जहाँ जुगुल जोड़ी रहती है  
हरे खेत में,  
सच्ची-प्रेम कहानी सुन लूँ  
चुप्पे-चुप्पे।

भावार्थ -

उपरोक्त पंक्तियों में कवि को तोते का मधुर मीठा स्वर टैं-टैं करता हुआ सुनाई दे रहा है और साथ में ही सारस का स्वर टिरटों – टिरटों कभी ऊँचा तो कभी धीमा सुनाई पड़ रहा है। उसे सुनकर कवि को ऐसे प्रतीत होता है मानो जैसे सारस का वह स्वर , जंगल का सीना चीरता हुआ निकल रहा हो।

चूँकि सारस हमेशा जोड़े में रहते हैं। इसीलिए कवि का मन कर रहा है कि वो भी सारस के साथ अपने पंख फैलाकर, उड़ कर उस जगह पहुँच जाए, जहाँ सारस अपनी जोड़ीदार के साथ रहते हैं। और वो उन हरे हरे खेतों में बैठ कर, चुपके से उनकी प्रेम कहानी सुनना चाहते हैं।

## पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1.

‘इस विजन में .अधिक है’- पंक्तियों में नगरीय संस्कृति के प्रति कवि का क्या आक्रोश है और क्यों?

उत्तर-

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने नगरीय संस्कृति की व्यावसायिकता पर आक्रोश प्रकट किया है। उनके अनुसार, नगर के लोग व्यापार को महत्व देते हैं। वे प्रेम और सौंदर्य से बहुत दूर हैं। वे प्रकृति से भी कर चुके हैं। कवि इसे नगर संस्कृति का दुर्भाग्य मानता है।

प्रश्न 2.

सरसों को ‘सयानी’ कहकर कवि क्या कहना चाहता होगा?

उत्तर-

सरसों को सयानी कहकर कवि यह कहना चाहता है कि अब वह बड़ी हो गई है। उस पर आए फूलों के कारण उसका रूप-सौंदर्य निखर आया है।

प्रश्न 3.

अलसी के मनोभावों का वर्णन कीजिए।

उत्तर-

अलसी अल्हड़ नायिका है। उसकी कमर लचीली है, देह पतली है और स्वभाव से हठीली है। उसने अपने शीश पर नीले फूल धारण किए हुए हैं। वह मानो सबको प्रेम का खुला निमंत्रण देकर कह रही है-जो भी मुझे छुए, मैं उसे अपना दिल दे दूँगी।

प्रश्न 4.

अलसी के लिए ‘हठीली’ विशेषण का प्रयोग क्यों किया गया है?

उत्तर-

अलसी के लिए ‘हठीली’ विशेषण का प्रयोग इसलिए किया गया है क्योंकि-

- वह चने से सटकर उग आई है।
- वह हवा से लहराकर बार-बार झुककर जमीन को छू जाती है और अगले ही पल तुरंत खड़ी हो जाती है।

प्रश्न 5.

‘चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा’ में कवि की किस सूक्ष्म कल्पना का आभास मिलता है?

उत्तर-

सरोवर के जल में सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं तो यों लगता है जैसे पानी के नीचे चाँदी का बड़ा गोल खंभा हो। रंग, चमक और रूप की समानता के कारण यह कल्पना मनोरम बन पड़ी है।

प्रश्न 6.

कविता के आधार पर ‘हरे चने’ का सौंदर्य अपने शब्दों में चित्रित कीजिए।

उत्तर-

‘ग्राम श्री’ कविता में वर्णित हरा चना आकार में एक बीते के बराबर है। उस पर आए फूल देखकर लगता है कि उसने गुलाबी पगड़ी बाँध रखी है। वह विवाह जैसे किसी मांगलिक कार्यक्रम में जाने के लिए तैयार दिखाई दे रहा है।

प्रश्न 7.

कवि ने प्रकृति का मानवीकरण कहाँ-कहाँ किया है?

उत्तर-

कवि ने निम्न स्थलों पर प्रकृति का मानवीकरण किया है

- यह हरा ठिगना चना,  
बाँधे मुरैठा शीश पर  
छोटे गुलाबी फूल का,  
सज कर खड़ा है।
- पास ही मिल कर उगी है  
बीच में अलसी हठीली  
देह की पतली, कमर की है लचीली,  
नील फूले फूल को सिर पर चढ़ा कर  
कह रही है, जो छुए यह  
दें हृदय का दान उसको।

- और सरसों की न पूछो  
हो गई सबसे सयानी,  
हाथ पीले कर लिए हैं।  
ब्याह-मंडप में पधारी।
- फाग गाता मास फागुन
- हैं कई पत्थर किनारे  
पी रहे चुपचाप पानी,  
प्यास जाने कब बुझेगी!

प्रश्न 8.

कविता में से उन पंक्तियों को ढूँढ़िए जिनमें निम्नलिखित भाव व्यंजित हो रहा है और चारों तरफ सूखी और उजाड़ जमीन है लेकिन वहाँ भी तोते का मधुर स्वर मन को स्पंदित कर रहा है।

उत्तर-

उपर्युक्त भाव को व्यंजित करने वाली पंक्तियाँ हैं-

बाँझ भूमि पर

मीठा-मीठा रस टपकाता

इधर-उधर रीवा के पेड़

सुग्गे का स्वर

काँटेदार कुरूप खड़े हैं।

टें हैं टें टें।

सुन पड़ता है।

## रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 9.

‘और सरसों की न पूछो’-इस उक्ति में बात को कहने का एक खास अंदाज़ है। हम इस प्रकार की शैली का प्रयोग कब और क्यों करते हैं?

उत्तर-

हम इस तरह की शैली का प्रयोग प्रशंसा करते समय करते हैं। अत्यधिक आश्चर्य, निंदा या भावों की अति दिखाने के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है जैसे-



अरे उस दुष्ट की करतूतों की न पूछो!  
अरे, ताजमहल की ऊँचाई की न पूछो!

क्यों-प्रायः हम किसी भाव से इतने अधिक अभिभूत हो जाते हैं कि कोई शब्द उसे व्यक्त नहीं कर पाता।  
तब हम शब्दों की लाचारी बताने के लिए यह कहते हैं-उसकी बात मत पूछो।

प्रश्न 10.

काले माथे और सफ़ेद पंखों वाली चिड़िया आपकी दृष्टि में किस प्रकार के व्यक्तित्व का प्रतीक हो सकती है?

उत्तर-

काले माथे और सफ़ेद पंखवाली चिड़िया किसी ऐसे स्वार्थी व्यक्तित्व का प्रतीक हो सकती है जो दूसरों का शोषण करने के लिए तत्पर रहता है। वह दूसरों की भलाई के बारे में सोचे-समझे बिना मौके की तलाश में रहता है और मौका पाते ही उसे अपना शिकार बना लेता है।

### भाषा अध्ययन

प्रश्न 11.

बीते के बराबर, ठिगना, मुरैठा आदि सामान्य बोलचाल के शब्द हैं, लेकिन कविता में इन्हीं से सौंदर्य उभरा है और कविता सहज बन पड़ी है। कविता में आए ऐसे ही अन्य शब्दों की सूची बनाइए।

उत्तर-

मेड़, हठीली, सयानी, ब्याह-मंडप, फागुन, पोखर, खंभा, चकमकोता, चट, झपाटे, सुग्गा, जुगुल जोड़ी, चुप्पे-चुप्पे।

प्रश्न 12.

कविता को पढ़ते समय कुछ मुहावरे मानस-पटल पर उभर आते हैं, उन्हें लिखिए और अपने वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए।

उत्तर-

कविता में आए कुछ मुहावरे-

- हृदय का दान देना-(प्रेम करना)-पद्मावती के रूप सौंदर्य का वर्णन सुनते ही रत्नसेन ने उसे अपने हृदय का दान दे दिया।

- सयानी होना-(समझदार होना)-मिनी को देखते ही काबुली वाले को याद आया कि उसकी अपनी बेटी भी सयानी हो गई होगी।
- हाथ पीले करना-(विवाह करना)-अपनी बिटिया के हाथ पीले करने के बाद गरीब माँ-बाप ने चैन की साँस ली।
- पैरों के तले होना-(एकदम निकट होना)-कवि जहाँ बैठा था वहीं पैरों के तले ही पोखर था।
- ध्यान-निद्रा त्यागना-(सजग हो जाना)-मछली देखते ही बगुला ध्यान निद्रा त्याग देता है।
- गले के नीचे डालना-(खा जाना)-भूखा भिखारी सूखी रोटियाँ गले के नीचे डालता जा रहा था।
- हृदय चीरना-(दुख पहुँचाना)-प्रेमी युगल द्वारा एक-दूसरे के साथ विश्वासघात करना हृदय चीरने वाली बात होती है।

### पाठेतर सक्रियता

प्रस्तुत अपठित कविता के आधार पर उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-  
देहात का दृश्य

अरहर कल्लों से भरी हुई फलियों से झुकती जाती है,  
उस शोभासागर में कमला ही कमला बस लहराती है।  
सरसों दानों की लड़ियों से दोहरी-सी होती जाती है,  
भूषण का भार सँभाल नहीं सकती है कटि बलखाती है।  
है चोटी उस की हिरनखुरी के फूलों से गूँथ कर सुंदर,  
अन-आमंत्रित आ पोलंगा है इंगित करता हिल-हिल कर।  
हैं मसैं भींगती गेहूँ की तरुणाई फूटी आती है,  
यौवन में माती मटरबेलि अलियों से आँख लड़ाती है।  
लोने-लोने वे घने चने क्या बने-बने इठलाते हैं,  
हौले-हौले होली गा-गा मुँघरू पर ताल बजाते हैं।  
हैं जलाशयों के ढालू भीटों पर शोभित तृण शालाएँ,  
जिन में तप करती कनक वरण हो जग बेलि-अहिबालाएँ।  
हैं कंद धरा में दाब कोष ऊपर तक्षक बन झूम हरे,  
अलसी के नील गगन में मधुकर दृग-तारों से घूम रहे।  
मेथी में थी जो विचर रही तितली सो सोए में सोई,  
उस की सुगंध-मादकता में सुध-बुध खो देते सब कोई।  
हिरनखुरी – बरसाती लता  
भीटा – दूह, टीले के शक्ल की जमीन

प्रश्न 1.

इस कविता के मुख्य भाव को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर-

इस काव्यांश में खेतों में फली-फूली फ़सलों का सजीव चित्रण है। अरहर और सरसों पर फलियाँ आ गई हैं, हिरनखुरी पर फूल खिल गए हैं। गेहूँ पर तरुणाई आ गई है, मटर बेलि पर भंवरे मडराने लगे हैं तथा चने के झाड़ बड़े हो गए हैं। आलू, गाजर मूली, शकरकंदी आदि उग आई है, अलसी पर फूल आ गए हैं और मेथी की खुशबू में तितली अपना होश खो बैठी है।

प्रश्न 2.

इन पंक्तियों में कवि ने किस-किस का मानवीकरण किया है?

उत्तर-

इन पंक्तियों में सरसों, हिरनखुरी, गेहूँ, मटरबेलि, चना आदि का मानवीकरण किया गया है।

प्रश्न 3.

इस कविता को पढ़कर आपको किस मौसम का स्मरण हो आता है?

उत्तर-

इस कविता को पढ़कर सरदी का मौसम एवं वसंत ऋतु का स्मरण हो जाता है क्योंकि ये सारी फ़सलें इसी ऋतु में फलती और फूलती हैं।

प्रश्न 4.

मधुकर और तितली अपनी सुध-बुध कहाँ और क्यों खो बैठे?

उत्तर-

मधुकर अलसी के नीले फूलों पर अपनी सुध-बुध खो बैठे है।

तितली मेथी की सुगंध से मोहित होकर अपनी सुध-बुध खो बैठी है।

## अन्य पाठेतर हल प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.

कवि कहाँ से लौटा है? वह खेत की मेड़ पर क्यों बैठ गया?

उत्तर-

कवि चंद्रगहना से लौटा है। वह खेत की मेड़ पर इसलिए बैठ गया ताकि वहाँ बैठकर आस-पास फैले प्राकृतिक सौंदर्य को जी भर निहार सके, प्रकृति का सान्निध्य पा सके और उसके सौंदर्य का आनंद उठा सके।

प्रश्न 2.

कवि को ऐसा क्यों लगता है कि चना विवाह में जाने के लिए तैयार खड़ा है?

उत्तर-

चने का पौधा हरे रंग का ठिगना-सा है। उसकी ऊँचाई एक बीते के बराबर होगी। उस पर गुलाबी फूल आ गए हैं। इन फूलों को देखकर प्रतीत होता है कि उसने गुलाबी रंग की पगड़ी बाँध रखी है। उसकी ऐसी सज-धज देखकर कवि को लगता है कि वह विवाह में जाने के लिए तैयार खड़ा है।

प्रश्न 3.

‘चंद्र गहना से लौटती बेर’ कविता में किसने किस उद्देश्य से हाथ पीले कर लिए हैं?

उत्तर-

चंद्र गहना से लौटती बेर’ कविता में सरसों सबसे सयानी हो चुकी है। सयानी होने से वह विवाह की वय प्राप्त कर चुकी है। उसने विवाह करने के लिए अपने हाथों में हल्दी लगाकर हाथ पीले कर लिए हैं।

प्रश्न 4.

पत्थर कहाँ पड़े हुए हैं? वे क्या कर रहे हैं? ‘चंद्र गहना से लौटती बेर’ कविता के आधार पर लिखिए?

उत्तर-

पत्थर तालाब के किनारे पड़े हैं जिन्हें पानी स्पर्श कर रहा है। ऐसा लगता है कि पत्थर अपनी प्यास बुझाने के लिए पानी पी रहे हैं। वे पता नहीं कब से पानी पी रहे हैं फिर भी उनकी प्यास नहीं बुझ रही है।

प्रश्न 5.

‘चंद्र गहना से लौटती बेर’ कविता में किस चिड़िया का वर्णन है? यह चिड़िया किसका प्रतीक हो सकती है?

उत्तर-

‘चंद्र गहना से लौटती बेर’ कविता में काले माथ वाली उस चिड़िया का वर्णन है जिसकी चोंच पीली और पंख सफ़ेद हैं। वह जल की सतह से काफी ऊँचाई पर उड़ती है और मछली देखते ही झपट्टा मारती है। उसे चोंच में दबाकर आकाश में उड़ जाती है। यह चिड़िया किसी शोषण करने वाले व्यक्ति का प्रतीक है।

प्रश्न 6.

‘चंद्र गहना से लौटती बेर’ कविता में वर्णित अलसी को किस रूप में प्रस्तुत किया गया है और क्यों?

उत्तर-

‘चंद्र गहना से लौटती बेर’ कविता में वर्णित अलसी को प्रेमातुर नायिकी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसका कारण यह है कि अलसी जिद पूर्वक चने के पास उग आई है। उसकी कमर लचीली और देह पतली है। वह अपने शीश पर नीले फूल रखकर कहती है कि जो उसे छुएगा, उसको वह अपने हृदय का दान दे देगी।

प्रश्न 7.

चंद्र गहना से लौटती बेर’ कविता के आधार पर रीवा के पेड़ों का वर्णन कीजिए।

उत्तर-

‘चंद्र गहना से लौटती बेर’ कविता में वर्णित रीवा के पेड़ चित्रकूट की पहाड़ियों पर स्थित हैं। ये पेड़ काँटेदार तथा कुरूप हैं। इनकी पत्तियाँ छोटी-छोटी तथा भूरी हैं। इनके नीचे बैठकर छाया का आनंद भी नहीं लिया जा सकता है।

प्रश्न 8.

‘मन होता है उड़ जाऊँ मैं’-कौन, कहाँ उड़ जाना चाहता है और क्यों?

उत्तर-

‘मन होता है उड़ जाऊँ मैं’ में कवि हरे धान के खेतों में उड़ जाना चाहता है जहाँ सारस की जोड़ी रहती है। यह जोड़ी एक दूसरे से अपनी प्रेम कहानी कहती है। कवि इस सच्ची प्रेम कहानी को चुपचाप सुनना चाहता है, इसलिए उसका मन उड़ जाने के लिए उत्सुक है।

प्रश्न 9.

‘चंद्रगहना से लौटती बेर’ कविता के आधार पर बताइए कि भूरी घास कहाँ उगी है? वह क्या कर रही है?

उत्तर-

‘चंद्र गहना से लौटती बेर’ कविता में भूरी घास तालब की तली में उगी है। हवा चलने से पानी में हलचल हो रही है। और पानी लहरा रहा है। इसका असर भूरी घास पर पड़ रहा है। इससे भूरी घास भी लहरा रही है।

प्रश्न 10.

‘मैं यहाँ स्वच्छंद हूँ’-कवि ने ऐसा क्यों कहा है? ‘चंद्र गहना से लौटती बेर’ पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर-

‘मैं यहाँ स्वच्छंद हूँ’-कवि ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि इस समय उसके पास कोई आवश्यक काम नहीं

हैं। इसके अलावा उसे आवश्यक कार्यवश कहीं आना-जाना भी नहीं है। वह प्राकृतिक सौंदर्य को देखने और उनका आनंद उठाने के लिए स्वतंत्र है।

प्रश्न 11.

‘चंद्रगहना से लौटती बेर’ कविता में सारस का स्वर कवि को कैसा प्रतीत होता है? इसे सुनकर उसके मन में क्या इच्छा होती है?

उत्तर-

‘चंद्रगहना से लौटती बेर’ कविता में कवि को सारस का स्वर उठता-गिरता अर्थात् कभी धीमा तथा कभी तेज़ सुनाई देता है। उसके कानों को यह स्वर अच्छा लगता है। इससे उसके मन में यह इच्छा होती है कि वह भी सारस के साथ पंख फैलाकर कहीं दूर उड़ जाए। जहाँ सारस की जुगुल जोड़ी रहती है।

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.

‘चंद्रगहना से लौटती बेर’ कविता के उस दृश्य का वर्णन कीजिए जिसे कवि देख रहा है?

उत्तर-

‘चंद्रगहना से लौटती बेर’ कविता में कवि खेत की मेड़ पर बैठा है। उसके पास ही चना, अलसी और सरसों उगी हैं। चना, अलसी और सरसों पर फूला आ गए हैं। वातावरण शांत तथा मनोहर है। उसके पैरों के पास ही तालाब है जिसमें सूरज का प्रतिबिंब उसकी आँखों को चौंधिया रहा है। तालाब में अपनी टाँग डुबोए बगुला ध्यान मग्न खड़ा है। वह मछलियाँ देखते ही ध्यान त्याग देता है। तालाब के पास ही काले माथे वाली चिड़िया उड़ रही है जो मौका देखकर मछलियों का शिकार कर लेती है। कुछ ही दूर पर दूर-दूर तक फैली चित्रकूट की पहाड़ियाँ हैं जिन पर रीवा के काँटेदार पेड़ उगे हैं।

प्रश्न 2.

‘चंद्रगहना से लौटती बेर’ कविता ने साधारण-सी वस्तुओं में भी अपनी कल्पना से अद्भुत सौंदर्य का दर्शन किया है। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

चंद्र गहना से लौटती बेर’ कविता के कवि की दृष्टि अत्यंत पारखी, सूक्ष्म अन्वेषण करने वाली है जिसमें कल्पनाशीलता समाई है। इसी कल्पना शीलता के कारण वह चने के पौधे को सजे-धजे दूल्हे के रूप में, अलसी को हेठीली, प्रेमातुर नायिका के रूप में तथा फूली सरसों को देखकर स्वयंवर स्थल पर पधारी विवाह योग्य कन्या का रूप सौंदर्य देखती है। जिसके हाथों में मेहंदी लगी है। वह प्रकृति को स्वयंवर-स्थल के रूप में देखता है। कवि को तालाब में सूर्य के प्रतिबिंब में चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा नजर आता है तो

किनारे पड़े पत्थरों को पानी पीते हुए देखता है। इस तरह कवि साधारणसी वस्तुओं में अद्भुत सौंदर्य के दर्शन करता है।

# मेघ आए

मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।  
आगे-आगे नाचती-गाती बयार चली,  
दरवाजे-खिड़कियाँ खुलने लगीं गली-गली,  
पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के।  
मेघ आए बड़े बन-ठन के संवर के।

**मेघ आए भावार्थ :-** प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने वर्षा-ऋतू के आने पर गांव में दिखाई देने वाले उत्साह का चित्रण किया है। कवि ने यहाँ बादल का मानवीकरण करके उसे एक दामाद (शहर से आये अतिथि) के रूप में दिखाया है। जिस प्रकार, कोई दामाद बड़ा ही सज-धज कर एवं बन-ठन कर अपने ससुराल जाता है, ठीक उसी प्रकार, मेघ भी बड़े बन-ठन कर और सुन्दर वेशभूषा धारण कर के आये हैं। जैसे, किसी मेहमान (दामाद) के आने का संदेश, गांव के बच्चे एवं उनकी सालियाँ आगे-आगे दौड़ कर पूरे गांव में फैला देते हैं, ठीक उसी तरह, हवा उनके आगे-आगे नाचती हुई पूरे गांव को यह सूचना देने लगी है कि गाँव में मेघ यानि बादल रूपी मेहमान आये हैं। यह सूचना पाकर गांव के सभी लोग अपने खिड़की-दरवाजे खोलकर उसे देखने एवं उसे निहारने के लिए घरों से बड़ी बेताबी से झांक रहे हैं।

इसका अर्थ यह है कि हर वर्ष हम वर्षा ऋतू का बहुत ही बेसब्री से प्रतीक्षा करते हैं। इसके आने पर सारा आकाश बादलों से ढक जाता है और सौंधी-सौंधी हवाएं चलने लगती हैं और सभी लोग घर से निकल कर वर्षा ऋतू का आनंद लेने लगते हैं।

पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाए,  
आंधी चली, धूल भागी घाघरा उठाये,  
बाँकी चितवन उठा, नदी ठिठकी, घूँघट सरके।  
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

**मेघ आए भावार्थ :-** प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने वर्षा ऋतू के आने पर प्रकृति में आने वाले बदलावों का वर्णन किया है और उसका बहुत ही सुंदर ढंग से मानवीय-करण किया है। कवि कहते हैं कि आसमान में बादल छाने के साथ आंधी आने पर धूल ऐसे उड़ने लगती है, मानो गांव की औरतें घाघरा उठाए दौड़ रही हों। साथ ही, हवा के चलने के कारण पेड़ ऐसे झुके हुए प्रतीत होते हैं, मानो वे अपनी गर्दन उचकाकर मेहमान को देखने की कोशिश कर रहे हैं। वहीं दूसरी तरफ, नदी रूपी औरतें ठिठक कर, अपने घूँघट सरकाए हुए तिरछी नज़रों से मेहमान को देख रही हैं।

इसका अर्थ यह है कि जब वर्षा होने वाली होती है, तो पहले थोड़ी तेज़ हवा या आंधी चलने लगती है। जिसके कारण रास्ते में पड़ी धूल उड़ने लगती है एवं हवा के वेग से वृक्ष झुक जाते हैं। इस अवस्था में नदी का पानी मानो ठहर-सा जाता है, जिसकी सुंदरता देखते ही बनती है।



बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की,  
'बरस बाद सुधि लीन्हीं' –  
बोली अकुलाई लता ओट हो किवार की,  
हरसाया ताल लाया पानी परात भर के।  
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँ वर के।

**मेघ आए भावार्थ :-** प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने वर्षा ऋतू के आगमन एवं घर में दामाद के आगमन का बढ़ा ही मनोरम चित्रण किया है। जब कोई दामाद बहुत दिनों के बाद घर आते हैं, तो घर के बड़े-बुजुर्ग उन्हें झुककर सम्मानपूर्वक प्रणाम करते हैं। इस दौरान उनकी जीवनसंगिनी हठपूर्वक गुस्सा होकर दरवाजे के पीछे छुपकर कहती हैं – “आपने इतने दिनों से मेरे बारे में कोई सुध (खोज-खबर) क्यों नहीं ली? क्या इतने दिनों के बाद आपको मेरी याद आई?” साथ ही, जब हमारे घर में कोई अतिथि आता है, तो हम उसके पांव धुलाते हैं, इसीलिए कवि ने यहाँ पानी “परात भर के” का उपयोग किया है।

इसका अर्थ यह है कि वर्षों बाद घर आने पर बड़े-बुजुर्ग जिस तरह अपने दामाद का स्वागत करते हैं, ठीक उसी प्रकार पीपल का वृक्ष भी झुककर वर्षा ऋतू का स्वागत करता है। जल की बूंदों के लिए व्याकुल लताएं गुस्से से दरवाजे के पीछे छिपकर मेघ से शिकायत कर रही हैं कि वो कब से प्यासी मेघ का इंतज़ार कर रहीं हैं और उन्हें अब आने का समय मिला है। बादलों के आने के खुशी में तालाब उमड़ आया है और उसके पास जितना भी पानी है, वो उससे थके हुए मेघ के चरणों को धोना चाहता है।

क्षितिज अटारी गहराई दामिनी दमकी,  
'क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की',

बाँध टूटा झर-झर मिलन के अश्रु ढरके।

मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

**मेघ आए भावार्थ :-** उक्त पंक्तियों का अर्थ है कि अभी तक प्रेमिका को अपने प्रियतम के आने की खबर भ्रम लग रही थी, लेकिन जब वो आकर घर की छत पर चले जाते हैं, तो मानो प्रेमिका के अंदर बिजली-सी दौड़ उठती है। उन्हें देखकर प्रेमिका का भ्रम टूट जाता है और वह मन ही मन प्रेमी से क्षमा-याचना करने लगती है। फिर आपसी मिलन की अपार खुशी के चलते दोनों प्रेमियों की आँखों से प्रेम के अश्रु बहने लगते हैं।

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहता है कि पूरा आसमान बादलों से ढक चुका है और बिजली चमकने लगी है। इससे हमारे मन की ये आशंका दूर हो गयी है कि वर्षा नहीं होगी। इस विचार के साथ ही बादलों से बरसात होने लगती है और इस तरह जल बरसाते हुए बादल आकाश में बहुत ही सुन्दर लग रहे हैं।

### पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1.

बादलों के आने पर प्रकृति में जिन गतिशील क्रियाओं को कवि ने चित्रित किया है, उन्हें लिखिए।

उत्तर-

बादलों के आने पर प्रकृति में निम्न गतिशील क्रियाएँ हुई

- बयार नाचती-गाती चलने लगी।
- पेड़ झुकने लगे, मानो वे गरदन उचकाकर बादलों को निहार रहे हों।
- आँधी चलने लगी। धूल उठने लगी।
- नदी मानो बाँकी नज़र उठाकर ठिठक गई। पीपल का पेड़ झुकने लगा।
- लताएँ पेड़ों की शाखाओं में छिप गईं।
- तालाब जल से भर गए।

- क्षितिज पर बिजली चमकने लगी।
- धारासार जल बरसने लगा जिसके कारण जगह-जगह से बाँध टूट गए।

प्रश्न 2.

निम्नलिखित किसके प्रतीक हैं?

1. धूल
2. पेड़
3. नदी
4. लता
5. ताल

उत्तर-

नीचे दिए गए शब्द और उनके प्रतीक इस प्रकार हैं-

1. **धूल**- मेघ रूपी मेहमान के आगमन से उत्साहित अल्हड़ बालिका का प्रतीक है।
2. **पेड़**- गाँव के आम व्यक्ति का प्रतीक है जो मेहमान को देखने के लिए उत्सुक है।
3. **नदी**- गाँव की नवविवाहिता का प्रतीक है जो पूँछ की ओर से तिरछी नज़र से मेघ को देखती है।
4. **लता**- नवविवाहिता मानिनी नायिका का प्रतीक है जो अपने मायके में रहकर मेघ का इंतजार कर रही है।
5. **ताल**- घर के नवयुवक का प्रतीक है जो मेहमान के पैर धोने के लिए पानी लाता है।

प्रश्न 3.

लता ने बादल रूपी मेहमान को किस तरह देखा और क्यों?

उत्तर-

लता ने बादल रूपी मेहमान को किवाड़ की ओट में छिपकर देखा।

क्यों—वह मानिनी है। वह अपने प्रियतम के कई दिनों के बाद आने पर उनसे रूठी हुई भी है और उन्हें देखे बिना भी नहीं रह पाती।

प्रश्न 4.

भाव स्पष्ट कीजिए

1. क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की

2. बाँकी चितवन उठा, नदी ठिठकी, पूँघट सरके।

उत्तर-

1. भाव यह है कि एक साल बीतने को हो रहे थे पर नवविवाहिता लता का पति मेघ उससे मिलने नहीं आया था। इससे लता के मन में जो भ्रम बन गया था वह मेघ के आने से टूट गया और वह क्षमा माँगने लगी।
2. मेघ रूपी मेहमान को देखने के लिए नदी रूपी नवविवाहिता ठिठक गई और उसने पूँघट उठाकर मेहमान को देखा।

प्रश्न 5.

मेघ रूपी मेहमान के आने से वातावरण में क्या परिवर्तन हुए?

उत्तर-

मेघ के आने से बयार चलने लगी। पेड़ झुकने लगे। आँधी और धूल चलने लगी, नदी बाँकी होकर बहने लगी। बूढ़े पीपल झुकने लगे। लताएँ पेड़ की ओट में छिपने लगीं। तालाब जल से भर उठे। आकाश में मेघ छा गए। अंत में धारासार वर्षा हुई।

मेहमान (दामाद) के आने पर गाँव की कन्याएँ और युवतियाँ प्रसन्न हो उठीं। लोग अपने खिड़की-दरवाजे खोलखोलकर उन्हें निहारने लगे। आते-जाते लोग उन्हें गरदन उठाकर देखने लगे। नवयुवतियों ने पूँघट सरकाकर उन्हें निहारा। बूढ़ी स्त्रियाँ विनम्रतापूर्वक उनका स्वागत करने लगीं। अतिथि की प्रिया मान करने लगी। फिर अचानक वह क्षमा माँगने लगी। दोनों की आँखों से प्रेमाश्रु बह चले।

प्रश्न 6.

मेघों के लिए 'बन-ठने के, सँवर के आने की बात क्यों कही गई है?

उत्तर-

मेघों के लिए 'बन-ठने के, सँवर के आने की बात इसलिए कही गई है क्योंकि वर्षा के बादल काले-भूरे रंग के होते हैं। नीले आकाश में उनका रंग मनोहारी लगता है। इसके अलावा गाँवों में बादलों का बहुत महत्त्व है तथा उनका इंतजार किया जाता है।

प्रश्न 7.

कविता में आए मानवीकरण तथा रूपक अलंकार के उदाहरण खोजकर लिखिए।

उत्तर-

**मानवीकरण-**

- मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के
- आगे-आगे नाचती-गाती बयार चली
- पेड़ झुक झाँकने लगे, गरदन उचकाए
- धूल भागी घाघरा उठाए
- बाँकी चितवन उठा, नदी ठिटकी
- बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की
- 'बरस बाद सुधि लीन्हीं  
बोली अकुलाई लता ओट हो किवार की
- हरसायो ताल लाया पानी परात भर के।

**रूपक – क्षितिज-अटारी गहराई।**

प्रश्न 8.

कविता में जिन रीति-रिवाजों का मार्मिक चित्रण हुआ है, उनका वर्णन कीजिए।

उत्तर-

कविता में अनेक रीति-रिवाजों का मार्मिक चित्रण हुआ है; जैसे-

- मेहमान के आने की सूचना पाकर सारा गाँव उल्लसित हो जाना।
- उत्साहित एवं जिज्ञासु होकर मेहमान को देखना।
- घर के बुजुर्ग द्वारा मेहमान का आदर-सत्कार करना।
- मेहमान के पैर धोने के लिए थाल में पानी भर लाना।
- नवविवाहिता स्त्री द्वारा पूँछट की ओट से मेहमान को देखना
- मायके वालों की उपस्थिति में नवविवाहिता नायिका द्वारा अपने पति से बात न करना।

प्रश्न 9.

कविता में कवि ने आकाश में बादल और गाँव में मेहमान (दामाद) के आने का जो रोचक वर्णन किया है, उसे लिखिए।

उत्तर-

मेघ रूपी शहरी पाहुन के आते ही पूरा गाँव उल्लास से भर उठा। शीतल बयार नाचती-गाती हुई पाहुन के आगे-आगे चलने लगी। सभी ग्रामवासियों ने अपने दरवाजे और खिड़कियाँ खोल लिए, ताकि वे पाहुन के दर्शन कर सकें। पेड़ उचक-उचककर पाहुन को देखने लगे। आँधी अपना घाघरा उठाए दौड़ चली। नदी बंकिम नयनों से मेघ की सज-धज को देखकर हैरान हो गई। गाँव के पुराने पीपल ने भी मानो झुककर

नमस्ते की। आँगन की लता संकोच के मारे दरवाजे की ओट में सिकुड़ गई और बोली-तुमने तो बरसों बाद हमारी सुध ली है। गाँव का तालाब पाहुन के स्वागत में पानी की परात भर लाया। क्षितिज रूपी अटारी लोगों से लद गई। बिजली भी चमकने लगी। इस प्रकार पूरा गाँव उल्लास से तरंगित हो उठा।

प्रश्न 10.

काव्य-सौंदर्य लिखिए-

पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के।

मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

उत्तर-

भाव सौंदर्य- इन पंक्तियों में शहर में रहने वाले दामाद का गाँव में सज-सँवरकर आने का सुंदर चित्रण है।

शिल्प-सौंदर्य

- पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के' में उत्प्रेक्षा अलंकार, 'बड़े बन-ठनके' में अनुप्रास तथा 'मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के' में मानवीकरण अलंकार है।
- भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है।
- रचना तुकांतयुक्त है।
- दृश्य बिंब साकार हो उठा है।
- माधुर्य गुण है।

## रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 11.

वर्षा के आने पर अपने आसपास के वातावरण में हुए परिवर्तनों को ध्यान से देखकर एक अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर

वर्षा के आने पर आकाश बादलों से घिर जाता है। धूप अपना बस्ता समेटकर जाने कहाँ छिप जाती है। चारों ओर छायादार रोशनी दीखने लगती है। घरों में हलचल बढ़ जाती है। स्त्रियाँ आँगन में रखा अपना सामान समेटने लगती हैं। सड़कों पर आना-जाना कम हो जाता है। काले और रंगबिरंगे छाते दीखने लगते हैं। पशु-पक्षी किसी ओट की खोज में भटकने लगते हैं। मार्गों पर जल भर आता है। बच्चे बड़े उल्लास से वर्षा का आनंद लेते हैं। इस प्रकार वर्षाकाल मनमोहक हो उठता है।

प्रश्न 12.

कवि ने पीपल को ही बड़ा बुजुर्ग क्यों कहा है? पता लगाइए।

उत्तर-

पीपल का पेड़ आकार में विशाल, हरा-भरा, छायादार होने के साथ ही शुभ माना जाता है। पूजा-पाठ और हर मांगलिक कार्यों में इसका पूजन किया जाता है, इसीलिए कवि ने पीपल को ही बड़ा बुजुर्ग कहा है।

प्रश्न 13.

कविता में मेघ को 'पाहुन' के रूप में चित्रित किया गया है। हमारे यहाँ अतिथि (दामाद) को विशेष महत्त्व प्राप्त है, लेकिन आज इस परंपरा में परिवर्तन आया है। आपको इसके क्या कारण नज़र आते हैं, लिखिए।

उत्तर-

पहले गाँव अपने-अपने दायरों में सीमित होते थे। गाँववासियों को बाहरी संपर्क बहुत कम होता था। अतः यदा-कदा आने वाले अतिथि का स्वागत भी बड़े मान-सम्मान और उल्लास से होता था। गाँववासियों के पास आवभगत के लिए समय और भाव भी होता था।

आज परिस्थितियाँ तेजी से बदल रही हैं। मनुष्य के बाहरी संपर्क और कार्य बढ़ रहे हैं। हर मनुष्य अधिक-से-अधिक व्यस्त होता जा रहा है। उसका समय व्यक्तिगत स्वार्थ पूरा करने में ही लगने लगा है। यही कारण है कि आज अतिथि-सत्कार की परंपरा का निरंतर हास हो रहा है।

### भाषा अध्ययन

प्रश्न 14.

कविता में आए मुहावरों को छाँटकर अपने वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए।

उत्तर-

कविता में आए मुहावरे और उनका वाक्य प्रयोग-

- **बन-ठनकर आना** – व्याह मंडप में सारे लोग बन-ठनकर आए थे।
- **गरदन उचकाना** – जादूगर का खेल देखने के लिए बच्चे को बार-बार गरदन उचकानी पड़ रही थी।
- **सुधि लेना** – उधार ले जाने के बाद कुछ लोग देने की सुधि नहीं लेते हैं।
- **गाँठ खुलना** – गाँठ खुलते ही दोनों के दिल का मैल धुल गया।
- **बाँध टूटना** – मिठाइयाँ देखकर बच्चे के धैर्य का बाँध टूट गया।

प्रश्न 15.

कविता में प्रयुक्त आँचलिक शब्दों की सूची बनाइए।

उत्तर-

आँचलिक शब्दों की सूची-

बन-ठन, पाहुन, घाघरा, पूँघट, जुहार, ओट, किवार, परात, अटारी, भरम।

प्रश्न 16.

मेघ आए कविता की भाषा सरल और सहज है-उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

‘मेघ आए’ कविता की भाषा सरल, सहज और आडंबरहीन है। कविता में आम बोल-चाल के शब्दों के अलावा आंचलिक शब्दों का भी प्रयोग है। इसमें कवि ने अपनी बात को अत्यंत सीधे-सादे सरल शब्दों में कह दिया है। भाषा में मुहावरों का प्रयोग करने तथा प्रकृति का मानवीकरण करने से भाषा की सजीवता एवं रोचकता बढ़ गई जिससे यह और भी सरल, सहज और बोधगम्य हो गई है।

### पाठेतर सक्रियता

प्रश्न 17.

वसंत ऋतु के आगमन का शब्द-चित्र प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर-

छात्र वसंत ऋतु के आगमन संबंधी शब्द चित्र स्वयं प्रस्तुत करें।

प्रश्न 18.

प्रस्तुत अपठित कविता के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

धिन-धिन-धा धमक-धमक मेघ बजे

मेघ बजे पंक बना हरिचंदन

दामिनि यह गई दमक मेघ बजे

मेघ बजे हल का है अभिनंदन

दादुर का कंठ खुला मेघ बजे

मेघ बजे धिन-धिन-धा.....

धरती का हृदय धुला

1. ‘हल का है अभिनंदन’ में किसके अभिनंदन की बात हो रही है और क्यों ?
2. प्रस्तुत कविता के आधार पर बताइए कि मेघों के आने पर प्रकृति में क्या-क्या परिवर्तन हुए?
3. “पंक बना हरिचंदन” से क्या आशय है ?



4. पहली पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
5. 'मेघ आए' और 'मेघ बजे' किस इंद्रिय बोध की ओर संकेत हैं ?

उत्तर-

1. 'हल का है अभिनंदन' में किसान और उसके हल के अभिनंदन की बात हो रही है क्योंकि वर्षा ऋतु आने और बादलों के बरसने पर कृषि का काम शुरू हो जाता है। यह काम हल द्वारा ही किया जाता है।
2. मेघों के आने पर आकाश में गर्जना होने लगी, बिजली चमकने लगी, मेढक बोलने, धरती धुली-धुली-सी नजर आने लगी और कीचड़ नज़र आने लगा।
3. वर्षा होने से धरती पर कीचड़ हो गया पर यह कीचड़ त्याज्य नहीं बल्कि ग्राह्य है। इसमें जीवन की आशा छिपी है। यह माथे पर लगाने योग्य होने के कारण हरिचंदन के लेप-सा प्रतीत हो रहा है।
4. पहली पंक्ति में पुनरुक्ति प्रकाश और अनुप्रास अलंकार है।
5. 'मेघ आए' में दृश्य बिंब होने से आँख नामक इंद्रिय बोध की ओर तथा 'मेघ बजे' में 'श्रव्य बिंब' होने के कारण 'कान' नामक इंद्रिय बोध की ओर संकेत है।

प्रश्न 19.

अपने शिक्षक और पुस्तकालय की सहायता से केदारनाथ सिंह की 'बादल ओ', सुमित्रानंदन पंत की 'बादल' और निराला की 'बादल-राग' कविताओं को खोजकर पढ़िए।

उत्तर-

छात्र 'बादल ओ', 'बादल' और बादल राग कविताओं को स्वयं पढ़ें।

### अन्य पाठेतर हल प्रश्न

#### लघु उत्तरीय प्रश्न

“निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए”

प्रश्न 1.

'मेघ आए' कविता में बादलों को किसके समान बताया गया है?

उत्तर-

'मेघ आए' कविता में बादलों को शहर से आने वाले दामाद के समान बताया गया है क्योंकि बादल गाँव में

उसी तरह सज-धजकर आ रहे हैं जैसे शहरी दामाद सज-धजकर आता है या इन बादलों का इंतज़ार भी दामाद की ही तरह किया जाता है।

प्रश्न 2.

लता रूपी नायिका ने मेहमान से अपना रोष किस प्रकार प्रकट किया?

उत्तर-

नवविवाहिता लता रूपी नायिका अपने पति का इंतज़ार कर रही थी पर उसका पति एक साल बाद लौटा तो लता ने उससे रोष प्रकट करते हुए कहा, “तुमने तो पूरे साल भर बाद सुधि लिया है।” अर्थात् वह पहले क्यों नहीं आ गया।

प्रश्न 3.

बूढ़ा पीपल किसको प्रतीक है? उसने मेहमान का स्वागत किस तरह किया?

उत्तर-

बूढ़ा पीपल घर के सबसे बुजुर्ग व्यक्ति का प्रतीक है। उसने मेहमान को आया देखकर आगे बढ़कर राम-जुहार की और उससे कुशल क्षेम पूछते हुए यथोचित स्थान पर बिठाया।

प्रश्न 4.

‘बाँध टूटा झर-झर मिलन के अश्रु ढरके’ के आधार पर बताइए कि ऐसा कब हुआ और क्यों?

उत्तर-

‘बाँध टूटा आया मेघ रूपी मेहमान अपनी लता रूपी नवविवाहिता पत्नी से मिला। पहले तो लता ने अपना रोष प्रकट किया और फिर उसका धैर्य टूटा। इससे उनकी आँखों से आँसू बहने लगे।

प्रश्न 5.

प्राकृतिक रूप से किस श्रम की गाँठ खुलने की बात कही गई है? ‘मेघ आए’ कविता के आधार पर लिखिए।

उत्तर-

ग्रामीण संस्कृति में बादलों का बहुत महत्व है। वहाँ कृषि-कार्य बादलों पर निर्भर करता है, इसलिए बादलों की प्रतीक्षा की जाती है। इस बार जब साल बीत जाने पर भी बादल नहीं आए तो लोगों के मन में यह भ्रम हो गया था कि इस साल अब बादल नहीं आएँगे पर बादलों के आ जाने से उनके इस भ्रम की गाँठ खुल गई।

प्रश्न 6.

‘मेघ आए’ कविता में किस संस्कृति का वर्णन किया गया है? सोदाहरण लिखिए।

उत्तर-

‘मेघ आए’ कविता में ग्रामीण संस्कृति का वर्णन है। बादलों के आगमन पर उल्लास का वातावरण बनना, हवा चलना, पेड़ पौधों का झूमना, आँधी चलना, धूल उड़ना, लता का पेड़ की ओट में छिपना बादलों का गहराना, बिजली का चमकना, बरसात होना आदि सभी ग्रामीण संस्कृति से ही संबंधित हैं।

प्रश्न 7.

कविता में मेघ रूपी मेहमान के आने पर कौन क्या कर रहे हैं?

उत्तर-

‘मेघ आए’ कविता में हवा मेघ आने की सूचना देने का काम, पेड़ों द्वारा मेघ को देखने का कार्य, बूढ़ा पीपल, मेघ का स्वागत एवं अभिवादन करने, ताल द्वारा परात में पानी भरकर लाने का काम, लता द्वारा उलाहना देने एवं उससे मिलने का काम किया जा रहा है।

प्रश्न 8.

‘मेघ आए’ कविता में नदी किसका प्रतीक है? वह पूँछट सरकाकर किसे देख रही है?

उत्तर-

‘मेघ आए’ कविता में नदी गाँव की उस विवाहिता स्त्री का प्रतीक है जो अभी भी परदा करती है। वह किसी अजनबी या रिश्तेदार के सामने घूँघट करती है। वह गाँव आ रहे बादल रूपी मेहमान को पूँछट सरकाकर देख रही है।

प्रश्न 9.

ताल किसका प्रतीक है? वह परात में पानी भरकर लाते हुए किस भारतीय परंपरा का निर्वाह कर रहा है?

उत्तर-

ताल घर के किसी उत्साही नवयुवक का प्रतीक है। मेघ रूपी मेहमान के आने पर वह परात में पानी भर लाता है। ऐसा करके वह घर आए मेहमान के पाँव धोने की भारतीय संस्कृति की परंपरा का निर्वाह कर रहा है।

प्रश्न 10.

‘मेघ आए’ कविता में एक साल बाद अपने पति मेघ को देखकर नवविवाहिता नायिका की क्या दशा हुई?

उत्तर-

‘मेघ आए’ कविता में एक साल बाद अपने पति मेघ को देखकर नवविवाहिता नायिका का मान जाग उठा। उसने एक साल बाद सुधि लेने के लिए मेघ से शिकायत की पर मेघ के आने से उसके मन का भ्रम शूट गया और उसकी आँखों से आँसू बहने लगे।

## दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1.

शहरी मेहमान के आने से गाँव में जो उत्साह दृष्टिगोचर होता है, उसे मेघ आए कविता के आलोक में लिखिए।

उत्तर-

शहरी मेहमान के आने से गाँव में हर्ष उल्लास का वातावरण बन जाता है। गाँव में बादलों के आगमन का इंतज़ार किया जाता है। बादल के आते ही बच्चे, युवा, स्त्री, पुरुष सभी प्रसन्न हो जाते हैं। पेड़-पौधे झूम-झूमकर अपनी खुशी प्रकट करते हैं। बच्चे भाग-भाग बादलों के आने की सूचना देते फिरते हैं। युवा उत्साहित होकर बादलों को देखते हैं तो स्त्रियाँ दरवाजे खिड़कियाँ खोलकर बादलों को देखने लगती हैं। बादलों के बरसने पर सर्वत्र उत्साह का वातावरण छा जाता है।

प्रश्न 2.

‘मेघ आए’ कविता में अतिथि का जो स्वागत-सत्कार हुआ है, उसमें भारतीय संस्कृति की कितनी झलक मिली है, अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर-

‘मेघ आए’ कविता में मेघ रूपी मेहमान के आने पर उसका भरपूर स्वागत होता है। वह साल बाद अपनी ससुराल आ रहा है। यहाँ लोग उत्सुकता से प्रतीक्षारत हैं। मेहमान के आते ही घर का सबसे बुजुर्ग और सम्मानित सदस्य उसकी अगवानी करता है, उसको सम्मान देते हुए राम-जुहार करता है और कुशलक्षेम पूछता है। मेहमान को यथोचित स्थान पर बैठा देखकर घर का सदस्य उत्साहपूर्वक परात में पानी भर लाता है ताकि मेहमान के पैर धो सके। इस तरह हम देखते हैं कि मेहमान का जिस तरह स्वागत किया गया है उसमें भारतीय संस्कृति की पर्याप्त झलक मिलती है।

# यमराज की दिशा

काव्यांश 1.

माँ की ईश्वर से मुलाकात हुई या नहीं  
कहना मुश्किल है  
पर वह जताती थी जैसे  
ईश्वर से उसकी बातचीत होती रहती है  
और उससे प्राप्त सलाहों के अनुसार  
जिंदगी जीने और दुख बर्दाश्त करने  
के रास्ते खोज लेती है।

**भावार्थ –**

उपरोक्त पंक्तियों में कवि कहते हैं कि वह पूरे विश्वास के साथ यह तो नहीं कह सकते कि उनकी माँ की भगवान से मुलाकात हुई थी। लेकिन वो अक्सर हमें अपने व्यवहार से ऐसा जताती थी जैसे कि उनकी ईश्वर से बातचीत होती रहती है। यानि अपनी माँ के व्यवहार को देखकर कवि को ऐसा लगता था जैसे कि उनकी माँ की , ईश्वर से बातचीत चलती रहती है और वो अपने सारे काम ईश्वर से सलाह मशवरा करके ही करती है।

अर्थात् वो एक धार्मिक महिला थी और उनकी ईश्वर के प्रति गहरी आस्था थी। वो सभी रीति – रिवाजों व धार्मिक मान्यताओं का पालन करती थी।

कवि आगे कहते हैं कि वो अपने जीवन में आने वाली हर मुश्किल का कोई न कोई हल बड़ी आसानी से निकाल लेती थी। शायद उन्हें ईश्वर से ही दुखों को सहन करने और जीवन को सुखपूर्वक जीने की असीम शक्ति मिली हुई थी।

**काव्यांश 2.**

माँ ने एक बार मुझसे कहा था-  
दक्षिण की तरफ पैर करके मत सोना  
वह मृत्यु की दिशा है  
और यमराज को क्रुद्ध करना  
बुद्धिमानी की बात नहीं

तब मैं छोटा था  
और मैंने यमराज के घर का पता पूछा था  
उसने बताया था  
तुम जहाँ भी हो वहाँ से हमेशा दक्षिण में

**भावार्थ –**

उपरोक्त पंक्तियों में कवि कहते हैं कि जब वो छोटे थे। तब उनकी माँ ने उनको एक सीख दी थी कि दक्षिण दिशा की तरफ पैर करके कभी मत सोना क्योंकि दक्षिण दिशा मृत्यु के देवता की दिशा हैं। यानि दक्षिण दिशा में यमराज का घर है और यमराज को कभी भी गुस्सा मत दिलाना क्योंकि यमराज को गुस्सा दिलाने का मतलब है सीधे-सीधे मृत्यु को दावत देना। इसीलिए यमराज को नाराज करना बिल्कुल भी बुद्धिमानी की काम नहीं है।

चूँकि कवि उस समय बहुत छोटे थे। इसलिए उन्होंने अपनी माँ से पूछा लिया था कि यमराज कहां रहते हैं या उनके घर का क्या पता है। तब उनकी माँ ने उन्हें बताया था कि तुम जहां भी रहते हो वहां से दक्षिण दिशा में यमराज रहते हैं।

**काव्यांश 3.**

माँ की समझाइश के बाद  
दक्षिण दिशा में पैर करके मैं कभी नहीं सोया  
और इससे इतना फायदा जरूर हुआ  
दक्षिण दिशा पहचानने में  
मुझे कभी मुश्किल का सामना नहीं करना पड़ा

**भावार्थ –**

उपरोक्त पंक्तियों में कवि कहते हैं कि माँ के समझाने के बाद वो फिर कभी भी दक्षिण दिशा की ओर पैर करके नहीं सोए और उन्हें इससे एक और फायदा भी हुआ। वो बचपन से ही दक्षिण दिशा को अच्छी तरह से पहचानने लगे थे। यानि अब उन्हें दक्षिण दिशा को पहचानने में कोई मुश्किल नहीं होती थी। उन्हें चारों दिशाओं का अच्छा ज्ञान हो गया।

**काव्यांश 4.**

मैं दक्षिण में दूर-दूर तक गया  
और मुझे हमेशा माँ याद आई

दक्षिण को लाँघ लेना संभव नहीं था  
होता छोर तक पहुँच पाना  
तो यमराज का घर देख लेता

**भावार्थ –**

उपरोक्त पंक्तियों में कवि कहते हैं कि उन्होंने दक्षिण दिशा में दूर-दूर तक यात्राएं की। यानि वो इस दिशा में काफी धूमे फिरे। यात्राएं के दौरान उन्हें हमेशा अपनी माँ भी खूब याद आती थी क्योंकि माँ ने ही तो बताया था कि यमराज का घर दक्षिण दिशा में होता है।

कवि के मन में हमेशा यमराज का घर देखने की उत्सुकता बनी रही लेकिन कवि के लिए दक्षिण दिशा को पार कर पाना संभव नहीं था क्योंकि किसी भी दिशा का कोई अंत होता ही नहीं है।

इसीलिए कवि आगे कहते हैं कि **यदि** दक्षिण दिशा का कोई अंत होता या वो दक्षिण दिशा के अंत तक पहुंच जाते तो , वो यमराज का घर अवश्य ही देख लेते।

**काव्यांश 5.**

पर आज जिधर भी पैर करके सोओ  
वही दक्षिण दिशा हो जाती है  
सभी दिशाओं में यमराज के आलीशान महल हैं  
और वे सभी में एक साथ  
अपनी दहकती आँखों सहित विराजते हैं।  
माँ अब नहीं हैं  
और यमराज की दिशा भी अब वह नहीं रही  
जो माँ जानती थी।

**भावार्थ –**

उपरोक्त पंक्तियों में कवि ने वर्तमान समाज में फैली बुराइयों जैसे भ्रष्टाचार , अन्याय , शोषण पर कड़ा प्रहार किया है। आज हमने भले ही बहुत तरक्की कर ली हो और आधुनिकता का लबादा ओढ़ लिया हो लेकिन मौजूदा दौर में मानवीय मूल्यों व जीवन जीने के आदर्श मूल्यों का हास हुआ है।

आज चारों दिशाओं में ऐसे लोग बैठे हैं जो लोगों पर अन्याय , अत्याचार करते हैं। उनका शोषण करते हैं और भ्रष्टाचार की जड़ों ने समाज के हर वर्ग में अपनी गहरी पैठ बना ली है।

इसीलिए उपरोक्त पंक्तियों में कवि कहते हैं कि आज जिधर भी पैर करके सो जाओ , वही दक्षिण दिशा यानि यमराज की दिशा बन जाती है अर्थात आज चारों दिशाओं में ऐसे लोग बैठे हैं जो भ्रष्टाचार , अन्याय , शोषण , हिंसा करने में विश्वास रखते हैं। वो समाज में अशांति फैलाना चाहते हैं। इन लोगों की नजर में सिर्फ पैसा ही महत्वपूर्ण है। इंसानी रिश्ते नाते , भाईचारे की कोई अहमियत नहीं है।

कवि आगे कहते हैं कि आज हर दिशा में जीवन विरोधी ताकतें अपना साम्राज्य फैला रही हैं और हर दिशा में उनके आलीशान महल हैं अर्थात उनका साम्राज्य चारों दिशाओं में स्थापित हो चुका है। ऐसे लोग अपनी बुरी नजर सब जगह रखते हैं। यानि उनकी निगाहें हर वक्त उस आम आदमी पर बनी रहती है जिसे वो डरा धमका कर उसका शोषण कर सकते हैं। ऐसे लोग अपने स्वार्थ के लिए किसी इंसान को मार देने में भी तनिक नहीं हिचकते हैं। वो साक्षात मृत्यु के देवता यमराज के समान ही हैं और ऐसे मृत्यु के देवता अपनी गिद्द जैसी पैनी नजर गड़ाये हमारे चारों ओर , हर दिशा में मौजूद हैं। कवि आगे कहते हैं कि उनकी मां अब जिंदा नहीं है। अब परिस्थितियां भी बदल चुकी हैं और आज यमराज की दिशा भी बदल चुकी है। यमराज की जिस दिशा का पता उनकी मां जानती थी। अब वो नहीं रही। बल्कि आज हर दिशा यमराज की दिशा बन गई है।

### पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1.

कवि को दक्षिण दिशा पहचानने में कभी मुश्किल क्यों नहीं हुई?

उत्तर-

माँ के बार-बार समझाने अर्थात् बचपन से मिले गहरे संस्कारों के कारण कवि को दक्षिण दिशा पहचानने में कभी मुश्किल नहीं हुई।

प्रश्न 2.

कवि ने ऐसा क्यों कहा कि दक्षिण को लाँघ लेना संभव नहीं था?

उत्तर-

दक्षिण दिशा का कोई ओर-छोर नहीं है। वह अनंत है। इसलिए उसे लाँघ लेना संभव नहीं था। प्रतीकार्थ



यह है कि शोषण-व्यवस्था का कोई निश्चित स्वरूप नहीं होता। यह मनोभावना नए-नए रूप धारण करती रहती है और अमर रहती है। इसलिए कोई हमेशा-हमेशा के लिए इससे मुक्त नहीं हो सकता।

प्रश्न 3.

कवि के अनुसार आज हर दिशा दक्षिण दिशा क्यों हो गई है?

उत्तर-

कवि के अनुसार, दक्षिण दिशा दक्षिणपंथी विचारधारा या पूँजीवादी विचारधारा की प्रतीक है। यह विचारधारा पूँजीवादियों और शोषकों को बढ़ावा देती है। कवि को आज की स्थितियाँ देखकर लगता है कि आज सब ओर पूँजीवादी शोषकों का बोलबाला हो गया है। जहाँ भी देखें, वहीं आम मनुष्य का शोषण हो रहा है।

प्रश्न 4.

भाव स्पष्ट कीजिए-

सभी दिशाओं में यमराज के आलीशान महल हैं।

और वे सभी में एक साथ

अपनी दहकती आँखों सहित विराजते हैं।

उत्तर-

कवि कहता है कि शोषण करने वाले लोग यमराज की भाँति क्रूर हैं। वे सर्वत्र ठाठ-बाट से निवास करते हैं। सब जगह उनका एक-सा हाल है। वे क्रोध, घृणा और क्रूरता से भरे हुए हैं। वे सबके साथ कठोरता से पेश आते हैं।

## रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 5.

कवि की माँ ईश्वर से प्रेरणा पाकर उसे कुछ मार्ग-निर्देश देती है। आपकी माँ भी समय-समय पर आपको सीख देती होंगी-

(क) वह आपको क्या सीख देती हैं?

(ख) क्या उसकी हर सीख आपको उचित जान पड़ती है? यदि हाँ तो क्यों और नहीं तो क्यों नहीं?

उत्तर-

(क) मेरी माँ मुझे समय-समय पर गरीबों पर दया करने, बड़ों का आदर करने, गुरुओं का सम्मान करने और ईमानदार रहने की सीख देती रहती हैं।

(ख) मुझे अपनी माँ की सीख उचित जान पड़ती है।

क्यों-यदि माँ की जगह में होता और किसी को उपदेश देता तो इसी तरह देता। मैं अपने से छोटों या आश्रितों को भला बनने की ही सलाह देता। निस्वार्थ भाव से किसी का भला करने का यही सर्वोत्तम उपाय है।

प्रश्न 6.

कभी-कभी उचित-अनुचित निर्णय के पीछे ईश्वर का भय दिखाना आवश्यक हो जाता है, इसके क्या कारण हो सकते हैं?

उत्तर-

मानव-मन में शुभ-अशुभ दोनों भाव हैं। कभी-कभी उसका अशुभ मनोभाव बहुत अधिक जाग्रत हो उठता है। तब वह खून, हत्या जैसे घिनौने कार्य भी कर बैठता है। इस स्थिति से बचाने के लिए ईश्वर का भय दिखाना बहुत आवश्यक होता है। ईश्वर से भयभीत व्यक्ति मन से ही मर्यादित हो जाता है। वह अहिंसक, निष्पाप और भला इंसान बन जाता है।

### पाठेतर सक्रियता

प्रश्न 7.

कवि का मानना है कि आज शोषणकारी ताकतें अधिक हावी हो रही हैं। 'आज की शोषणकारी शक्तियाँ' विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

(आप शिक्षकों, सहपाठियों, पड़ोसियों, पुस्तकालय आदि से मदद ले सकते हैं।)

उत्तर-

'आज की शोषणकारी शक्तियाँ' विषय पर छात्र स्वयं अनुच्छेद लिखें।

## अन्य पाठेतर हल प्रश्न

### लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1.

कवि को ऐसा अनुभव क्यों हुआ कि उसकी माँ की ईश्वर से बातचीत होती रहती है? 'यमराज की दिशा' कविता के आधार पर लिखिए।

उत्तर-

कवि की माँ अपने कार्य व्यवहार से यह जताती रहती थी कि ईश्वर से वह बातचीत करती है और उसी की सलाह से जीवन की कठिनाइयों को सरलता से पारकर जाती है इसलिए कवि को ऐसा अनुभव हुआ कि उसकी माँ की ईश्वर से बातचीत होती रहती है।

प्रश्न 2.

‘यमराज की दिशा’ कविता में माँ ने कवि को जो भय दिखाया है। वह कितना सार्थक था?

उत्तर-

‘यमराज की दिशा’ कविता में माँ ने कवि को जो भय दिखाया था, वह पूरी तरह सार्थक था। इसी भय के कारण कवि को दक्षिण दिशा का ज्ञान हो गया और वह दक्षिण दिशा में कभी भी पैर करके नहीं सोया।

प्रश्न 3.

कवि की माँ को जीवन जीने के रास्ते कहाँ से प्राप्त होते थे? ‘यमराज की दिशा’ कविता के आधार पर लिखिए।

उत्तर-

कवि की माँ को जीवन जीने के रास्ते ईश्वर से हुई बातचीत और उससे प्राप्त सलाहों से प्राप्त होते थे। इन्हीं सलाहों के सहारे वह जीवन के रास्ते में आने वाली कठिनाइयों को आसानी से पार करती जा रही थी।

प्रश्न 4.

कवि ने बचपन में माँ से किसका पता पूछा था और क्यों? ‘यमराज की दिशा’ पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर-

कवि ने बचपन में माँ से यमराज के घर का पता पूछा था क्योंकि कवि को माँ ने बता दिया था कि दक्षिण की ओर पैर करके मत सोना। इसी दिशा में मृत्यु के देवता यमराज का घर है।

प्रश्न 5.

‘यमराज की दिशा’ कविता में कवि दक्षिण दिशा में दूर तक गया फिर भी वह यमराज का घर क्यों नहीं देख पाया?

उत्तर-

कवि दक्षिण दिशा में दूर-दूर तक गया फिर भी वह यमराज को घर नहीं देख पाया क्योंकि माँ की सीख के अनुसार, यमराज दक्षिण दिशा में रहता है परंतु दक्षिण दिशा का कोई अंत नहीं है। दूर-दूर तक जाने पर भी न दक्षिण दिशा का अंत हुआ और न कवि यमराज का घर देख पाया।

प्रश्न 6.

दक्षिण दिशा का प्रतीकार्थ क्या है? यह दिशा जनसाधारण के लिए शुभ क्यों नहीं होती है?

उत्तर-

दक्षिण दिशा का प्रतीकार्थ है दक्षिणपंथी विचारधारा, जिसमें आम इंसान के हित के लिए कोई स्थान नहीं है। इस विचारधारा के लोग जन साधारण का शोषण करते हैं तथा उनके जीवन के लिए खतरा उत्पन्न करते हैं, इसलिए जन साधारण के लिए यह दिशा शुभ नहीं है।

प्रश्न 7.

‘सभी दिशाओं में यमराज के आलीशान महल हैं’ ऐसा कहकर कवि ने किस ओर संकेत किया है?

उत्तर-

‘सभी दिशाओं में यमराज के आलीशान महल हैं’ के माध्यम से कवि ने समाज में फैली शोषण व्यवस्था और शोषणकर्ताओं के कुकृत्यों की ओर संकेत करना चाहा है। आज जीवन के सभी क्षेत्रों में शोषणकर्ताओं का बोलबाला है जिनके चंगुल से आम आदमी का बच पाना कठिन है।

प्रश्न 8.

कवि को माँ की याद कब आई और क्यों?

उत्तर-

यमराज को घर का पता जानने के लिए जब कवि दूर-दूर तक गया तब उसे दक्षिण के वास्तविक खतरों का अनुभव हुआ तब उसे माँ की सीख की याद आई। यह याद उसे इसलिए आई क्योंकि माँ ने इन खतरों के प्रति उसे बचपन में ही आगाह करा दिया था।

प्रश्न 9.

आज यमराज का वास कहाँ-कहाँ दिखाई पड़ता है? वे वहाँ किस रूप में दिखाई देते हैं?

उत्तर-

आज यमराज का वास केवल दक्षिण दिशा में ही न होकर हर दिशा में दिखाई पड़ता है। यमराज शोषणकारी शक्तियों और शोषणकर्ताओं को कहा गया है। ये दूसरों का शोषण करके, उनके हक छीनकर शक्तिशाली हो गए हैं। वे आलीशान महलों में रहते हैं। वे क्रोध, घृणा, आक्रोश, हिंसा, क्रूरता भरी लाल आँखों से भयानक रूप में दिखाई देते हैं।

प्रश्न 10.

माँ द्वारा कवि को जो सीख दी गई, उसे उसने अक्षरशः क्यों मान लिया होगा? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर-

माँ द्वारा कवि को जो सीख दी गई उसे उसने अक्षरशः इसलिए मान लिया होगा क्योंकि कवि उस समय बच्चा था। कवि को माँ की सीख में अपनी भलाई नज़र आई होगी। इसके अलावा माँ ने यमराज को क्रोधित करने का संभावित परिणाम भी कवि को समझा दिया था।

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1.

कवि की माँ ने उसे जो सीख दी थी उसकी परिधि आज किस तरह विस्तृत हो गई है? 'यमराज की दिशा' कविता के आधार पर लिखिए।

उत्तर-

कवि की माँ ने कवि को सीख दी थी कि दक्षिण की ओर पैर करके मत सोना। दक्षिण दिशा में यमराज रहता है। वह मृत्यु का देवता है। उसे क्रुद्ध करना बुद्धिमानी की बात नहीं क्योंकि इससे जान का खतरा हो सकता है। तब कवि बच्चा था। उसने माँ की सीख मानकर दक्षिण दिशा में पैर करके नहीं सोया।

माँ ने कवि को बताया था कि यमराज रूपी शोषणकारी शक्तियाँ दक्षिण में रहती हैं परंतु कवि ने बाद में देखा कि अब तो यमराज का घर केवल दक्षिण में ही नहीं, बल्कि हर दिशा में है। उनके आलीशान महल कहीं भी देखे जा सकते हैं। वे क्रूरता से लोगों का शोषण करने को तैयार हैं। इस प्रकार माँ द्वारा दी गई सीख की परिधि विस्तृत हो गई।

# बच्चे काम पर जा रहे हैं

कोहरे से ढकी सड़क पर बच्चे काम पर जा रहे हैं

सुबह सुबह

बच्चे काम पर जा रहे हैं

हमारे समय की सबसे भयानक पंक्ति है यह

भयानक है इसे विवरण की तरह लिखा जाना

लिखा जाना चाहिए इसे सवाल की तरह

काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे ?

भावार्थ

अत्यधिक सर्दों में कोहरे से ढकी सड़क पर बच्चे काम पर जा रहे हैं। वे मजदूरी करने को विवश हैं। यह कैसी विसंगति है कि जिस उम्र में बच्चों को खेलना चाहिए, स्कूल जाना चाहिए, वे काम करने को विवश हैं। बच्चों का काम पर जाना कवि को अंदर तक झकझोर देता है। यह सबसे भयानक पंक्ति है और इससे भी ज्यादा भयानक है इसे विवरण की तरह लिखा जाना। इसे सरकार, शासन, समाज आदि से पूछा जाना चाहिए कि बच्चे काम पर क्यों जा रहे हैं ?

क्या अंतरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदे

क्या दीमकों ने खा लिया है

सारे रंग बिरंगी किताबों को

क्या काले पहाड़ के नीचे दब गये हैं सारे खिलौने

क्या किसी भूकंप में ढह गई हैं

सारे मदरसों की इमारतें

क्या मैदान , सारे बगीचे और घरों के आंगन

खत्म हो गये हैं एकाएक

भावार्थ

बच्चों को काम पर जाता देखकर कवि पूछता है, आखिर बच्चे काम पर क्यों जा रहे हैं ? क्या उनकी सारी गेंदे अंतरिक्ष में कहीं गिर गई हैं, जो मिल नहीं रही हैं। क्या उनकी रंग बिरंगी किताबों को दीमकों ने खा लिया है। क्या उनके सारे खिलौने पहाड़ के नीचे दब गए हैं। या स्कूल के सारे भवन किसी भूकंप से दब गये हैं। कवि

पुनः पूछता है कि क्या सारे मैदान , बगीचे और घरों के आंगन समाप्त हो गये। ऐसा क्या हो गया कि बच्चे काम पर जा रहे हैं।

तो बचा ही क्या है इस दुनिया में ?

कितना भयानक होता अगर ऐसा होता

भयानक है लेकिन इससे भी ज्यादा यह

कि हैं सारी चीजें हस्बमामूल

पर दुनिया की हजारों सड़कों से गुजरते हुए

बच्चे, बहुत छोटे-छोटे बच्चे

काम पर जा रहे हैं।

कवि कहते हैं कि यदि बच्चों की किताबें , खेल के मैदान , पाठशाला आदि सब कुछ नष्ट हो गये हैं तो फिर बचा ही क्या है ? कुछ भी नहीं बचा है। यदि कुछ भी नहीं बचता तो यह बात भयानक होती लेकिन उससे भी अधिक भयानक बात यह है कि सब कुछ पहले जैसा ही है । कुछ भी नष्ट नहीं हुआ है। सब कुछ होने के बाद भी दुनिया की सड़कों पर हजारों बच्चे काम पर जा रहे हैं। यह सबसे भयानक स्थिति है।

### पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1.

कविता की पहली दो पंक्तियों को पढ़ने तथा विचार करने से आपके मन-मस्तिष्क में जो चित्र उभारता है उसे लिखकर व्यक्त कीजिए।

उत्तर-

कविता की पहली दो पंक्तियाँ इस प्रकार हैं-

कोहरे से ढंकी सड़क पर बच्चे काम पर जा रहे हैं।

सुबह सुबह

इन्हें पढ़कर मेरे मन-मस्तिष्क में चिंता और करुणा का भाव उमड़ता है। करुणा का भाव इस कारण उमड़ता है कि इन बच्चों की खेलने-कूदने की आयु है किंतु इन्हें भयंकर कोहरे में भी आराम नहीं है। पेट भरने की मजबूरी के कारण ही ये। ठंड में सुबह उठे होंगे और न चाहते हुए भी काम पर चल दिए होंगे। चिंता इसलिए उभरी कि इन बच्चों की यह दुर्दशा कब समाप्त होगी? कब समाज बाल-मजदूरी से मुक्ति पाएगा? परंतु कोई समाधान न होने के कारण चिंता की रेखा गहरी हो गई।

प्रश्न 2.

कवि का मानना है कि बच्चों के काम पर जाने की भयानक बात को विवरण की तरह न लिखकर सवाल के रूप में पूछा जाना चाहिए कि 'काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे?' कवि की दृष्टि में उसे प्रश्न के रूप में क्यों पूछा जाना चाहिए?

उत्तर-

कवि की दृष्टि में बच्चों के काम पर जाने की स्थिति को विवरण या वर्णन की तरह नहीं लिखा जाना चाहिए क्योंकि ऐसा वर्णन किसी के मन में भावनात्मक लगाव और संवेदनशीलता नहीं पैदा कर सकता है, कुछ सोचने के लिए विवश नहीं कर सकता है। इसे प्रश्न के रूप में पूछे जाने पर एक जवाब मिलने की आशा उत्पन्न होती है। इसके लिए समस्या से जुड़ाव, जिज्ञासा एवं व्यथा उत्पन्न होती है जिसे अनदेखा नहीं किया जा सकता है।

प्रश्न 3.

सुविधा और मनोरंजन के उपकरणों से बच्चे वंचित क्यों हैं?

उत्तर-

समाज की व्यवस्था और गरीबी के कारण बच्चे सुविधा और मनोरंजन के उपकरणों से वंचित हैं। भारत में करोड़ों लोग पेट भर रोटी नहीं जुटा पाते। इसलिए उनके बच्चों को भी बचपन से कामकाज करना पड़ता है। यह उनकी जन्मजात विवशता होती है। एक भिखारी, मजदूर या गरीब व्यक्ति का बच्चा गेंद, खिलौने, रंगीन किताबें कहाँ से लाए?

समाज की व्यवस्था भी बाल-श्रमिकों को रोकने में सक्षम नहीं है। यद्यपि सरकार ने इस विषय में कानून बना दिए हैं। किंतु वह बच्चों को निश्चित रूप से ये सुविधाएँ दिला पाने में समर्थ नहीं है। न ही सरकार या समाज के पास इतने साधन हैं, न गरीबी मिटाने के उपाय हैं और न इच्छा-शक्ति। इसलिए बच्चे वंचित हैं।

प्रश्न 4.

दिन-प्रतिदिन के जीवन में हर कोई बच्चों को काम पर जाते देख रहा/रही है, फिर भी किसी को कुछ



अटपटा नहीं लगता। इस उदासीनता के क्या कारण हो सकते हैं?

उत्तर-

जीवन में बच्चों को काम पर जाते हुए देखकर भी लोग उदासीन बने रहते हैं। इस उदासीनता के अनेक कारण हैं; जैसे-

- लोग इतने संवेदनहीन हो गए हैं कि वे सोचते हैं कि छोड़ो, यह कौन-सा हमारा बच्चा है।
- लोगों की स्वार्थ भावना इस उदासीनता को बढ़ाती है। वे अधिक लाभ कमाने और कम मजदूरी देने के लालच में बच्चों से काम करवाते हैं।
- बाल श्रम कानून का पालन कराने वाले अधिकारियों द्वारा अपने कर्तव्य का उचित निर्वाह न करना समाज की उदासीनता बढ़ाता है।

प्रश्न 5.

आपने अपने शहर में बच्चों को कब-कब और कहाँ-कहाँ काम करते हुए देखा है?

उत्तर-

मैंने अपने शहर में बच्चों को अनेक स्थलों पर काम करते देखा है। चाय की दुकान पर, होटलों पर, विभिन्न दुकानों पर, घरों में, निजी कार्यालयों में। मैंने उन्हें सुबह से देर रात तक, हर मौसम में काम करते देखा है।

प्रश्न 6.

बच्चों को काम पर जाना धरती के एक बड़े हादसे के समान क्यों है?

उत्तर-

बच्चों का काम पर जाना एक बड़े हादसे के समान इसलिए है क्योंकि खेलने-कूदने और पढ़ने-लिखने की उम्र में काम करने से बालश्रमिकों का भविष्य नष्ट हो जाता है। इससे एक ओर जहाँ शारीरिक विकास अवरुद्ध होता है, वहीं उनका मानसिक विकास भी यथोचित ढंग से नहीं हो पाता है। ऐसे बच्चे जीवनभर के लिए अकुशल श्रमिक बनकर रह जाते हैं। इससे उनके द्वारा समाज और देश के विकास में उनके द्वारा जो योगदान दिया जाना था वह नहीं मिलता है जिससे प्रगति की दर मंद पड़ती जाती है।

## **रचना और अभिव्यक्ति**

प्रश्न 7.

काम पर जाते किसी बच्चे के स्थान पर अपने-आप को रखकर देखिए। आपको जो महसूस होता है उसे लिखिए।

उत्तर-

आज मुझे स्कूल जाना था। मैंने होम वर्क भी पूरा कर लिया था। परंतु क्या करूं? पिताजी बीमार हैं। माँ उनकी देखभाल में व्यस्त हैं। न पिता काम पर जा पा रहे हैं और न माँ। माँ ने मुझे अपनी जगह बर्तन-सफाई के काम पर भेज दिया। मैं यह काम नहीं करना चाहती और उस मोटी आंटी के घर में तो बिल्कुल नहीं करना चाहती जिसने दरवाजे पर कुत्ता बाँध रखा है। मेरे घुसते ही कुत्ता भौंकने लगता है। डरते-डरते अंदर जाती हूँ तो मालकिन ऐसे पेश आती है जैसे मैं लड़की ने हूँ, बल्कि उसकी खरीदी हुई गुलाम हूँ। सच कहूँ, मुझे ग्लानि होती है। अगर मजबूरी न होती, तो मैं काम-धंधे की ओर मुड़कर भी न देखती।

प्रश्न 8.

आपके विचार से बच्चों को काम पर क्यों नहीं भेजा जाना चाहिए? उन्हें क्या करने के मौके मिलने चाहिए?

उत्तर-

मेरे विचार से बच्चों को काम पर इसलिए नहीं भेजा जाना चाहिए क्योंकि इससे बच्चों का बचपन नष्ट होता है। वे जीवन भर के लिए मजदूर बनकर रह जाते हैं। बच्चों का काम पर जाना समाज के माथे पर कलंक है। इस कलंक से बचने के लिए बच्चों से बाल मजदूरी नहीं करवानी चाहिए।

### पाठेतर सक्रियता

प्रश्न 9.

किसी कामकाजी बच्चे से संवाद कीजिए और पता लगाइए कि-

(क) वह अपने काम करने की बात को किस भाव से लेता/लेती है?

(ख) जब वह अपनी उम्र के बच्चों को खेलने/पढ़ने जाते देखता/देखती है तो कैसा महसूस करता/करती है?

उत्तर-

छात्र किसी कामकाजी बच्चे से स्वयं संवाद करें और उसके मनोभावों का पता लगाएँ।

प्रश्न 10.

‘वर्तमान युग में सभी बच्चों के लिए खेलकूद और शिक्षा के समान अवसर प्राप्त हैं’-इस विषय पर वाद-विवाद आयोजित कीजिए।

उत्तर-

छात्र उक्त विषय पर वाद-विवाद का आयोजन स्वयं करें।

प्रश्न 11.

‘बाल श्रम की रोकथाम’ पर नाटक तैयार कर उसकी प्रस्तुति कीजिए।

उत्तर-

छात्र ‘बालश्रम की रोकथाम’ पर नाटक तैयार करें और उसकी प्रस्तुति दें।

प्रश्न 12.

चंद्रकांत देवताले की कविता ‘थोड़े से बच्चे और बाकी बच्चे’ (लकड़बग्घा हँस रहा है) पढ़िए। उस कविता के भाव तथा प्रस्तुत कविता के भावों में क्या साम्य है?

उत्तर-

छात्र कविता को पढ़कर भावों की साम्यता का पता स्वयं करें।

### अन्य पाठेतर हल प्रश्न

#### लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.

बच्चों को किस समय और कहाँ जाते हुए देखकर कवि को पीड़ा हुई है? बच्चे काम पर जा रहे हैं’ कविता के आलोक में लिखिए।

उत्तर-

बच्चों को कड़ी सरदी में सवेरे-सवेरे कोहरे से ढंकी सड़क पर जाते हुए देखकर हुआ। ये बच्चे कारखानों और अन्य स्थानों पर बाल मजदूरी करने जा रहे थे। खेलने-कूदने की उम्र में बच्चों को काम पर जाते देख कवि को पीड़ा हुई।

प्रश्न 2.

कवि के लिए बच्चों का काम पर जाना चिंता का विषय क्यों बन गया है? ‘बच्चे काम पर जा रहे हैं’ कविता के आधार पर लिखिए।

उत्तर-

कवि के लिए बच्चों का काम पर जाना चिंता का विषय इसलिए बन गया है क्योंकि आज के बच्चे कल का भविष्य हैं। जिस उम्र में बच्चों को खेल-कूदकर बचपन का आनंद लेना चाहिए, स्वस्थ और सबल बनना चाहिए तथा पढ़-लिखकर योग्य नागरिक बनना चाहिए, उस उम्र में काम करके अपना भविष्य अंधकारमय कर रहे हैं।

प्रश्न 3.

बालश्रम अपराध है फिर भी बच्चों को काम करते हुए देखा जा सकता है। इसके क्या कारण हो सकते हैं, लिखिए।

उत्तर

बालश्रम अपराध है फिर भी हम बच्चों को काम करते हुए देखते हैं। इसके कई कारण हो सकते हैं। इनमें सबसे पहला कारण गरीबी है। बच्चों की मूलभूत ज़रूरतें पूरी न करने पर माँ-बाप उन्हें काम पर भेजने को विवश हो जाते हैं। इसके अलावा लोगों की स्वार्थी प्रवृत्ति तथा संवेदनहीनता के कारण बच्चे काम करते हुए देखे जा सकते हैं।

प्रश्न 4.

‘बच्चे काम पर जा रहे हैं’-कविता में काले पहाड़ किसके प्रतीक हैं? ये काले पहाड़ किस तरह हानिप्रद हैं?

उत्तर-

‘बच्चे काम पर जा रहे हैं’ कविता में काले पहाड़ समाज में व्याप्त शोषण व्यवस्था के प्रतीक हैं। इसी व्यवस्था के कारण समाज का एक वर्ग बच्चों का शोषण करता है, उनसे काम करवाकर उनका भविष्य खराब करता है और बहुत कम मजदूरी देकर अपनी जेब भरता है।

प्रश्न 5.

बच्चों को काम पर जाता देखकर आपके मन में जो विचार आते हैं उन्हें अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर-

बच्चों को काम पर जाता देखकर हमारे मन में यह विचार आता है कि इस उम्र में बच्चों को काम करने के बजाय पढ़ने लिखने और खेलने-कूदने का अवसर मिलना चाहिए ताकि ये मज़दूर न बनकर योग्य नागरिक बने तथा समाज व देश की प्रगति में अपना योगदान दें।

प्रश्न 6.

बालश्रम की समस्या बढ़ाने में समाज की संवेदनहीनता का भी योगदान है। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

बालश्रम की समस्या पर रोक लगाने पर भी यह समस्या बढ़ती ही जा रही है। इसका कारण है कि समाज के लोग बच्चों को काम पर जाता हुआ देखकर भी अनदेखा करते हैं और बच्चों के भविष्य के प्रति उदासीन दृष्टिकोण बनाए रखते हैं। इस संवेदनहीनता के कारण यह समस्या बढ़ती ही जा रही है।

प्रश्न 7.

‘बच्चे, बहुत छोटे बच्चे’ पंक्ति के आलोक में स्पष्ट कीजिए कि कवि किस बात पर हर देश चाहता है?

उत्तर-

‘बच्चे, बहुत छोटे बच्चे के माध्यम से कवि इस बात पर जोर देना चाहता है कि कामे परे जाने के लिए विवश बच्चों की उम्र ऐसी नहीं है कि वे काम पर जाएँ। इतने छोटे बच्चों को खेलना कूदना और पढ़ना-लिखना चाहिए। इतनी छोटी उम्र में काम करने से इनका बचपन नष्ट हो रहा है।

प्रश्न 8.

काम पर जाने वाले बच्चों के साथ के कार्यस्थलों एवं कारखानों पर कैसा व्यवहार किया है, अपने अनुभव एवं विवेक से लिखिए।

उत्तर-

काम करने वाले बच्चों के साथ कारखानों और कार्यस्थलों पर अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता है। उन्हें बात-बात पर तथा ज़रा सी गलती के लिए डाँटा-फटकारा और मारा-पीटा जाता है। अनजाने में भी हुए नुकसान के दंडस्वरूप उनकी मजदूरी काट ली जाती है। उनसे अधिक समय काम करवाने पर भी कम मजदूरी दी जाती है।

प्रश्न 9.

‘तो फिर बचा ही क्या है इस दुनिया में ऐसा प्रश्न कवि कब और क्यों करता है?’

उत्तर-

‘तो फिर बचा ही क्या है इस दुनिया में?’ कवि ऐसा प्रश्न तब करता है जब वह देखता है कि बहुत छोटे-छोटे बच्चे काम पर जाने को विवश हैं। कवि सोचता है कि यह बच्चों के खेलने और पढ़ने के दिन हैं। क्या किताबें, खिलौने, गेंदें विद्यालय आदि नष्ट हो गए हैं? यदि हाँ तो दुनिया में जीने के लायक कुछ भी नहीं बचा है।

प्रश्न 10.

‘दुनिया की हजारों सड़कों से गुजरते हुए’ कहकर कवि ने किस ओर संकेत किया है? ‘बच्चे काम पर जा रहे हैं। कविता के आलोक में लिखिए।

उत्तर-

‘दुनिया की हजारों सड़कों से गुजरते हुए’ कहकर कवि ने बाल मजदूरी की समस्या की व्यापकता की ओर संकेत किया है। यह समस्या किसी देश विशेष की न होकर पूरे विश्व की समस्या है। गरीबी के कारण दुनिया भर में लाखों-करोड़ों बच्चे बाल श्रमिक बनने को विवश हैं।

**दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर**

प्रश्न 1.

बालश्रम क्या है? 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' इसे रोकने के लिए आप कुछ सुझाव दीजिए।

उत्तर-

छोटे-छोटे बच्चों से काम करवाना बालश्रम कहलाता है। इससे मासूमों का बचपन छिन जाता है। वे पढ़-लिख नहीं पाते हैं, जिससे उनका भविष्य अंधकारमय बन जाता है। सरकार द्वारा इसे अपराध घोषित किया गया है। इसे रोकने के लिए कुछ सुझाव हैं सरकार को अत्यंत गरीबों को मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध करवानी चाहिए ताकि गरीबी के कारण वे अपने बच्चों को काम पर भेजने के लिए विवश न हों।

बच्चों से काम करवाने वालों को कठोर दंड दिया जाना चाहिए। बाल श्रमिकों की पहचान कर उनकी शिक्षा और प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए। इस दिशा में समाज को भी अपनी सोच में बदलाव लाने की आवश्यकता है।